यज्ञसेनी

यज्ञसेनी

उपन्यास

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ISBN: 978-93-341-8017-6

दाम : 350 रूपया

सर्वाधिकार सुरक्षित © : रबीन्द्र नारायण मिश्र

पहिल संस्करण :2024

लेखक एवम् प्रकाशक :रबीन्द्र नारायण मिश्र
House No: C 42, NSG SAS Ltd, Black Cat Enclave
Pocket No: 6 Builders Area Greater Noida
District: Gautam Buddha Nagar
UP: 201315
M-9968502767
भारतमे मुद्रित(Printed in India)

Yagyasenee(यज्ञसेनी); A Maithili Novel by Shri. Rabindra Narayan Mishra.

एहि पोथीक सर्वाधिकार पुस्तकक लेखक श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र लग सुरक्षित अछि । कॉँपीराइट धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छायाप्रति एवम् रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि ।

यज्ञसेनी

उपन्यास

रबीन्द्र नारायण मिश्र

समर्पण

पूज्य पितामह स्वर्गीय श्रीशरण मिश्रक

स्मृतिमे

ई पोथी सादर ससिनेह हुनके समर्पित

लेखक परिचयः

नाम : रबीन्द्र नारायण मिश्र

पिताक नाम : स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र

माताक नाम : स्वर्गीया दयाकाशी देवी

जन्म तिथिः२ जनबरी १९५४(प्रमाण पत्र)

२४ अगस्त १९५२(जन्मपत्र)

पैतृक ग्राम : अड़ेर डीह

मातृक : सिन्धिआ ड्योढ़ी

वृति : भारत सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त)/

स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त)

शिक्षा : चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक

श्री रबीन्द्र नारायण मिश्रक प्रकाशित कृति :मैथिलीमे:-

प्रकाशन वर्ष:2017

१. 'भोरसँ साँझ धरि' (आत्म कथा), २. 'प्रसंगवश' (निवंध), ३. 'स्वर्ग एतहि अछि' (यात्रा प्रसंग),

प्रकाशन वर्ष:2018

४. ‘फसाद’ (कथा संग्रह) ५. `नमस्तस्यै’ (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निवंध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास)

प्रकाशन वर्ष:2019

९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निवंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास)

प्रकाशन वर्ष:2020

१३.शंखनाद(उपन्यास) १४.इएह थिक जीवन(संस्मरण)

१५.ढहैत देबाल(उपन्यास) १६.पाथेय(संस्मरण)

प्रकाशन वर्ष:2021

१७.हम आबि रहल छी(उपन्यास) १८.प्रलयक परात(उपन्यास)

प्रकाशन वर्ष:2022

१९.बीति गेल समय(उपन्यास) २०.प्रतिबिम्ब(उपन्यास)२१.बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास)22. राष्ट्र मंदिर(उपन्यास) २३. संयोग(कथा संग्रह) २४. नाचि रहल छलि वसुधा (उपन्यास)

प्रकाशन वर्षः2023

२५.दीप जरैत रहए(उपन्यास) २६.ठेहा परक मौलायल गाछ(उपन्यास) २७.पटाक्षेप(उपन्यास)

प्रकाशन वर्षः2024

२८ माटि बजा रहल अछि(यात्रा प्रसंग) २९ जयतु जानकी(उपन्यास) ३० यज्ञसेनी(उपन्यास)

In English: -

Year of publication:2018

1. The Lost House (Collection of short stories)

2. Life is an art

3.The Ganges Whispers (English translation of my Maithili Novel,Ham Aabi Rahal Chhee (हम आबि रहल छी)

हिन्दी में –

प्रकाशन वर्ष:2019

१.न्याय की गुहार

यज्ञसेनी ,उपन्यास साहित्यिक कृति थिक। एहि उपन्यासमे उद्धृत कैकटा प्रसंग,कथानक जनश्रुतिपर आधारित अछि, जकर ऐतिहासिकता प्रमाणित नहि कएल जा सकैत अछि। एहिमे लेल गेल कैकटा नाम,ठाम आ कथानक काल्पनिक थिक। तथापि यदि ककरो नाम मिलि रहल अछि तँ एकरा एकटा मात्र संयोग बूझल जाए ।

यज्ञसेनी

महाभारत कालखण्ड

पाँच हजार वर्षसँ बेसीए समय बीति गेल।केहन दुर्दिन छल ओ एहि भारत भूमिक लेल।लाखों सैनिक भैयारीक आपसी युद्धमे मरि-कटि गेल।चारूकात हाहाकार मचि गेल। विजेता आ पराजित एक्के संगे शोक मना रहल छलाह। भीष्म पितामह सन तपस्वी,निष्ठावान शरशय्यापर पड़ल अपन मृत्युक प्रतीक्षा कए रहल छलाह।कुंती,गांधारी आँखिक नोर सुखेबाक नामे नहि लए रहल छल।दुर्योधन सहित हुनकर भाए लोकनि,द्रोणाचार्य, कर्ण,शकुनी,अभिमन्यु, पाँचो पाण्डवपुत्रसभ मारल जा चुकल छलाह।अश्वत्थामा शापित चारूकात फिफिआ रहल छलाह।आ द्रौपदी? अनवरत दुख आ पाश्चातापक अथाह समुद्रमे मुड़ी गारने छलीह,अशांत,असंतुष्ट।जेना जीबिते लास होथि।कतए गेलनि हुनकर सौंदर्य?जाहि द्रौपदीक लेल एतेकटा महाभारत भेल से आइ विलाप कए रहल छथि,राजमहल कष्टकर भए गेल छनि। कमोबेस इएह हाल छनि पाँचो पाण्डवलोकनिकेँ।

द्रौपदी पाण्डवलोकनिक संग बिआहक समयसँ हुनकरसभक कल्याण लेल मान-अपमान सभटा पिबि गेलीह।हुनका सभकेँ सुखी रखबाक लेल दिन-राति लागल रहलीह।ताहि लेल अपन सर्वस्व समर्पण कए देलीह,अपन सुखकेँ तिलाञ्जलि दए देलीह। मुदा कतहु ने कतहु ओहो गलती कए गेलीह।अपन जीवनक उत्कर्ष कालमे अहकांरक वशीभूत भए गेलीह।दुर्योधन सन दुष्टात्माकेँ अपमानित करबाक कारण बरबाद भए गेलीह।हस्तिनापुरमे अनेक महापुरुषक

उपस्थितिमे भरल सभामे नाङट कएल गेलीह। सदा-सर्वदा कृष्ण द्रौपदीक संग देलखिन।ओहि जुगक महानायक कृष्ण जे जूआमे सभ किछु हारि गेल पाण्डवलोकनिक भार्या,द्रौपदीक साड़ी नमरबैत रहि गेलखिन,दुश्शासन खिचैत रहि गेलथि,मुदा साड़ी बढ़ैते गेल,द्रौपदीक शील सुरक्षित रहि गेलनि। ओ हे कृष्ण!हे कृष्ण! कहैत रहि गेलीह।अपमान,अन्याय आ दुराचारक विरुद्ध हुनकर हृदयमे आगि वर्षक-वर्ष धधकैत रहलनि,कहिओ कम भेबे नहि केलनि। तकर प्रतिशोध लेबाक धृढ़ निश्चयक प्रचंड आगिमे सभ स्वाहा भए गेल।हस्तिनापुरमे किछु नहि बाँचल।विजयक बादो राजसुख नीक नहि लगलनि।अंततोगत्वा,द्रौपदी सहित पाँचो पाण्डव हारल,झमारल स्वर्गारोहण लेल बिदा भए गेलथि।

२

द्रोणाचार्यक अपमान

द्रोणाचार्य पारिवारिक आर्थिक स्थितिसँ बहुत परेसान रहथि। हुनकर आर्थिक स्थिति तेहने छलनि जे ओ अपन जनमौटी बच्चाक लेल दुधोक ओरिआन नहि कए पाबथि। दुधक बदलामे ओकरा चाउर पिसि पानिमे घोड़ि कए देथि। एहि बातसँ दुखी भए हुनकर पत्नी कैक बेर द्रुपद ओहिठाम मदतिक लेल जेबाक प्रेरणा देलखिन। मुदा हुनकर मोन नहि मानैत छलनि। हुनकर आत्मसम्मान हुनका ओतए जेबासँ रोकैत छलनि। आखिर पत्नीक वारंबार कहलापर ओ एकदिन राजा द्रुपदक ओहिठाम बिदा भलथि।

राजा द्रुपदक ओहिठाम बिदा होएबा काल द्रोणाचार्यकँ नेनामे गुरुकुलमे बिताओल गेल समय मोन पड़ि रहल छलनि। केना ओ द्रुपद आ आन संगी सभक संग कबड्डी खेलथि,पहलमानी करथि। कहिओ काल अंतराक्षरी सेहो होइ। ओहिमे तरह-तरहक पाँतिसभ दोहराओल जाइत। द्रुपद कतेक उदार छलाह। कैक बेर जानि बुझि कए हारि जइतथि जाहिसँ हुनकर बालसंगीसभ प्रसन्न होथि। हुनका

घरसँ तरह-तरहक सामानसभ अबैत रहैत छलनि। ओ सभटा सामान अपन संगीसभमे बाँटि दितथि। जेना-जेना गुरुकुलमे वासक समय लगचिआ रहल छल,तेना-तेना ओ बेसी भावुक होइत गेलाह। ओ द्रुपदक संग बेसी समय बितबैत छलाह। हुनका बेर-बेर आश्वस्त करथिन जे गुरुकुलसँ गेलाक बादो हुनकालोकनिक मित्रता बनल रहतनि। द्रोणाचार्य हुनकर बातकेँ शत-प्रतिशत सही मानि अपन सहमति देथि। कहथि-"अहाँक बिना हमरो बहुत मोसकिल लागि रहल अछि। ई सोचिए कए परेसानी भए रहल अछि जे हम अहाँ फराक-फराक रहब। मुदा कोनो बात नहि। अवसर भेटितहि हम अहाँसँ अबस्स भेंट करब। अहूँ अबैत-जाइत रहब।" एहि तरहेँ ओ सभ बहुत भावुक भए जाइत छलाह। लगबे नहि करनि जे ओ सभ कहिओ अन्यथो सोचि सकताह।

आखिर हुनकालोकनिक बिदाइक समय आबि गेल। गुरुकुलमे शिक्षा संपन्न कए शिष्यलोकनि अपन-अपन घर वापस जा रहल छलाह। ओहि राति द्रुपद आ द्रोणाचार्य राति भरि गप्प करैत रहि गेलाह। कैक बेर सपथ खाथि जे हमसभ एहिना मित्र बनल रहब। द्रोणाचार्य सेहो बहुत भावुक भए गेल रहथि। जाइत-जाइत कहलखिन-

"मित्र अहाँक भावनाक हम बहुत आदर करैत छी। जखने अवसर भेटत हम अहाँक ओहिठाम अबस्स आएब।"

मुदा जखन द्रोणाचार्यकेँ द्रुपद ओहिठाम जेबाक जरुरति भेलनि आ बहुत अछता-पछता कए ओ ओहिठाम गेबो केलाह तखन की भेटलनि?घोर अपमानक अतिरिक्त किछु नहि।

द्रोणाचार्यकेँ राजा द्रुपदक ओहिठाम बहुत अपमानजनक व्यवहार कएल गेलनि। राजा द्रुपद हुनका मित्र मानबासँ साफे मना कए देलखिन। कहलखिन-

"कहाँ हम कहाँ अहाँ? हम छी राजा आ अहाँ थिकहुँ दरिद्र ब्राह्मण। मित्रताक लेल बराबरी जरूरी होइत अछि। हम अहाँकेँ मित्र कोना भए सकैत

छी?” द्रुपदक एहन व्यवहारसँ द्रोणाचार्य बहुत अपमानित अनुभव केलनि। ओ उल्टे पैरे हुनका ओहिठामसँ वापस भए गेलाह।

वापस होइत काल द्रोणाचार्य रस्ता भरि कनैत रहि गेलाह। कैक बेर अफसोच करथि जे ओ कृपिक कहलापर द्रुपद ओहिठाम किएक गेलाह। हुनका अपनो मोनमे खुटका रहबे करनि। मुदा परिस्थितिए तेहन रहनि जे ओ हुनका ओहिठाम गेलाह। मुदा जखन द्रुपद हुनका अपमानित केलखिन,मित्र मानबासँ साफे मना कए देलखिन तखन तँ द्रोणाचार्यक देहममे आगि लागि गेलनि। होनि जे की करथि की नहि। निस्सन्देह ओ गरीब छलाह ,मुदा छलाह महान विद्वान। शस्त्र आ शास्त्रक एक्केठाम महान ज्ञाता छलाह। हुनका विश्वास छलनि जे ओ अपन योग्यता बले एहि अपमानक बदला अबस्स लेताह।

द्रुपद ओहिठामसँ अपन घर वापस जाइत काल हुनकर मोनमे तरह-तरहक विचारसभ उठैत रहलनि। होनि जे कृपिकेँ की कहबनि?यदि सत्य बात कहि देबनि तँ ओ बहुत आहत हेतीह। ओ अपन भाए कृपाचार्यसँ कहथिन। पता नहि ओहो की सोचताह? हुनका घंटा भरि चललाक बाद एकटा इनार देखेलनि। ओ बहुत पिआसल छलाह। ओहिठाम पानि पिलाह आ थोड़े काल सुस्तेलाह। तखने भेलनि जेना केओ कहि रहल अछि-

“अगुताह नहि द्रोणाचार्य। समय बदलैत छैक। तूँ बहुत योग्य व्यक्ति छह। अपन योग्यताक सही उपयोग करह। तोहर भाग्य अबस्स पलटी लेतह।” द्रोणाचार्य आश्चर्यमे छलाह। कतहु केओ नहि छल। बुझेबे नहि करनि जे ई अबाज कतएसँ आएल। जतएसँ आएल,मुदा एहिसँ हुनकामे नूतन आशाक संचार भेलनि। ओ एक बेर फेर आत्मविश्वाससँ भरि गेल छलाह। ओ मोने-मोन सोचथि-

“द्रुपदकेँ तँ अपन करनीक फल भोगहि पड़तैक।”

इएहसभ सोचैत ओ वापस कृपि लग पहुँचि गेलाह। कृपिक सामने अबितहि ओ बहुत गंभीर भए गेलथि। ओ कतबो प्रयास करथि,द्रोणाचार्य किछु

बजबे नहि करथि। ओ भीतरसँ उदास लागि रहल छलाह।कृपि हुनकर ई हालति देखि बहुत परेसान भए गेलीह। ओ द्रोणाचार्यकेँ पुछैत छथिन-

"की भेल?एना चुप किएक छी?की राजा द्रुपद किछु कहलनि?की रस्तामे किछु विघ्न भए गेल?"

जँ जँ कृपि पुछथिन तँ तँ द्रोणाचार्य गंभीर होइत गेलाह। आब तँ कृपि बहुत परेसान भए गेलथि। की करथि किछु फुरेबे नहि करनि।

द्रोणाचार्य राजा द्रुपदक ओहिठाम भेल घटनासँ बहुत दुखी भेल रहथि। बहुत अपमानित भेल रहथि। तकर बाद ओ बहुत दिन धरि आत्मग्लानिसँ,दुखसँ आहत समय बितबैत छलाह। ओ द्रुपद द्वारा कएल गेल अपमानकेँ नहि बिसरि सकलाह। द्रुपद द्वारा कहल गेल बात हुनका मोनमे बेर-बेर खटकैत रहलनि। एहि कष्टसँ समाधानक प्रयासमे द्रोणाचार्य हस्तिनापर पहुँचलाह। ओ कृपाचार्यक संगे रहए लगलाह। मुदा ओतहु सदति परेसान रहथि। द्रोणाचार्यक हालति देखि कृपाचार्यकेँ बुझबामे देरी नहि लगलनि। कृपिसँ हुनकासभ बात पता लगलनि। ओ द्रोणाचार्य लग पहुँचलाह आ हुनका कहलखिन-

"अहाँ धैर्य राखू। हस्तिनापुर सामर्थ्य आ संभावनासँ परिपूर्ण अछि। एकरा आगू द्रुपद कतहु नहि ठहरि सकैत अछि। अहाँ सही स्थानपर पहुँचि गेल छी। एही ठाम अहाँक समस्याक समाधान होएत।"

कृपाचार्य द्वारा बुझओलाक बाद द्रोणाचार्य किछु आश्वस्त भेलाह आ अपन दिनचर्यामे लागि गेलाह। ओ एक दिन हस्तिनापुरमे भ्रमण करैत बच्चासभकेँ हल्ला करैत सुनलनि। भेल ई रहैक जे पाण्डव आ कौरवलोकनिक गेन खेलाइत काल एकटा इनारमे खसि गेल रहनि। ओ सभ लाख प्रयास केलनि ,मुदा इनारमे सँ गेन नहि निकालि सकलाह। द्रोणाचार्य हुनकासभकेँ कहलखिन-

"अहाँसभ कथीक क्षत्रिय छी? हम ब्राह्मण छी,मुदा तेँ की?हम चाही तँ तुरंत एहि गेनकेँ इनारसँ निकालि देब।"

बच्चासभ एहि बातसँ बहुत उत्साहित भेल । ओ सभ हुनकासँ आग्रह केलकनि –"अपने अबस्स प्रयास कएल जाए। हमरासभकेँ ई गेन चाही।"

तकर बाद तँ द्रोणाचार्य तेना ने तीरसभ चलओलथि जे ओ गेनकेँ घिचने बाहर चलि आएल । बच्चासभ बहुत प्रसन्न भेल। ओ सभ सभटा खेरहा भीष्म पितामहकेँ कहलकनि। भीष्म पितामह बुझि गेलखिन जे ओ केओ आर नहि ,अपितु द्रोणाचार्य थिकाह। भीष्म हुनकासँ भेंट केलखिन आ हस्तिनापुर अएबाक कारण पुछलखिन। द्रोणाचार्य हुनका संगे द्रुपद ओहिठाम घटित भेल सभटा घटनाक जानकारी देलखिन । भीष्म कहलखिन-

"आब अहाँ हस्तिनापुरेमे रहू। एहिठाम पाण्डव आ कौरवलोकनिकेँ शिक्षा दिअनु। एहि ठाम अहाँकेँ कोनो असुविधा नहि होएत। हमरा लगैत अछि जे ई बालकसभ अहाँसँ शिक्षा पाबि उत्कृष्ट राजा बनि सकताह।अहूँ यशक भागी होएब।"

एहि तरहेँ भीष्म पितामह द्रोणाचार्यक प्रतिभासँ प्रभावित भए हुनका पाण्डव आ कौरवलोकनिक आचार्य बनओलथि। द्रोणाचार्यकेँ ई बहुत नीक अवसर बुझेलनि। ओ सहर्ष पाण्डव आ कौरवलोकनिक गुरु बनबाक लेल तैयार भए गेलाह।

३

गुरुदक्षिणा

द्रोणाचार्य पाण्डवलोकनिकेँ शस्त्र- अस्त्रक दीक्षा देनाइ शुरू केलनि। द्रोणाचार्यक कुशल मार्गदर्शनमे हुनकर शिष्यलोकनि एक सँ एक वीर योद्धा बनि गेलाह। ओ सभ युद्ध विद्यामे सभ तरहेँ निपुण भए गेलाह। आब समय आएल गुरुदक्षिणाक। शिष्यलोकनि गुरुदक्षिणाक लेल आतुर छलाह। कौरव,पाण्डव

परिवारक समस्त श्रेष्ठलोकनि ओतए उपस्थित छलाह। गुरुदक्षिणाक लेल शिष्यलोकनि तरह-तरहक प्रस्ताव लए तैयार छलाह। द्रोणाचार्य कहलखिन-

"हमरा ई सभ किछु नहि चाही।"

हुनकर बात सुनि चारूकात निस्तब्धता पसरि गेल। सभ छगुन्तामे छलाह। बुझि नहि पाबि रहल छलाह जे आचार्यक मोनमे की छनि। ओ की चाहैत छथि आ कोन बातसँ प्रसन्न हेताह। हुनकर गुरुदक्षिणा केना हेतनि?हुनका की देल जेतनि जाहिसँ ओ संतुष्ट हेताह?

अर्जुन आगू बढ़ि कहलखिन –

"गुरुदेव अहाँ अपन मंतव्य प्रकट करू। अहाँके जे चाही से हम प्रस्तुत कए देब।"

"नीकसँ सोचि लएह। बादमे फेर नहि कहिअह जे ई आ ओ।"

"अपनेक आज्ञा सिरोधार्य थिक गुरुवर!"

"हमर आदेश अछि जे राजा द्रुपदकेँ बंदी बना कए हमरा सामनेमे उपस्थित कएल जाए।"

"अबस्स। अपनेक आदेशक पालन कएल जाएत।"

अर्जुन पूर्ण आत्मविश्वास संग ई बात कहलनि। हुनकर चारू भाइ हुनका समर्थन केलखिन।

दुर्योधनक नेतृत्वमे कौरव लोकोनि सेहो राजा द्रुपदकेँ बंदी बना कए गुरु द्रोणाचार्यक सम्मुख अनबाक लेल तैयार भए गेलाह। जेठ होएबाक कारणेँ गुरु द्रोणाचार्य पहिने दुर्योधन आ हुनकर भाएलोकनिकेँ अवसर देलखिन। ओ सभ बहुत उत्साहसँ राजा द्रुपदपर आक्रमण केबो केलनि। मुदा जल्दीए हारि कए वापस आबि गेलाह। तकर बाद पाण्डवलोकनि एहि काजक लेल बिदा भेलाह। पाण्डवलोकनि बहुत सहजतासँ राजा द्रुपदकेँ युद्धमे हरा देलनि आ हुनका बंदी बना कए गुरु द्रोणाचार्यक सामनेमे उपस्थित केलनि। द्रोणाचार्यक प्रसन्नताक

अंते नहि छल। राजा द्रुपद हुनका देखितहि लाजे कठौत भए गेलथि। द्रोणाचार्य कहलखिन-

“आब कहू की हाल अछि?अहाँ हमर मित्र बनब की?”

“अबस्स बनब।”

“मुदा अहाँ लगमे तँ आब राज नहि अछि ने अहाँ राजा छी। तखन कोना की होएत? अहाँ हमर बराबरी कोना करब?”

द्रुपद हुनकर मुँह देखैत रहि गेलाह। ओ बहुत लज्जित अनुभव कए रहल छलाह। हुनका फुरेबे नहि करनि जे की बाजथि, अपन गलती कोना स्वीकार करथि। आखिर द्रोणाचार्य बजलाह-

“हम अहाँक आधा राज वापस कए दैत छी जाहिसँ आब हम आ अहाँ बराबर भए जाएब आ हमरालोकनिक मित्रता फेरसँ स्थापित भए सकत। की अहाँकेँ ई स्वीकार अछि?”

“अबस्स स्वीकार अछि।”

तकर बाद द्रोणाचार्य द्रुपदकेँ आधा राज वापस कए देलखिन आ आधा राजक स्वयं राजा बनि गेलाह। द्रुपद तत्काल एहि प्रस्तावकेँ मानि लेलथि,मुदा ओ बहुत अपमानित अनुभव करैत छलाह। ओ एहि अपमानक प्रतिशोध लेबाक लेल व्याकुल छलाह।

४

द्रौपदी जन्म प्रसंग

राजा द्रुपदक व्यवहारसँ द्रोणाचार्य अत्यन्त दुखी छलाह आ तकर प्रतिशोध करओलनि अपन शिष्यलोकनिक मारफत। राजा द्रुपदक आधा राज द्रोणाचार्य हरपि लेलनि। अपमानित भए राजा द्रुपद गहुमन साँप जकाँ फिफिआइत रहलाह। मुदा समाधान नहि बुझाइन। अपने वा सहयोगी,शुभचिंतक

एतेक शक्तिसंपन्न नहि रहथि जे पाण्डव,कौरवक सम्मिलिति शक्तिसँ पोषित द्रोणाचार्यक मोकाबिला कए सकथि। कोनो रस्ता नहि पाबि राजा द्रुपद यज आ उपयज नामक ऋषिलोकनिसँ सुयोग्य आ शक्तिसंपन्न संतानक लेल यज्ञ करओलनि। राजा द्रुपद अपन भार्या पृशतिक संगे यज्ञमे उपस्थित छलाह। दुनू ऋषिलोकनि तन्मयतासँ यज्ञक विधान पूर्ण केलनि। आब पृशतिकेँ प्रसाद ग्रहण करबाक छलनि जाहिसँ हुनका ओजस्वी आ वीर संतान होइतनि। मुदा ओ प्रसाद ग्रहण करबामे विलंब कए देलनि। ओहिसँ पूर्व शुद्ध होएबाक लेल स्नानगृह चलि गेलीह। यज ऋषि रुकि नहि सकैत छलाह। ओ ओहि प्रसादकेँ तुरंत अग्निमे समर्पित कए देलनि। तत्काल आश्चर्यचकित करए बला घटना घटित भेल। यज्ञशालासँ एकटा युवक उत्पन्न भेलाह। थोड़बे कालक बाद एकटा श्याम वर्णक कन्या सेहो यज्ञअग्निसँ बाहर भेलीह। हुनकर सौंदर्य देखैत बनैत छल। पैघ-पैघ आँखि,नमगर-पोरगर देह,तेजोमय आनन जे देखलक से देखैत रहि गेल। ओहि पुरुषक नाम दृष्टद्युम्न आ कन्याक नाम द्रौपदी राखल गेल। ओ दुनूगोटे द्रुपदकेँ अपन पिता आ पृशतिकेँ अपन माता मानि हुनकालोकनिकेँ प्रणाम केलनि। ओही समयमे आकाशवाणी भेल-

“सौंदर्यसंपन्न ई कन्या अद्भुत अछि। ई अनेक क्षत्रिय राजालोकनिक संहारक कारण बनतीह। ई देवतालोकनिक काज पूर्ण करतीह आ कौरवक विनाशमे सहयोगी हेतीह।”

महाभारत कालखण्डमे भारतवर्षमे एक सँ एक महापुरुष अवतरित भेल रहथि।लगैत अछि जेना ओहि समयमे एक्के बेर पुरुषार्थी आ महान योद्धालोकनिक पथार लागि गेल छल।कमी छल तँ आपसी सद्भावनाक,पारिवारिक सामंजस्यक। जाहि कारण महाविनाश भेल।एहने समयमे द्रौपदीक जन्म भेल रहनि। हुनका अनेक नामसँ जानल जाइत छनि-कृष्णेयी, यज्ञसेनी, महाभारती, सैरंध्री, पांचाली, अग्निसुता।सभ नामक पाछू अपन

रहस्य छल,अपन वृतान्त छल। ओ यज्ञ द्वारा उत्पन्न भेल छलीह,तैँ यज्ञसेनी नाम पड़लनि।

द्रौपदी जन्मे लेने छलीह विशेष उद्येश्यक प्रतिपूर्तिक लेल।त्याग,तपस्या आ निष्ठाक प्रतीक छलीह ओ।जिनकर जीवन वृतान्त हजारों साल बीति गेलाक बादों लोककेँ उद्वेलित करैत अछि,सोचबाक लेल विवश कए दैत अछि।विचित्र परिस्थित आ यज्ञाक अग्निसँ उत्पन्न द्रौपदी अपन सौन्दर्य, बुद्धि आ मजगूत चरित्रक लेल प्रख्यात भेलीह।द्रुपद हुनकर बिआहक लेल स्वयंवरक आयोजन केलनि जाहिमे देश-विदेशक अनेक प्रसिद्ध राजकुमारलोकनि सामिल भेलाह।ओहि स्वयंवरमे तेहन ने प्रतिस्पर्धा जन्म लेलक जे कालान्तरमे महाविनाशक कारण बनल।

५

जंगलमे मंगल

लाक्षागृहसँ जीबैत बँचि गेलाक बाद पाण्डवलोकनि अपन माता कुंतीक संगे एकचक्रा नगरमे एकटा ब्राह्मणक ओहि ठाम निवास कए रहल छलाह। ओतए ओ सभ ब्राह्मणक वेष धारण केने छलाह जाहिसँ हुनकर मूल रूपक जनतब ककरो नहि होइ आ ओ सभ सुरक्षित रहि सकथि। ओ ब्राह्मण तँ स्वयं बहुत गरीब रहथि। बहुत मोसकिलसँ अपन व्यवस्था करथि। ऊपरसँ छओटा पाहुन। “आब कोना की होएत?”-से सोचि ओ बहुत चिंतित छलाह। अर्जुन हुनकर चिंता बुझलखिन। ओ कहलखिन-

“अहाँ हमरासभक चिंता नहि करू।हमसभ अहाँकेँ कोनो तरहेँ परेसानी नहि होमए देब।”

ब्राह्मण हुनकर मुँह टक-टक देखैत रहि गेलाह। साइत हुनका अर्जुनक बात सुनि बहुत आश्चर्य भेलनि। मुदा ओ बजलाह किछु नहि। ओ मोने-मोन

सोचथि-"आब जखन ई सभ आबिए गेल छथि तखन हुनका आश्रय तँ देबेक अछि। हुनकालोकनिक स्वागत तँ कएले जेतनि। जे होएबाक छैक से हेतैक।" अपना भरि ओ ब्राह्मण अतिथिलोकनिक सेवामे लागल रहैत छलाह। पाण्डवलोकनि सेहो अपना भरि प्रयास करथि जे घरबैयाकेँ कम सँ कम भार होनि। ताहि लेल बेरा-बेरी एक भाइ जंगल चलि जाथि। ओहिठामसँ अनेक प्रकारक फल,तरकारीसभ आनथि। पूजाक लेल फूल-पात सेहो लेने आबथि। भोजन बनेबाक लेल जारनि सेहो आनथि। कहिओ काल स्वभाववश जंगलमे सिकार सेहो करथि। मुदा ओहि सिकारकेँ घर तँ आनि नहि सकैत छलाह। बेसी काल ओकरा ओतहि छोड़ि देथि। कुलमिला कए पाण्डवलोकनिक समय ओहिठाम नीकसँ बीति रहल छलनि। हुनकासभक संगे ब्राह्मणक समय सेहो सुगम भए गेल छलनि।ओ दुनू बेकती आपसमे गप्प करितथि-

"हमसभ अनेरे चिंता करैत छलहुँ। सही कहल गेल अछि-"जाके खर्चा सवालाख मोन उपजै सवा सेर,भगवन करिहैं कोनो फेर।"हमसभ सोची जे एक्केठाम छओटा पाहुनकेँ कोना राखि सकबनि? हुनकालोकनिक भोजनक जोगार केना होएत? मुदा सभ किछु नीकसँ चलि रहल अछि। अपितु,हुनकालोकनिकेँ संगे रहलासँ हमहूँसभ आनन्द कए रहल छी।"

एकदिन अर्जुन जंगल गेल रहथि। गाछपर चढ़ि कए जारनिक जोगारमे लागल रहथि कि कनीक फटकी एकटा बहुत सुंदर हरिण देखेलनि। भेलनि जे किएक ने एकरा जीबिते पकड़ल जाए। फेर चिंतो होनि जे यदि एहि हरिणकेँ लए कए वापस जाएब तखन ब्राह्मण कहीं सशंकित ने भए जाथि।

"से जे हेतैक से देखल जेतैक। पहिने सिकार तँ कएल जाए।"

गाछेपर बैसल अर्जुन ओहि हरिणकेँ देखि अपन धनुषकेँ संधान करैत छथि। धनुषसँ तीर सनसनाइत हरिणक टांग लग पहुँचैत अछि। अर्जुन धरा-धर चारि-पाँचटा तीर चलबैत छथि। ओ हरिण तीरसँ चारूकातसँ घेरा जाइत अछि।

ने आगू बढ़ि सकैत अछि,ने पाछू जा सकैत अछि। ओकर अवस्था देखि अर्जुन जोरसँ ठहाका मारैत छथि। हुनकर ठहाका सुनि कए कनी फटकी ठाढ़ि एकटा युवतीकँ चकबिदोर लागि जाइत छनि।ओ अचंभित भए जाइत छथि।

“एहन गहन जंगलमे आखिर ई अबाज आएल कतएसँ?एकर श्रोत के अछि?”-ओ सुंदरी मोनमे सोचि रहल छलीह। चारू दिस ताकि रहल छथि,मुदा केओ देखा नहि रहल छनि। ओ जंगल छलहो तेहने भयाओन। चारूकात गाछ-बिरिछ भरल छल। मौसमसे अचानक खराप भेल जा रहल छल। टिपिर-टिपिर पानि पड़ि रहल छल। आकाशमे रहि-रहि कए बिजलौका चमकि रहल छल। अर्जुन गाछपर सँ नीचाँ उतरलाह आ ओहि हरिण दिस बिदा भेलाह। हरिण तीरसँ तेनाने फँसि गेल छल जे चाहिओ कए भागि नहि सकैत छल। आखिर अर्जुन ओकरा जीबिते पकड़बामे सफल भेलाह। ओहि हरिणकँ गछारि अर्जुन आब घर दिस वापस होइत छलाह कि अचानक बिजलौका चमकल। ओकर प्रकाशमे हुनका एकटा अपूर्व सुंदरी देखेलनि।

“सएह कहूँ। एहि जंगलमे सेहो ओहो एहन खराप मौसममे ई सुंदरी की कए रहल अछि? ई के अछि?”

अर्जुनक जिज्ञासा स्वाभाविक छलनि। फेर ओ कोनो साधारण नारी नहि छलीह। फटकीएसँ हुनकर देहसँ निकलि रहल सुगंध पसरि रहल छल। हुनकर रंग श्याम आ आँखि कमलक पंखुरी सन पैघ-पैघ छल। हुनकर छाती उतान आ आकर्षक छल। हुनका देखितहि अर्जुन मोहित भए गेलाह। हुनकर एक हाथमे हरिण छलनि,दोसर हाथमे धनुष-तीर। मोन ओहि सुंदरिमे फँसि गेल छलनि। किछु फुरेबे नहि करनि जे की करथि?आखिर ओ जेना-तेना ओहि सुंदरिक लगीचमे पहुँचैत छथि।

जेहने अर्जुन तेहने द्रौपदी।यद्यपि अर्जुन ब्राह्मणक भेषमे छलाह,मुदा हुनकर देह अद्भुत कांतिसँ भरल छल। ऊपरसँ पीठपर लटकल तुरीण आ संगमे सिकारमे पकड़ल गेल जीबैत हरिण। ई सभ अपना-आपमे पर्याप्त छल।

“ई तँ कोनो उच्च कुलक क्षत्रिय लागि रहल छथि। मुदा भेष तँ ब्राह्मणक बनओने छथि।जरूर किछु रहस्य अछि।”-द्रौपदी मोने-मोन सोचि रहल छथि। ओमहर अर्जुन द्रौपदीकेँ एकटक देखने जा रहल छलाह। आखिर द्रौपदीए टोकलखिन-

“अहाँ एना किएक देखि रहल छी?हमरा तँ डर भए रहल अछि।”

“करू की?हम अहाँकेँ देखितहि विवश भए गेल छी। अहाँकेँ देखि लगैत अछि जेना स्वर्गसँ रंभा स्वयं आबि गेल होथि।”

“अहाँ तँ बहुत नीक कविता कए लैत छी।”

“ई कविता नहि , नितान्त सत्य अछि। बिजलौका तँ एक बेर चमकल आ बिलाएल,मुदा अहाँक तेजसँ तँ चारू दिस निरंतर चमकि रहल अछि। एहन सौंदर्यमयी देवीकेँ देखि के नहि आकर्षित होएत?”

“मुदा अपने असलमे छी के? ब्राह्मणक भेष जरूर धेने छी। मुदा अहाँ छी किछु आओर?कृपया अपन परिचय दिअ।”

“हमर नाम अछि अर्जुन। हम पाँचो भाए आ माता कुंती अखन एकटा ब्राह्मण परिवारक संगे रहि रहल छी।”

“से किएक?पाँडव तँ बड़का लोक छथि। अपनेक ई हाल किएक भेल?”

“कखनहु निचेनसँ ई खिस्सा कहब। मुदा अहाँ के छी आ एसगरि एहि जंगलमे की कए रहल छी?”

“एसगरि नहि छी हम?हमरा संगे बहुत लोक आएल छथि।”

“मुदा हम तँ ककरो नहि देखि रहल छिअनि।”

"जंगलसँ सटले एकटा प्रसिद्ध महादेव मंदिर छैक।ओहिठाम शिवरात्रिमे बहुत पैघ मेला लगैत छैक।हमसभ ओहीमे आएल छलहुँ। महादेव दर्शनक बाद हम जंगल देखबाक लेल आगू बढ़ि गेलहुँ आ रस्ता भुतला गेल। हमरा संगे आएल आर लोकसभ मंदिरे परिसरमे हमर प्रतीक्षा कए रहल छथि।"

"कोनो चिंताक बात नहि। हम अहाँकेँ ओतए पहुँचा देब। अहाँ हमरा संगे चलू।"

द्रौपदी अर्जुनक संगे बिदा होइत छथि। ओ बेर-बेर अर्जुनक हरिणकेँ देखि रहल छथि।आखिर ओ पुछिए देलखिन-"ई हरिण कतए भेटि गेल?"

"एतहि जंगलमे देखाएल छल।"

"ई तँ बहुत सुंदर अछि।"

"अहाँ एकरा लेने जाउ।"

"हमरा ई हरिण बहुत पसिंद अछि। मुदा अहाँसँ लेबामे संकोच भए रहल अछि।"

"एहिमे संकोचक कोन बात भेलैक। हमहूँ चिंतामे रही जे एकर करू की?अपना संगे कोना लए जाएब?आखिर हम ब्राह्मणक भेष धेने छी।"

"तँ छोड़ि दिअ ने ई टाटक। असली रूपमे आबि जाउ।"

"सभ किछुक समय होइत छैक। अखन अहाँ ई हरिण अपना संगे लेने जाउ। मुदा ककरो ई खिस्सा नहि कहबैक।"

द्रौपदीकेँ ओ हरिण बहुत पसिंद रहनि। ओ अर्जुनक आग्रह मानि हरिण अपना संगे लेने मंदिर धरि पहुँचि जाइत छथि। अर्जुन हुनकासँ बिदा लैत छथि। जाइत-जाइत अर्जुन द्रौपदी दिस बेर-बेर देखि रहल छथि। मोनमे बहुत तरहक बात आबि रहल छनि। मुदा बाजि नहि पाबि रहल छथि। ओमहर हरिणक संगे जखन द्रौपदी मंदिर परिसरमे प्रवेश करैत छथि तँ हुनकर अंगरक्षकलोकनि बहुत प्रसन्न होइत छथि। असलमे ओ सभ बहुत परेसान छलाह। द्रौपदी बिना कहने

जंगल दिस बढ़ि गेल रहथिन । हुनका वापस अएबामे विलंब भेलासँ हुनकालोकनिक परेसानी भए रहल छलनि। मौसम से बहुत गड़बड़ भए गेल छल। एमहर द्रौपदी पहुँचलीह ओमहर मौसम सेहो फरिछ भए गेल।

द्रौपदीक संगमे एतेक सुंदर हरिण देखि हुनकर संगे आएल सभ गोटे बहुत चकित रहथि। ओ सभ बेर-बेर द्रौपदीकेँ पुछथिन- “अहाँकेँ ई कतए भेटि गेल?”

मुदा द्रौपदी किछु उत्तर नहि देथिन, बस हँसि देथिन। द्रौपदी अपन अंगरक्षकसभक संगे वापस अपन महल दिस बिदा भेलथि। रस्ता भरि हुनकर ध्यान अर्जुने पर रहनि। आर किछु देखेबे नहि करनि।ओ एही अवस्थामे अपन महल धरि पहुँचि गेलथि।

६

द्रौपदीक अर्जुन प्रति आकर्षण

जंगलमे द्रौपदीकेँ रस्ता बिसरा गेलनि। ओ रस्ता तकैत-तकैत गहन जंगलमे पहुँचि गेलीह। यद्यपि रस्ता बिसरि गेलासँ ओ चिंतित रहथि,मुदा चारू कात पसरल प्राकृतिक सौंदर्य देखि ओ कनी काल लेल सभ किछु बिसरि गेलथि।गाछसभपर अनेक प्रकारक फलसभ लुधकल छल। चिड़ै-चुनमुनसभ ओहि फलसभकेँ खेबाक लेल कुदि-फानि रहल छल।जानबरसभ सिकार करबाक लेल एक-दोसरकेँ पछोड़ कए रहल छल।कतहु-कतहु तँ ओकरासभमे आपसी लड़ाइ सेहो भए रहल छल।अचानक ओ एकटा क्योरा फूलक गाछ लग पहुँचि जाइत छथि। ओहि फूलक सुगंध बहुत फटकीएसँ आनन्दित कए रहल अछि। एतेक आनन्दपूर्ण वातावरणमे पहुँचि द्रौपदी निश्चय बहुत प्रसन्न छलीह। मुदा वापस मंदिर लग पहुँचबाक रस्ता नहि भेटनि। मंदिरमे बजैत शङ्ख,घड़ी-घंटा रहि-रहि कए सुनाइत छलनि। ताहिसँ लागनि जे ओ बहुत फटकी नहि छथि।मंदिर

कतहु लगीचेमे अछि। मुदा ओहिठाम पहुँचतीह कोना?आखिर अर्जुन हुनका भेटलखिन। ओएह हुनका मंदिर धरि पहुँचाओ देलखिन।उपहारमे सिकार कएल हरिण सेहो देलखिन। तकर बाद अर्जुन चलि गेलाह।द्रौपदी सेहो अपन काफिलाक संग राजमहल पहुँचि गेलीह। मुदा हुनकर मोन सदिखन अर्जुने पर टांगल रहैत छलनि। हुनका अपनो आश्चर्य लागनि जे एना किएक भए रहल अछि?

"पहिल बेर हम हुनका देखलिअनि तखने जेना ओ जादू कए देलनि ।"

जखन कखनहु ओ एसगरि होइतथि हुनकर ध्यान हठात अर्जुनपर चलि जानि। चिंताक कारण ईहो छलनि जे द्रुपद हुनकर बिआहक लेल स्वयंवरक ओरिआनमे लागल छलाह।

"अर्जुन तँ ब्राह्मणक भेष धेने छथि। एहनमे ओ स्वयंवरमे आबिओ सकताह कि नहि?यदि आबिओ जेताह तँ सामिल भए सकताह कि नहि? कारण स्वयंवर तँ मात्र राजकुमारलोकनिक लेल आयोजित कएल गेल अछि। एहिमे ब्राह्मणक कोन काज?"

एहि चिंतासँ द्रौपदी रोगाएल जा रहल छलीह। आब तँ सपनोमे हुनका अर्जुने देखाइत छलखिन। ककरा की कहथिन से फुरा नहि रहल छलनि। ओमहर हुनकर पिता स्वयंवरक तैयारी तेज केने जा रहल छलाह। जेना-जेना स्वयंवरक समय लगीच आबि रहल छल,तेना-तेना द्रौपदीक चिंता बढ़िते जा रहल छलनि।

अर्जुनक स्मरणमे द्रौपदी सुधि-बुधि बिसरि जाइत छलीह। जलखै,भोजन पर्यन्तक सोह नहि रहैत छलनि। हुनकर स्वास्थ्य खराप होमए लगलनि। नित्यप्रतिक दिनचर्या गड़बड़ा गेलनि। ककरो किछु कहथिन नहि। केओ लाल बुझक्कर तँ छल नहि जे हुनकर मोनक बात बुझि जइतनि। हुनकर संगीसभ बहुत पुछथिन । मुदा उत्तर किछु नहि भेटनि। आखिर ई समाचार द्रुपद धरि पहुँचल।ओ एहि बातक जाँच करबाक लेल किछु खास लोकसभकेँ लगओलनि। मुदा ककरो किछु पता नहि लगलैक। केओ करबे की करितए।आखिर बात

खुजैत-खुजैत एतबा पता लगलनि जे ओ मंदिर गेल छलीह ,वापसीमे एकटा हरिण लेने आएल रहथि आ तहिएसँ एहन ढब केने छथि।

द्रौपदी एसगरि पड़ल-पड़ल कखनो काल चित्र बनबैत रहैत छलीह। ओ चित्र द्रौपदी घंटो देखैत रहैत छलीह,ओकरासँ गप्पो करैत रहैत छलीह। जासूससभ ओहि चित्रकेँ द्रौपदीक कोठरीसँ निकालि द्रुपदकेँ पहुँचा देलकनि। संगे सभटा खेरहा सेहो कहलकनि। जखन ई चित्र द्रुपद लोग पहुँचलनि तँ हुनका अनुमान लगेबामे कनीको विलंब नहि भेलनि जे बात की अछि।

“इएह ओ आदमी थिक जकरा प्रतिए द्रौपदी अनुरक्त अछि। मुदा ई तँ ब्राह्मणक वेषमे अछि। ओकर मुखारविंद बहुत तेजस्वी लागि रहल अछि। संगे ओ अपन धनुषसँ सिकार कए रहल अछि। किछु बुझाइए नहि रहल अछि जे बात की छैक?की द्रौपदी ककरो पसिंद कए लेने अछि? हम तँ स्वयंबरक घोषणा कए चुकल छी। आब हमर लाज कोना बाँचत?”

द्रुपदक मोनमे तरह-तरहक चिंतासभ भए रहल छलनि। मुदा समाधान किछु फुरा नहि रहल छलनि।आखिर अपन खास मंत्रीसभसँ विमर्शक बाद द्रुपद द्रौपदीकेँ समाद देलखिन जे ओ हुनकासँ भेंट करए आबि रहल छथि। पिताक समाद पाबि द्रौपदी की करितथि? ओ अपन पिताकेँ कोनो तरहेँ कष्ट नहि देबए चाहथि।अस्तु,जल्दीसँ नीक वस्त्रसभ पहिरि पिताक प्रतीक्षा करए लगलीह। द्रुपद असगरे द्रौपदीक कक्षमे पहुँचि गेलथि। हुनका देखितहु द्रौपदी संकोचसँ किछु बाजि नहि पबैत छथि। ओ पिताकेँ प्रणाम करैत छथि आ हुनका बैसबाक आग्रह करैत छथि। ने द्रुपद किछु बाजि रहल छथि ने द्रौपदी। द्रुपदकेँ फुरेबे नहि करनि जे ओ की बाजथि? कतएसँ वार्तालाप प्रारंभ करथि।आखिर मौन भंग करैत द्रुपद बजलथि-“आइ-काल्हि अहाँ बहुत उदास रहैत छी। से किएक?”

“हमरो किछु बुझा नहि रहल अछि। मुदा मोन सदिखन जेना कतहु लटकल रहैत अछि। लाख प्रयास करैत छी,मुदा किछु फरक नहि पड़ैत अछि।

सुतैत-उठैत बस एक्के बात। हम स्वयं चिंतित छी। हम नहि चाहैत छी जे हमरा कारण अहाँकेँ कनीको परेसानी होअए।अहाँ सन पिता भगवान सभकेँ देथुन। हमरा लेल अहाँ की नहि केलहुँ।हमरा सभ सुविधा देलहुँ। हमर मनोरथ पूरा करबाक लेल अहाँ निरन्तर लागल रहलहुँ।एहनमे हम किछु एहन नहि करए चाहैत छी जाहिसँ अहाँकेँ कनीको कष्ट होअए,अहाँक मान-सम्मानक कोनो प्रकारसँ क्षति होअए।”

“हम ई सभ नीकसँ जनैत छी। एकरा दोहरेबाक कोनो प्रयोजन नहि अछि। असल बात अछि जे अहाँ परेसान रहैत छी,अहाँक स्वास्थ्य खराप भेल जा रहल अछि,से तँ नीक नहि भेल। हमरा स्पष्ट कहू जे अहाँ की चाहैत छी,अहाँकेँ की परेसानी अछि।की केओ अहाँकेँ किछु अनट बात कहलक?हमरासँ अहाँकेँ संकोच करबाक काज नहि अछि।अपन विचार निश्चिन्त भए प्रकट करू। हम अहाँक सुखक लेल असंभवोकेँ संभव करब।अहाँकेँ हमरापर विश्वास करक चाही।”

“आब जखन अहाँ कहिए रहल छी तँ साफ-साफ कहैत छी। हम जंगल दिस गेल रही। संयोगसँ एकटा ब्राह्मण देखेलथि। तखने हमर मोन कोनादनि कए रहल अछि। हुनकापर सँ ध्यान हटिते नहि अछि।”

“हमरा से पता अछि।”

“से कोना?”

“हम अहाँक पिता छी जरूर ,मुदा एहिठामक राजा सेहो छी। राजमे भए रहल घटनासभक जनतब राखब हमर कर्तव्य अछि। जासूस हमरा सभ जानकारी देलक अछि । स्वयंवर तँ भइए रहल अछि। देखिऔक तँ जे की होइत छैक।”- एतेक बात बाजि राजा द्रुपद द्रौपदीकेँ हुनके बनाएल चित्र वापस कए दैत छथि। ओहि चित्रकेँ पिता लग देखि द्रौपदी बहुत चकित छथि,कनी लज्जितो बुझाइत

छथि। मुदा आब करबे की करितथि? ओहुना हुनकर पितासँ बहुत निकटता छलनि,मित्रतापूर्ण व्यवहार रहैत छलनि।तथापि संकोच तँ छलनिहे।

“अहाँकेँ ई चित्र केना भेटल?”

“फेर ओएह बात। कहैत छी ने हमरा सभ पता अछि। अहाँ निश्चिन्त आ आश्वस्त रहू। स्वयंवर होमए दिऔक। हमरा विश्वास अछि जे अहाँक मनोकामना अबस्स पूर्ण होएत?”

“स्वयंवर जीतब तँ एकटा संयोग छैक। यदि केओ आर तकर सर्त पूरा कए लेत तखन?”

“अहाँ बेसी नहि सोचू।हम छी ने।”

पितासँ वार्तालापक बाद द्रौपदी आश्वस्त छलीह।आइ कैक दिनक बाद ओ मोनमे स्फुर्तिक अनुभव कए रहल छलीह। ओ आदरपूर्वक पिताकेँ प्रणाम करैत छथि ।द्रुपद प्रसन्न छथि। द्रौपदीकेँ आशीर्वाद दए ओहिठामसँ प्रस्थान करैत छथि।

द्रुपदकेँ चलि गेलाक बाद द्रौपदी बड़ी काल धरि अर्जुनक चित्रकेँ देखैत रहि गेलीह। फेर बहुत भावपूर्ण गीत गाबए लगलीह। गीतक मधुर ध्वनि लग-पासमे कार्यरत सेवादारसभकेँ सेहो सुनबामे अएलैक।आइ बहुत दिनक बाद द्रौपदीक कक्षसँ एहन मधुर ध्वनि बाहर आबि रहल छल। संपूर्ण वातावरण आनन्दित लागि रहल छल। द्रौपदी सेहो आनन्दमे छलीह। पिताक वचन मोनमे वारंबार गुंजित भए रहल छलनि। हुनका लागि रहल छलनि जेना हुनकर स्वप्न साकार होएबे करतनि। हुनकर प्रतीक्षाक आब जल्दीए अंत हेतनि। बस स्वयंवरक देरी छल। अस्तु,सभ किछु बिसरि द्रौपदी सेहो स्वयंवरक तैयारीमे लागि गेलीह।

द्रौपदी पसिंदक तरह-तरहक वस्त्र बनबाओल गेल।हुनका लेल रत्न जड़ित स्वर्ण आभूषणसभ बनबाओल गेल। देश भरिक प्रसिद्ध स्वर्णकारसभसँ

तरह-तरहक गहनासभ किनल गेल। एक तँ द्रौपदी छलीहे बहुत संदरि ,ऊपरसँ तरह-तरहसँ सजाओल गेल छलीह।एक सँ एक गहनासभसँ आभूषित कएल गेल छलनि।स्वयंवर दिनक लेल कतेको प्रकारक वस्त्रक व्यवस्था कएल गेल। तरह-तरहक विशेषज्ञसभ नित्य द्रौपदीकेँ प्रशिक्षण देथि। कोन कपड़ापर केहन गहना पहिरल जाएत, केना हुनकर केशक सज्जा कएल जाएत जाहिसँ कोनो त्रुटि नहि रहि जाए। ताहि लेल कलाकारसभ दिन-राति मेहनति कए रहल छलाह। द्रौपदी सेहो उत्साहपूर्वक हुनकासभक मार्गदर्शनक पालन कए रहल छलीह।

द्रौपदीसँ भेंट भेलाक बाद द्रुपद बहुत प्रसन्न रहथि। आब ओ सभ किछु बिसरि संपूर्ण शक्तिसँ स्वयंवरक तैयारीमे लागि गेलथि।

७

पाण्डवकेँ स्वयंवरक जनतब

ओहि दिन जंगल सँ लौटलाक बाद अर्जुन चुपचाप अपन कोठरीमे जा कए पड़ि गेलाह। भाएलोकनि अपन-अपन काजमे व्यस्त रहबाक कारण ध्यान नहि दए सकलखिन। मुदा जखन बड़ी काल धरि ओ कोठरीएमे पड़ल रहि गेलाह,रात्रि भोजन लेल सेहो बाहर नहि भेलाह तँ कुन्तीकेँ चिंता भेलनि। ओ अर्जुनक कोठरी लग जाइत छथि। हल्लुकेसँ केवाड़केँ खटखटबैत छथि। मुदा भीतरसँ कोनो उत्तर नहि अबैत छनि। स्वाभाविक रूपसँ ओ चिंतित भए जाइत छथि। केबाड़पर कनी जोर दैत छथि कि ओ खुजि गेल।कुन्तीकेँ एना अचानक आएल देखि अर्जुन ओछाओनपर सँ धरफराएल जल्दीसँ उठि जाइत छथि। अर्जुन किछु बजितथि ताहिसँ पहिने कुन्तीए हुनका पुछि बैसलथि-

“की बात छैक? आइ तूँ जंगलसँ लौटलाक बाद असगरमे चुपचाप पड़ल छह?किछु बाजि नहि रहल छह। जलखै नहि केलह।आब भोजनक समय भए रहल अछि। तथापि कोठरीएमे पड़ल छह?”

"जंगलसँ लौटि कए अलसा गेलिऐक। हम शौच कए तुरंत आबि रहल छी।"

कुन्ती वापस भनसा घर चलि गेलीह। चारू भाइ भोजनगृहमे आबि गेल रहथि। अर्जुनक प्रतीक्षा भए रहल छलनि। अर्जुन सेहो भनसाघर पहुँचि जाइत छथि। मुदा हुनकामे ओ स्फूर्ति नहि छनि।

"तूँ बहुत सुस्त लागि रहल छह। किछु विशेष बात?"-युधिष्ठिर पुछलखिन।

"जंगलमे हम एकटा बहुत सुंदर हरिणक सिकार केलहुँ। मुदा ओकरा संगे नहि आनि सकलहुँ।रखितहुँ कतए? ताही बातसँ दुखी छी।"

"ई कोन बात भेलैक?थोड़बे दिनक बात छैक। हमसभ कोनो एहीठाम रहए थोड़े आएल छी। अपन राज-पाटपर वापस चलि जाएब तखन जकरा जे करबाक मोन होएत से करब। "-युधिष्ठिर बजलाह।

"से ठीक छैक भैया! हमसभ क्षत्रिय कुलमे जन्म लेने छी। दिन-राति रक्षात्मक रहलासँ अपन नाक कटा रहल छी। हमरासभकें कौरबकें उचित उत्तर देबाक चाही ने कि नढ़िआ जकाँ नुकाएल रहबाक चाही।"-भीम बजलाह।नकुल आ सहदेव सेहो भीमक बातक समर्थन केलनि।भाइलोकनि मे विवाद बढ़ैत देखि माता कुन्ती कहलखिन-

"अहाँसभ परेसान नहि होउ। हमर मोन कहि रहल अछि जे उचित समय शीघ्र आबि रहल अछि। अखन अहाँसभ सभ किछु बिसरि भोजन करू। भगवान व्यास आबए बला छथि। ओ हमरालोकनिक मार्गदर्शन करताह।"

माताक बात सुनि भाइलोकनि शांत भेलाह आ भोजनमे लागि गेलाह। अपन पाँचो वीर पुत्रलोकनिकें भोजन करा कए कुन्तीकें बहुत आनन्द भए रहल छलनि। ओ मोने-मोन ईश्वरकें धन्यवाद दए रहल छलीह जे दुर्योधनक षड़यंत्र विफल भए गेलनि आ हुनकर सभ संतान सुरक्षित छथिन। रहल हस्तिनापुर वापस

जेबाक बात से तँ आइ ने काल्हि होएबे करतैक। सूर्यक प्रकाशकेँ के कतेक दिन रोकि सकत?जखन सूर्योदय भेल अछि तखन भोर होएबे करतैक।

चारू भाए भोजन कए ओसारापर गेले छलाह कि एकटा ब्राह्मण देखेलनि। ओ पांचाल नरेशक समाद लए कतहु जा रहल छलाह।रस्तामे भूख लागि गेलनि । ब्राह्मणक घर देखि ओ ओतए रुकि गेलाह।

“अपने के छी ?”-अर्जुन पुछलखिन।

“हम पांचाल नरेशक किछु जरूरी समाद लए आस-पासक राजालोकनिक ओहिठाम जा रहल छी। रस्तामे थाकि गेलहुँ तँ भेल जे कनी काल विश्राम कए ली।”

ताबे गृहश्वामी सेहो आबि गेलथि। ओ कहलखिन-

“अबस्स । गृहस्थक घर होइते छैक एही लेल। अतिथिक स्वागत अछि।”

आगन्तुक ब्राह्मण स्नान-ध्यानक बाद भोजन केलनि।कनी काल विश्राम केलनि।आब बिदा होइतथि।अवसर पाबि अर्जुन हुनका पुछलखिन-

“पांचाल नरेशक कोन समाद लए अहाँ जा रहल छी?ओतए सभ कुशल छैक ने?”

“ओहिठाम सभ कुशल अछि। पांचाल नरेश अपन पुत्री द्रौपदीक बिआह लेल स्वयंवरक आयोजन कए रहल छथि। ओहिमे सामिल होएबाक लेल देश-विदेशक राजालोकनिकेँ आमंत्रित कएल जा रहल छनि।हमहूँ ओएह समाद लए जा रहल छी।”-ओ ब्राह्मण बजलाह।

“स्वयंवर कहिआ आ कतए हेतैक? ओकर की सर्त छैक?”-अर्जुन पुछलखिन।

“एक मास बाद पांचालमे स्वयंवरक आयोजन कएल गेल अछि। रहल ओकर सर्तक बात से अहाँ सुनि कए की करब?”

“से किएक? पंचाल नरेश प्रतिष्ठित व्यक्ति छथि। हुनका ओहिठाम कोनो आयोजन भए रहल अछि,केना की भए रहल अछि तकर जानकारी तँ होएबेक चाही।”

“तखन अहाँकेँ कहिए दैत छी। स्वयंवरमे द्रौपदी ओकरे जयमाल पहिरओथिन जे स्वयंवर गृहमे राखल गेल मत्स्यकेँ अपन तीरसँ छेदि सकताह।”

“ई कोन बात भेलैक?”

“पहिने पूरा बात तँ सुनि लिअ। फेर कहब जे केहन भेलैक।”

“ठीक छैक। कहू अपन बात।”

“स्वयंवरमे प्रयुक्त मत्स्य यंत्रमे एकटा माँछ निरंतर वृत्ताकार नचैत रहत। ओकर प्रतिविम्ब नीचाँ पानिसँ भरल तसलामे देखि कए राजकुमारकेँ तीर एहि हिसाबसँ चलेबाक रहतनि जाहिसँ ओ माछक दहिना आँखिमे लगैक ।”

“ओ। ई तँ बहुत रुचिकर परीक्षाक योजन भए रहल अछि।”

“आब हमरा आज्ञा देल जाए। हम समयसँ समाद पहुँचा कए वापस भए जाइ सेहो बहुत जरूरी अछि। पांचालमे बहुत काज चलि रहल अछि। स्वयंवरक समयमे देश-विदेशसँ आएल अतिथिलोकनिक स्वागतक अद्भुत ओरिआन भए रहल अछि। मोन होअए तँ आबि जाएब। देखबामे कोनो मनाही नहि रहतैक। फेर ब्राह्मणलोकनिक आदर तँ पांचाल नरेश ओहिठाम होइते रहलनि अछि।”

अपन बात कहि ओ ब्राह्मण चलि जाइत रहलाह। मुदा अर्जुन? ओ तँ चिंतामग्न भए गेलाह। नहि सोचने रहथि जे एतेक जल्दी द्रौपदीक स्वयंवर हेतनि। अखन तँ ओ ब्राह्मणक भेषमे छथि। कहि नहि केना की होएत? मुदा द्रौपदीक प्रतिए हुनकर अनुराग दुखक कारण भए गेल छलनि। आब ओ चुप नहि बैसि सकैत छलाह। ओ माता कुन्ती लग पहुँचलाह।आखिर अपन मोनक बात ककरा कहितथिन?

८

व्यासक आगमन

अर्जुन आ कुन्तीक बीच संवाद चलिए रहल छल कि अचानक व्यास मुनि ओहिठाम पहुँचि गेलाह। हुनका तँ सभ किछु पता रहबे करनि। लाक्षागृहमे सँ पाण्डव कोना जीबैत निकलि गेलाह सेहो बुझल रहनि। तकर बाद ओ सभ कोना छथि,कतए छथि सभ किछु ओ जनैत छलाह।पाण्डव हुनकर संतान रहथिन। तँ हुनकालोकनिक प्रतिए किछु कर्तव्यो रहबे करनि। अस्तु,ओ हुनका सभक हाल-चाल लेबाक लेल ब्राह्मणक ओहिठाम पहुँचलाह। हुनका देखि समस्त परिवारमे आनन्द पसरि गेल।सभ आश्वस्त छलाह जे व्यास मुनि हुनकरसभक कल्याणक किछु व्योंत लए उपस्थित भेल हेताह। बातो सही निकलल। हुनका पांचाल नरेशक ओहिठाम आयोजित भए रहल स्वयंवरक जनतब रहनि। हुनका ईहो ध्यानमे छलनि जे द्रौपदी सन उपयुक्त कन्या यदि पाण्डव लग अबैत छथि तँ हिनकालोकनिक भाग्य पलटी लेतनि। पांचाल नरेशकेँ दहिन भए गेलाक बाद कौरव मोसकिलमे पड़ि सकैत छलाह। से सभ बिचारि व्यास मुनि पाण्डव लग पहुँचलाह। हुनकालोकनिकेँ स्वयंवरक जानकारी देलखिन। ओकर सर्तक बारेमे सेहो कहलखिन। ई बातसभ सुनि-सुनि अर्जुन अत्यन्त उत्तेजित भए गेलाह।उत्सुकतासँ आब हुनका कनीको प्रतीक्षा करब मोसकिल भए गेलनि। जखन व्यास पाण्डवलोकनिसँ भेंट केलाक बाद चलि गेलाह। तकर बाद अर्जुन अपन मंतव्य माताक उपस्थितिमे भाएलोकनिकेँ समक्ष रखलनि।अर्जुनक इच्छाक सम्मान करैत पाण्डवलोकनि स्वयंवर देखाबक लेल जेताह,से निर्णय लेल गेल। माता कुन्ती सेहो हुनकालोकनिक प्रस्तावक समर्थन केलनि। हुनका नीकसँ बुझल रहनि जे अर्जुन स्वयंवरक सर्तक पालन करबामे सक्षम छथि।

"मुदा तकर बाद?यदि ओ स्वयंवरमे द्रौपदीक संग बिआहक प्रस्ताव मानिओ लैत छथि तखन केना की होएत?द्रौपदी कतए रहतीह?"

फेर ओ मोने-मोन सोचलथि-

"की पता?द्रौपदीक भाग्यसँ सभ किछु ठीके भए जाए। ओकर पैर लछमिनिआ साबित होइक।हमसभ वापस अपन राज-पाटपर पहुँचि जाइ।" दुर्योधन आ हुनकर भाएलोकनिक दुष्टतासँ ओ अखनहु परेसान छलीह। जाहि तरहेँ षड़यंत्रपूर्वक पाँडवलोकनि आ हुनकर माए कुंतीकेँ लाक्षागृहमे भष्म कए देबाक योजना बनाओल गेल छल से सोचि ओ अखनहु रोमांचित भए जाइत छलीह। अपन पुत्रसभक जीवन रक्षाक लेल व्याकुल भए जाइत छलीह। मुदा राजकुमारसभ एहि तरहेँ कतेक दिन अपमानित जीवन जीबि सकैत छथि? पाँडवलोकनि पुरुषार्थी छथि,वीर छथि,युद्धमे किनको परास्त कए सकैत छथि। ताहि परिस्थितिमे ओ सभ अपन अधिकारसँ कतेक दिन वंचित रहताह? ई कतहुसँ उचित नहि छल। ई बात कुन्ती नीकसँ जनैत छलीह जे अर्जुन द्वारा स्वयंवर जीततहि ओतए हंगामा होएत। कौरबलोकनि अर्जुनकेँ चिन्हि जेताह। हुनका लाक्षागृहक षड़यंत्रक विफलताक अनुमान भए जेतनि।

"से जे हेतनि।नित्य डरा कए जीनाइसँ अधिकारक लेल मरि जाएब बेसी उचित आ सम्मानजनक थिक।"

एहि तरहेँ सोच-विचारक बाद पाण्डवलोकनि स्वयंवरक तैयारीमे लागि गेलाह।अर्जुनक मोनमे रहि-रहि कए द्रौपदी उपस्थित भए जाइत छलीह। हुनकर सौंदर्य,मधुर व्यवहार आ सभसँ ऊपर एक-दोसरक प्रति आकर्षण अद्भुत छल। लगैत छल जेना ओ सभ कतेक दिनसँ एक-दोसरकेँ जनैत होथि। अर्जुन कैक बेर सोचथि –"जखन हम द्रौपदीकेँ पसिंद करैत छिअनि आ द्रौपदी हमरा पसिंद करैत छथि तखन ई टाटकसभ करबाक कोन प्रयोजन छल? राजा द्रुपदकेँ सोझे बिआहक अनुमति देबाक छलनि। भए सकैत अछि जे द्रौपदी अपन मोनक बात

हुनका संकोचवश नहि कहि पाएल होथि? मुदा स्वयंवर तँ स्वयंवरे थिक। ओहिठाम एक सँ एक क्षत्रिय राजालोकनि उपस्थित रहताह। की पता केओ आर ओहि सर्तक पालन करबामे सक्षम भए जाथि? तखन? हमर सभटा मनोरथ मोनेमे रहि जाएत? द्रौपदी सेहो एहि बातसँ दुखी भए सकैत छथि, नहिओ भए सकैत छथि। कहि नहि हुनकर मनोदशा केहन रहतनि? की पता ओ ककरो आनकेँ सेहो पसिंद कए लेथि,किंवा अपन पिता अथवा राजालोकनिक दबाओमे निर्णय बदलि लेथि।"

अर्जुनक मोनमे तरह-तरहक प्रश्नसभ उठैत रहैत छलनि। फेर ओ अपन मोनकेँ बुझेबो करथि-

"अर्जुन आत्मविश्वास बनओने रहह। जे होएबाक छैक से हेतैक। ओना लक्ष्ण तँ अनुकूले बुझा रहल अछि। से यदि नहि होइत तखन व्यास मुनि स्वयं स्वयंवरक सूचना लए किएक अबितथि?"

एहि तरहेँ सोच-विचारमे अर्जुनक समय बीति रहल छलनि। संगे सभ भाए स्वयंवर दिनक उत्सुकतासँ प्रतीक्षा कए रहल छलाह।

ओमहर द्रौपदी सेहो बेचेन छलीह। कखनो काल बहुत उत्साहमे रहितथि। संगी सभक संगे हँसी-मजाक करितथि। कैक बेर अचानक गुम्म पड़ि जइतथि। जखन कखनहु हुनका अर्जुन ध्यानमे अबितथिन तँ ओ आर सभ किछु बिसरि जाथि। एही दुबिधामे हुनकर समय कटि रहल छलनि।

९

दुर्योधनक ओहिठाम स्वयंवरक चर्चा

पांचाल नरेशक समाद लए ब्राह्मणलोकनि अनेक राजासभक ओहिठाम गेलाह। द्रौपदीक सौंदर्यक जानकारी सभकेँ रहबे करनि। स्वयंवरक आयोजन

होएबाक कारण सभक मोनमे आशा जागि गेलनि। मुदा स्वयंवरक कठिन सर्त सुनि सभ चिंतित भए गेलाह। कहि नहि,के एहन तीर चला सकताह जे निरंतर वृत्ताकार नाचि रहल माछक आँखिकेँ छेदि सकत? बहुत कठिन काज। कतेक राजा तँ ई सभ सोचि-सोचि दुखित पड़ि गेलाह,निराश भए गेलाह।

स्वयंवरक समाचार दुर्योधनकेँ सेहो भेटलनि।ओ तुरंत अपन अनन्य मित्र कर्णक संगे एहि विषयपर चर्च केलनि।

“ई बहुत नीक अवसर अछि। स्वयंवर जीतलाक बाद द्रुपद नरेशसँ संबंध भए जाएत। हमरासभक शक्ति बहुत बढ़ि जाएत।”

“ऊपरसँ द्रौपदी सन सुंदरिसँ विआह सेहो होएत।”

“बिआह तँ कोनो एक्के गोटेके हेतैक,मुदा दुनू राज परिवारक संग मित्रतापूर्ण संबंध सभक लेल फएदा करत।”

“मानि लिअ जे हम स्वयंवरक सर्त पूर्ण नहि कए पबैत छी,तखन?”

“तखन की?हमसभ अपना सन मुँह लेने वापस चलि आएब।”

“ई तँ नीक नहि होएत। हमरासभक बहुत अप्रतिष्ठा होएत।”

“स्वयंवरक सर्त तँ हम एक मिनटमे पूरा कए देबैक। मुदा हमरा संगे समस्या ठाढ़ कएल जा सकैत अछि।”

“समस्या कथी?जखन अहाँ स्वयंवर जीति लेब तँ द्रौपदी अहाँक हेतीह।एहिमे विवाद छैहे कतए?स्वयंवरक माने सएह छैक।”

“स्वयंवर आयोजित केनिहार आ ओहिमे भाग लेनिहार सभ केओ हमरा देखितहि चिचिआ उठताह जे हम क्षत्रिय नहि छी।हम सूतपुत्र छी। हम तकर की उत्तर देबैक?”

“की बात करैत छी मित्र कर्ण। अहाँ अंगदेशक राजा छी। जे राजा भए गेल तकर जाति स्वयं क्षत्रिय भए गेल। एहिमे शङ्का कतए छैक?”

"अहाँ बच्चा जकाँ बाजि रहल छी। स्वयंवरमे सभ स्वार्थमे आन्हर रहत। कामांध लोककेँ की विवेक? फेर जाति व्यवस्था तँ अपन राष्ट्रकेँ घून जकाँ खेने जा रहल अछि। मात्र किछु कहि देलासँ लोकक मत थोड़े बदलि सकैत अछि। जखन स्वयंवरमे सामिल होएबाक पात्रताक निर्णये जातिपर हेतैक ने कि ओकर वीरतापर तखन सोचल जा सकैत अछि जे ओतए निर्णय केहन होएत। हम यदि स्वयंवर जीतिओ लेब तैओ द्रौपदी मना कए सकैत छथि,कारण हुनकर पिता आ संबंधीसभ तकर विरोध करबे करताह। अस्तु,हमरा लेल बहुत बढ़िआँ रहत जे ओहिमे जेबे नहि करी। अहाँसभकेँ जे ठीक बुझाए से करी।"

"जखन स्वयंवरक निमंत्रण देल गेल अछि तँ क्षत्रिय राजाक कर्तव्य भए जाइत अछि जे ओहिमे भाग लिअए। परिणाम जे होउक।"

"बढ़िआँ बात। अहाँकेँ तँ जेबेक चाही। हम तँ ई बात शुरूए सँ कहि रहल छी। अखन स्वयंवरमे बहुत समय छैक। हम अहाँकेँ एतेक दिनमे पारंगत कए देब।"

"से हमहूँ जनैत छी। मुदा अहाँ चलितहुँ तँ हमरो मोन लगैत।"

"आब अहाँ एतेक जोर दए रहल छी तँ हम अहाँक शिविरमे संगे रहब,मुदा स्वयंवरक स्थानपर नहि जा सकब। कारण ओहिठाम गेलासँ हमर अपमान होएबे करत। से तँ अहूँकेँ नीक नहि लागत।"

"कोनो बात नहि। अहाँ शिविरमे रहि जाएब । एतबो हमरा लेल पर्याप्त होएत।"

संयोगसँ दुश्शासन टहलि कए अपन बंधुलोकनिक संगे आबि रहल छलाह। हुनका देखितहि दुर्योधन हाक देलथि-

"अबैत जाह। बहुत सही समयपर आबि जाइत गेलह। हम तँ समाद देबहि बला छलहुँ।"

"की बात?"

"पहिने बैसह ने। "

सभ गोटे आश्वस्त होइत छथि। दुर्योधन द्रौपदी स्वयंवरक चर्चा करैत छथि। ओकर सर्तक बारेमे विस्तारसँ जानकारी दैत छथि।

"ई तँ बहुत बढ़िआँ अवसर अछि। हमरासभकेँ अबस्स चलबाक चाही।"

"मुदा कर्णक मोन आगू-पाछू कए रहल छनि।"

"से किएक?"

"हुनकेसँ पुछि लहुन। हम तँ बहुत कहलिअनि।"

"काजक बात करैत जाह। हमरे चर्चा करैत रहलाहसँ की फएदा?हमरा समस्या अछि से अछि। तकर कोनो समाधान ककरो लग नहि अछि। तेँ तकर बेर-बेर चर्चा करबासँ किछु होमए बला नहि अछि। रहल तोरासभक संगे स्वयंवरमे जेबाक गप्प से तँ हम कहिए चुकल छी।"

काल्हिसँ हमसभ नित्य भोरे अखाड़ामे व्यायाम केलाक बाद मत्स्य यंत्रमे नाचि रहल माँछक आँखिकेँ तीरसँ छेदबाक अभ्यास करब। जाहिसँ हमरालोकनि पहिले प्रयासमे लक्ष्य प्राप्त कए सकब।"-दुर्योधन बजलाह।

सभ भाए हुनकर समर्थन केलनि। तकर बाद ओहिठाम मनोरंजनक कार्यक्रम प्रारंभ भेल। एक सँ एक नटुआ अपन नृत्य कलासँ वातावरणकेँ मोहित कए देलक। सभसँ आश्चर्यक बात जे आइ कर्ण सेहो एकटा गीत गओलाह। गीतक भाव बहुत मार्मिक छल। सभ छगुन्तामे छलाह जे कर्णो एहन भावुक भए सकैत छथि?

१०

स्वयंवरक तैयारी

पांचाल नरेशक ओहिठाम स्वयंवरक तैयारी जोर-सोर सँ चलि रहल छल। नगरक प्रसिद्ध शिल्पकारसँ मत्स्य यंत्र बनाओल गेल। ओ यंत्र स्वयंमे अद्भुत

छल। निरंतर वृत्ताकार घुमैत रहैत छल। जाबे केओ ओहि यंत्रमे राखल माछक आँखिकेँ लक्ष्य संधान करैत,ताबे तँ ओ कतए सँ कतए चलि जाइत छल। नीचाँ पानिमे बनि रहल ओहि माछक प्रतिबिम्बकेँ देखि कए ऊपर मत्स्य यंत्रमे नचैत माछक आँखिकेँ तीरसँ छेदबाक रहैक। बहुत प्रयासक बाद ओ यंत्र बनि कए तैयार भेल। द्रौपदीकेँ ओ यंत्र देखाओल गेलनि। यंत्र देखि ओ छगुन्तामे छलीह। ओहि परीक्षाक कठिनता देखि ओ चिंतित भए गेलीह। हुनका एना परेसान देखि द्रुपद पुछलखिन-

“अहाँ बहुत चिंतित बुझा रहल छी?”

“मत्स्य यंत्र बहुत जटिल अछि। एहिमे निरंतर घुमि रहल माछक आँखिकेँ छेदब ककरो लेल बहुत कठिन काज भए सकैत अछि। हम नहि बुझि पाबि रहल छी जे स्वयंवर लेल एहन कठिन परीक्षा किएक बनाओल गेल? ई स्वयंवर भए रहल अछि कि कोनो तमासा?”

“अहाँ चिंता नहि करू।सभ किछु कृष्णक मार्गदर्शनमे भए रहल अछि। ओ छथि सर्वज्ञानी। हुनका बुझल छनि जे अहाँक लेल की नीक अछि।”

“यदि से बात छैक तखन एतेक टाटक करबाक प्रयोजन?ओ सोझे वरक घोषणा कए देथु।”

“सभ बात यदि अखनहि बुझि जेबैक तखन भविष्यक लेल की रहि जाएत? नियति अपन काज समयपर करत आ से करबे करत।स्वयंवरक कार्यक्रम होमए दिऔक। सभ किछु स्वयं स्पष्ट भए जाएत।”

पांचाल नरेशक महलसँ सटले दहिना दिस विशाल पांडाल लगाओल गेल अछि। पांडालमे तरह-तरहक चित्रसभ बनाओल गेल अछि। पांडलक ठीक बीचमे कृष्णक आकर्षक चित्र बनाओल गेल अछि। मंडपमे मधुर संगीत गायनसँ समस्त वातावरण मनमोहक भए गेल छल। एक सँ एक संगीतज्ञ,कलाकार अपन कलाक प्रदर्शन कए रहल छलाह। सामियानामे आबि रहल अतिथिलोकनिक

स्वागत बहुत आपकतासँ कएल जाइत छल।के कतए बैसताह,से स्थान पहिनेसँ पूर्व निर्धारित कएल गेल छल। ओहि मंडपक चारूकात अनेक प्रवेश द्वारि बनाओल गेल अछि।आगू दिस एकटा गुप्तमार्गसँ द्रौपदी ओहि मंडपमे प्रवेश करतीह । ओ केमहर बाटे अओतीह से केओ अनुमान नहि लगा सकैत अछि।ओ गुप्तमार्गसँ सोझे मंचपर पहुँचि सकतीह। विजेता राजपुरुषकेँ जयमाल पहिरा सकतीह। मंचपर पांचाल नरेश सहित अनेक गणमान्य लोकसभ विद्यमान रहताह।अनेक ठामसँ आएल राजा-महराजा लोकनिक बैसबाक ओरिआन सामनेमे कएल गेल छलनि। मंडपसँ बाहर लगैत छल जेना एकटा विशाल सहर बसि गेल अछि। सभ राजालोकनिक रहबाक लेल अलग-अलग व्यवस्था छल। पूरा स्वयंवर मण्डप नवकनिआँ जकाँ सजि गेल छल।

दुर्योधन अपन मित्र कर्ण आ बंधुलोकनिक संग शिविरमे पहुँचि गेल छलाह। कर्णक मोन उदास छलनि। ओ तँ ओतए आबए नहि चाहथि,मुदा दुर्योधनक दुराग्रहक आगू विवश भए गेलाह। हुनका पूर्ण विश्वास रहनि जे ओ स्वयंवरक सर्तक अनुसार मत्स्य यंत्रमे घुमि रहल माछक आँखिकेँ एक्के बेरमे छेदि देताह। खेल खतम भए जाइत। द्रौपदी हुनकर गलामे जयमाला पहिरा दितथि। मुदा सभ किछु एतेक आसान नहि छल। हुनका बुझल छलनि जे क्षत्रिय समाज हुनका नामपर कखनहु सहमत नहि होएत।ने द्रुपद स्वयं अपन जातिसँ बाहर संबंधक अनुमति देताह। तखन एहि स्वयंवरक की अर्थ रहि गेल? परिस्थिति नितान्त प्रतिकूल लागि रहल छलनि। एकदिस हुनकर पुरुषार्थ जोर मारि रहल छलनि तँ दोसर दिस नियति जेना हाथ पकड़ि कए ठाढ़ होअए।एही सभमे हुनकर मोन निरंतर ओझराएल छलनि। दुर्योधन हुनका चिंतित देखि टोकलकनि-

“की बात? अहाँ परेसान बुझा रहल छी?”

“नहि,नहि। कोनो बात नहि। स्वयंवर मंडपमे गीत-नाद भए रहल अछि। अहाँसभ शीघ्र ओतए पहुँचि जाउ।”

“अहाँ बिना हमसभ एकडेग आगू नहि बढ़ब।”

“अनेरे झंझटि किएक बेसाहि रहल छी?हम एहीठामसँ स्वयंवरक बेसी नीकसँ अनुभव कए सकब ।”

“अहाँकेँ चलए पड़त। एहि पृथ्वीपर ककर सामर्थ्य छैक जे कर्णक डेग रोकि सकए? अहाँ चलू तँ सही। बैसले रहब।अहाँकेँ ओतए उपस्थिति मात्रसँ हमसभ आश्वस्त रहब।”

आखिर कौरवलोकनिक संग कर्ण स्वयंवर मंडप दिस बिदा भेलाह। मंडप दिस मंद-मंद बढ़ैत कर्णक शोभा देखैत बनैत छल। लगैत छल जेना साक्षात सूर्यक तेज चारू कात पसरि रहल अछि। मंडपमे पहुँचितहि सभक ध्यान हुनकेपर चलि गेलनि। एहि बातसँ दुर्योधन बहुत प्रसन्न छलाह । इसारामे से कर्णकेँ कहबो केलखिन।

अचानक शङ्खनाद भेल आ मंचपर द्रौपदी सहित हुनकर पिता आ अन्य गणमान्यलोकनि उपस्थित भए गेलाह।

११

स्वयंवरसँ पूर्व

देश-विदेशसँ आएल राजालोकनि अपन-अपन संबंधी आ मित्रलोकनिक संगे स्वयंवर मंडपक चारू कात विराजमान छलाह। ओ सभ बहुत नीकसँ सजल-धजल छलाह। हुनकालोकनिक मुकुटमे अनेक प्रकारक रत्नसभ जुड़ल छलनि। ओकर प्रकाशसँ संपूर्ण मंडप देदीप्यमान भए रहल छल। मंडपमे मधुर संगीत निरंतर प्रसारित भए रहल छल। सभा मंडपक ठीक बीचमे बनाओल गेल मंचपर द्रुपद अपन आसनपर बैसल छलाह। हुनका बगलमे दृष्टदुम्न आ दहिना कात कनीके फटकी राजपुरोहित बैसल छलाह। मंडपक बीचमे ऊपर दिस बनल मत्स्य यंत्र निरंतर घुमि रहल छल। नीचाँ राखल तसलामे ओकर प्रतिबिम्ब देखाइत

छल। ओकर बगलमे पाँचटा तीर राखल छल। एकटा खूब नीकसँ सुसज्जित धनुष सेहो राखल छल। संगीतक मादक ध्वनि आ चारू कात पसरल आकर्षक परिवेश ओहिठाम उपस्थित राजालोकनिक उत्तेजनाकेँ आकाश ठेका देने छल । हुनकालोकनिक उत्साह देखैत बनैत छल। राजकुमारसभ मोछपर ताओ दए रहल छलाह। सभ गोटे अपन विजयक प्रति आश्वस्त छलाह। ओ सभ द्रौपदीक आगमनक प्रतीक्षा कए रहल छलाह। ओतए उपस्थित राजकुमारलोकनिकेँ एक-एक क्षण बिताएब मोसकिल भए रहल छलनि। होनि जे द्रौपदी अविलंब मंडपमे आबथु,देरी किएक कए रहल छथि?ओ धनुष उठओताह आ एक्के बेरमे मत्स्ययंत्रमे निरंतर घुमि रहल माछक आँखिकेँ छेदि देताह। मुदा द्रौपदीक आगमनमे देरी भए रहल छनि। राजालोकनिक धैर्य टूटि रहल छनि। केओ-केओ तँ आपसमे कानाफूसी सेहो कए रहल छथि-

"हमरा तँ लक्षण ठीक नहि लागि रहल अछि।"

"रस्तामे कैक तरहक बातसभ सुनबामे आएल छल।"

"यदि से सभ छैक तखन ई टाटक करबाक प्रयोजन? हमरालोकनिकेँ एतए बजा कए अनेरे अपमानित करबाक की औचित्य अछि?"

"अहाँसभक मोनमे व्यर्थकेँ लड्डू फुटि रहल अछि। द्रौपदी तँ अपन वर पहिनेसँ ठीक कए रखने अछि।"

जतेक मुँह ततेक तरहक बातसभ भए रहल छल। कुलमिला कए राजालोकनि बहुत तनाओमे छलाह।

ओमहर द्रौपदी कोठरीमे अपन शृंगारमे लागल छलीह। हुनकर संगीसभ मूल्यवान रत्नसभ पहिरा रहल छलनि। एहि अवसरक लेल देशक उत्कृष्ट कारीगरसँ रेशमी साड़ी बनबाओल गेल छल। तरह-तरहक इत्रसभ हुनका लगाओल गेलनि । वातावरण इत्रसभक मादक गंधसँ फटकीएसँ गमकि रहल छल। आब हुनका संगीसभ स्वयंवर मंडप दिस लए जइतथि। द्रुपद से द्रौपदीक

मंडपमे आगमनक प्रतीक्षा कए रहल छलाह। अचानक द्रौपदी सभकेँ बाहर जेबाक इसारा करैत छथि। केओ बुझिए नहि पाबि रहल अछि जे ओ की करए चाहि रहल छथि। हुनकर आदेश मानि सभ बाहर भए जाइत छथि। द्रौपदी केबाड़ बंद कए लैत छथि आ पलंगपर धराम दए खसैत छथि। बाहर सभ हुनकर प्रतीक्षा कए रहल छनि। मुदा ओ केबाड़ खोलिए नहि रहल छथि। आब की होएत? मंडपमे राजालोकनि स्वयंवरक प्रारंभ होएबाक प्रतीक्षा कए रहल छथि। मुदा द्रौपदी कोठरीसँ बाहर निकलिए नहि रहल छथि।

पलंगपर पड़ल-पड़ल द्रौपदीक ध्यान अर्जुनपर चलि जाइत छनि। जंगलमे ब्राह्मणक भेषमे हुनका अर्जुनसँ पहिल बेर भेंट भेल छलनि। ओ तखने अर्जुनक प्रति आकर्षित भए गेलथि। ई बात द्रुपदकेँ पतो लागि गेलनि। तथापि स्वयंवरक आयोजन भेल अछि। स्वयंवरमे एक सँ एक वलिष्ठ,प्रतापी राजा आएल छथि। की पता केओ आर स्वयंवरक सर्त पूर्ण कए लेथि? तखन की करतीह द्रौपदी? हुनका तँ स्वयंवरक माला विजेताक गलामे पहिराबए पड़तनि। फेर अर्जुन सहित पाण्डवलोकनि ब्राह्मणक भेषमे अज्ञातवासमे रहल छथि। की पता हुनकालोकनिकेँ स्वयंवरमे सामिल होएबाक अवसर भेटबो करतनि कि नहि? कहीं राजालोकनि विरोधमे अड़ि जेताह तखन? एही चिंतासभमे द्रौपदी परेसान रहथि कि राजा द्रुपद द्रुष्टदुम्नक संगे केबाड़ खटखटओलनि।

"केबाड़ खोलू। केबाड़ खोलू।"

हुनकर अबाज सुनि द्रौपदी तुरंत केबाड़ खोलि देलनि। हुनका देखितहि राजा द्रुपद चिचिआ उठलाह-

"ई की कए रहल छी अहाँ? हमर इज्जति माटिमे मिलि जाएत।"

"मुदा हमर जिनगीक सपना माटिमे मिलि रहल अछि से। तकर की होएत?"

“फेर ओएह बातसभ बाजि रहल छी। जखन हम अहाँकेँ कहि चुकल छी तखन हमरा बातपर अहाँकेँ विश्वास रखबाक चाही।”

“अर्जुन आ हुनकर भाएलोकनि ब्राह्मणक भेषमे छथि। पता नहि ओ सभ आबिओ रहल छथि कि नहि? यदि आबिओ जेताह तखन हुनका एहि आयोजनमे राजालोकनि सामिल होमए देथिन कि नहि?”

“अहाँ अनेरे परेसान भए रहल छी। पाण्डव पाँचो भाइ ब्राह्मणक भेषमे स्वयंवर मंडपमे आबि चुकल छथि। ओ सभ ब्राह्मणलोकनि लेल बनल मंचपर बैसल छथि। अहाँ अपने हुनकासभकेँ देखि लिअनु। तखने एहिठामसँ चलब। रहल आर बातसभ। से कृष्ण छथि ने। ओ सम्हारि लेथिन।”

द्रौपदी खिड़कीसँ मंडप दिस देखैत छथि। सचमुचकेँ पाँडवलोकनि ब्राह्मण भेषमे ओहिठाम आबि चुकल छथि। हुनकालोकनिसँ कनीके फटकी कृष्ण विराजित छथि। हुनकालोकनिकेँ देखि द्रौपदी आश्वस्त होइत छथि आ द्रुपदक संग स्वयंवर मंडप दिस बिदा होइत छथि।

१२

स्वयंवर मंडपमे द्रौपदी

द्रौपदीकेँ सभा मंडप दिस बढ़ैत देखि द्रुपद निश्चिन्त भए द्दष्टद्युम्नक संगे मंडप दिस आगू बढ़ि गेलाह। द्रौपदी अपन संगी आ परिचारिकासभक संगे क्रमशः स्वयंवर मंडप दिस आगू बढ़ि रहल छलीह। सभा मंडपक परिद्दश्य हुनका सदिखन देखाइत रहनि ताहि लेल विशेष व्यवस्था कएल गेल छल। ब्राह्मणलोकनिक हेतु बनाओल गेल प्रकोष्ठमे पांडवलोकनि विद्यमान छलाह। ठीक हुनकर सामनेमे कौरवलोकनि राजकुमारसभक लेल बनल दीर्घामे बैसल रहथि। हुनकासभक संगे कर्ण विद्यमान रहथि। द्रौपदीक ध्यान पाण्डवलोकनि पर गेलनि। ओहिठाम ओतेक लोकसभमे बैसल ओ अर्जुनकेँ ताकि लेलनि। एहि बातसँ ओ बहुत

आश्वस्त भेलीह जे अर्जुन स्वयंवरमे आबि गेल छथि। आब चिंताक कोनो बात नहि अछि। ओ स्वयंवरक सर्तक पालन करबे करताह , जयमाल हुनके गलामे पड़तनि,से सोचि द्रौपदीक आनन्द सीमा नहि छलनि। मुदा ई के छथि? कवच कुंडलसँ सुशोभित कर्ण सूर्य जकाँ फटकीएसँ चमकि रहल छलाह।अचानक कौरवक बीचमे बैसल कर्णकेँ देखि ओ अचंभित भए गेलथि। डेग आगू बढ़बासँ मना कए देलकनि। हुनका एना ठमकल देखि संगे चलि रहल सभ गोटे सेहो रुकि गेलथि। द्रौपदी हुनकासभकेँ आगू बढ़बाक संकेत करैत छथि आ स्वयं एकांतमे एकटक ओहि युवककेँ देखैत रहि जाइत छथि।

"ई के छथि?"

"ई तँ हमर मोनकेँ घिचने चलि जा रहल छथि?"

"की करू? किछु बुझा नहि रहल अछि।"

"हिनकासँ संवाद जरूरी बुझाइत अछि।"

"मुदा हम तँ एक हिसाबे अर्जुन संगे वचनवद्ध छी । ओ छथिहो सर्वोत्तम पुरुष, जिनकर पुरुषार्थक आगू सभ नरेश बहुत पाछू छथि।"

"ओ तँ ठीक छैक,मुदा स्वयंवरक आयोजनेक तात्पर्य थिक नव-नव संभावनाक ऊपर विचार करब। हमरा लगैत अछि जे ई व्यक्ति आकाशमे चमकैत सूर्य जकाँ अद्वितीय छथि,एहिठाम उपस्थित आर राजा-महाराजासभसँ एकदम फराक छथि। हिनकासँ विमर्श जरूरी अछि।"

द्रौपदी गुनधुनमे पड़ि गेलथि। ने आगू बढ़ल होनि ने पाछू। स्वयंवर रचल जा चुकल अछि। देश-विदेशसँ राजासभ आबि चुकल छथि। सभ आश लगओने छथि जे ओएह सफल हेताह। यदि आब कोनो विघटन होएत किंवा आयोजनक सर्तमे परिवर्तन कएल जाएत तँ हंगामा अवश्यंभावी थिक। भए सकैत अछि जे युद्धे शुरू भए जाए। यदि से भेल तखन हुनकर पिताक पराजय निश्चित अछि आ

निश्चित अछि हमर दुर्गति। राजालोकनि एकरा अपन घोर अपमान बुझताह आ तकर प्रतिकार स्वरुप हमर पिताकेँ दंडित करताह।-द्रौपदी सोचथि।

“से जे होउ,मुदा हम हुनकासँ एकबेर गप्प तँ करबे करबनि। आखिर ओ छथि के? की बात छैक जे ओ स्वयंवरमे आएल तँ छथि मुदा ओकर उम्मीदवार नहि बनल छथि,अन्यथा हुनकर मुकुटमे द्रुपदक देल गेल विशेष प्रतीक चमकैत रहितनि।”

आखिर द्रौपदी अंतिम अस्त्र चला देलनि। हुनकर नजरि कर्णसँ मिलैत छनि। आवाहन मंत्रक अचूक आक्रमणसँ ओ अपनाकेँ रोकि नहि सकलथि,विवश भए गेलथि।

द्रौपदीक सौंदर्यसँ कर्ण अप्रभावित नहि छलाह,रहिए नहि सकैत छलाह। कर्ण आ द्रौपदीमे आत्मिक संवाद शुरू भए गेलनि-

“क्षमा करब देबी। हम अपनेक हृदयसँ आदर करैत छी। संगे एहि स्वर्णिम अवसर देबाक लेल अहाँक कृतज्ञ छी मुदा हम विवश छी।”

“विवश?”

“हँ,हँ हम बहुत विवश छी।”

“अपनेक कहब हम नहि बुझि सकलहुँ?”

“ई स्वयंवर क्षत्रिय राजकुमारलोकनिक लेल छनि। तेँ हमरा संगे कौरवलोकनि सेहो आयल छथि।हमर परम मित्र दुर्योधन सेहो स्वयं उपस्थित छथि। हम तँ एहिठाम मात्र हुनकर संग देबए आएल छी।ईहो नीकसँ बुझि लिअ जे सूर्य भने पश्चिममे उगि जाथि,मुदा दुर्योधनकेँ हम धोखा नहि दए सकैत छिअनि। हम हुनकर छी आ हुनके रहबनि। एहि दुनिआमे केओ हमर हुनकर संग मित्रताकेँ खंडित नहि कए सकैत अछि।”

“हद भए गेल। ई स्वयंवर छैक,युद्धभूमि नहि।हम जकरा पसिंद होएबैक सएह ने वरण कएल जाएत। बिआह हमर होएत की मत्स्य यंत्रक?”

"आब ई सभ तँ अहाँ जानी आ जानथि अहाँक पिता।"

"एना किएक बजैत छी?हम तँ अहाँके ... "-द्रौपदी अपन बात पूर्ण करितथि ताहिसँ पहिने कर्ण बाजि उठलाह-

" स्वयंवरमे सामिल होएबाक लेल क्षत्रिय राजकुमार होएब जरूरी थिक।हम ने क्षत्रिय छी,ने राजकुमार ।तखन अहीं कहू जे हम एहिमे कोना सामिल भए सकब?"

"मुदा अहाँ छी के?"

"मात्र सूतपुत्र, जे नदीमे ककरो द्वारा भसिआ देल गेल छल आ संयोगसँ सूत द्वारा बँचा लेल गेल।"- कर्ण आँखि मुनि लेलाह। ओ बहुत उदास रहथि। मोने-मोन अपन दुर्भाग्यपर कानि रहल छलाह।

१३

अनुराग आ दुबिधा

कतेको माससँ राजा द्रुपद स्वयंवर आयोजनमे लागल रहथि। ओकर तैयारीमे राति-दिन एक कए देने रहथि। द्रौपदीक लेल स्वयंवरमे वरक चुनाओक मामिलामे द्रुपद स्वयं निष्पक्ष नहि रहथि। ओ सोचने रहथि जे स्वयंवर जीतबाक सर्त तेहन कठिन राखल जाए जे अर्जुन छोड़ि केओ ओकर पालन कइए नहि सकथि। मुदा अर्जुन ओहि स्वयंवरमे आबि सकताह कि नहि ताहिमे अंत-अंत धरि प्रश्न चिंह लागल रहल । राजा द्रुपद कृष्णक संपर्कमे निरंतर रहिते छलाह। संकटक स्थितिमे,कोनो प्रकारक दुबिधामे ओएह हुनकर मार्गदर्शन करथिन। एक बेर फेर राजा द्रुपद हुनके मोन पाड़लनि। हुनका स्वयंवरमे विशेष रूपसँ उपस्थित रहबाक निवेदन केलखिन। कृष्ण हुनकर आग्रहकेँ मानैत ओतए आबिओ गेल रहथि आ विशेष आसनपर विद्यमान रहथि।

स्वयंवरक आयोजनमे नव-नव उकवासभ होइत रहत तकर अनुमान स्वयं राजा द्रुपदोकेँ सेहो नहि छलनि। ओ तँ कृष्णकेँ ओतए उपस्थित देखि आश्वस्त भए गेल रहथि जे आब सभ किछु ठीके रहत। हुनकर अभिलाषा अबस्स पूर्ण हेतनि। मुदा से मोसकिल बुझा रहल छल। स्वयंवरसँ ठीक पहिने द्रौपदी स्वयं दुबिधाग्रस्त भए गेल छथि। कर्णकेँ देखलाक बाद हुनकर मोन ओझरा गेलनि। हुनका मोनसँ कर्ण हटबे नहि करथि। एक दिस कर्ण आ दोसर दिस अर्जुन आ दुनू सामनेमे उपस्थित । सोचल जा सकैत अछि जे द्रौपदीक लेल कतेक कठिन समय छलनि। हुनकर मोन जेना झूलामे झुलि रहल छलनि। कखनहु एहि पार कखनहु ओहि पार।

"कर्णमे अद्भुत आकर्षण छनि। जखनसँ हुनका देखलिअनि हम हुनके बारेमे सोचि रहल अछि।"

"कवच-कुण्डल युक्त कर्णक तेजस्विता साक्षात सूर्य सन लागि रहल छनि। ओ कदापि सूतपुत्र नहि छथि,भइए नहि सकैत छथि। हुनकर जन्मक रहस्य जरूर नुकाएल जा रहल अछि।एहिठाम उपस्थित कोनो राजकुमारसँ ओ बेसीए छथि,कम नहि। ओ स्वयंवरमे आएल छथि, हमरा पसिंद छथि। बस अपन परिचय सही-सही देथि आ काज संपन्ने बुझू। वीर पुरुष अपन परिचय पुरुषार्थसँ दैत छथि ने कि झूठ-मूठक कुलाभिमानसँ।"

"अहाँक वुद्धिभ्रष्ट भए रहल अछि द्रौपदी। अहाँ मोने-मोन अर्जुनकेँ अपन मानि चुकल छी। आब एमहर-ओमहर होएब तखन अर्जुन की कहताह?की पता ओ अपन शौर्यसँ अहाँकेँ विवश कए देथि। स्वयंवरक सर्त,मत्सय भेदन सफलतापूर्वक कए लेथि,तखन?"

दुबिधापूर्ण परिस्थितिमे द्रौपदीकेँ सदति कृष्ण मोन पड़ि जाथिन। असलमे नेनपनेसँ कृष्ण हुनकर मार्गदर्शन करैत रहलखिन। द्रुपदकेँ सेहो कृष्णपर पूर्ण विश्वास रहनि। कृष्णक प्रति हुनका अगाध श्रद्धा छलनि,अटूट विश्वास छलनि

जे जरूरति पड़लापर ओ हुनका अबस्स मदति करथिन,सभ संकटसँ उबारि देथिन। कर्ण आ अर्जुनक दुबिधामे द्रौपदीकेँ कृष्ण मोन पड़ि गेलखिन। ओ मोने-मोन कृष्णकेँ स्मरण करैत छथि।

"एहन शुभदिनमे अहाँक ई स्थिति किएक अछि कृष्णे!"

"अहाँ तँ सर्वव्यापी छी,सभ किछु जनैत छी। तखन हमरा किछु कहबाक लेल विवश किएक कए रहल छी, हे युगपुरुष कृष्ण!"

"अहाँ की चाहैत छी?"

"से अहाँकेँ बुझल नहि अछि की? घटनाक्रमसँ हम बहुत परेसान भए गेल छी, किछु सोचि नहि पाबि रहल छी।"

"किछु नियतिओपर छोड़ि दिऔक। जे होएबाक छैक से होएबे करतैक। हम अहाँ तँ मात्र माध्यम छी। भविष्य अहाँक प्रतीक्षा कए रहल अछि।"

"हे कृष्ण! अपन शब्दजालमे हमरा नहि ओझड़ाउ। हम तँ अहाँक मदति लेल कहने रही।"

"जे अहाँ चाहैत छी से तँ अहाँक पिता कइए रहल छथि। स्वयंवरक माने की भेलैक? अपने अपन वर चुनू। से अहाँकेँ अवसर भेटिए रहल अछि। आओर की चाही?"

"हमरा तँ ई स्वयंवर नाटक लागि रहल अछि, फूसि लागि रहल अछि। यदि ई सरिपहुँकेँ स्वयंवर रहैत तखन चयनक लेल एहन विचित्र नियम नहि राखल जाइत। एनामे तँ बहुत रास लोक स्वयंवेरमे सामिल होएबासँ छुटि जेताह आ जे बचताह से पता नहि केहन हेताह?हमरा पसिंदो हेताह कि नहि?जखन वर हमर पसिंदक होएबे नहि करताह तखन ओ स्वयंवर कथीक भेलैक?"

"अहाँक रुचि आ भविष्य सोचिए कए ई नियमसभ बनाओल गेल अछि।"

“मुदा एहिमे जातिक विधान किएक अछि? वीर तँ केओ भए सकैत अछि ,भने ओ क्षत्रीय होअए वा नहि।”

“हम अहाँक मनोभाव बुझि रहल छी । हम स्वयं ओतए उपस्थित रहब । अहाँ निश्चिन्त भए स्वयंवरमे चलू।”

१४

स्वयंवरमे हड़कम्प

कर्णक निराशा साफे देखा रहल छलनि। दुर्योधन हुनकर मनःस्थितिकेँ बुझलखिन। बुझितथिन कोना नहि? आखिर हुनकर अंतरंग मित्र जे छलखिन । ओ वारंबार कर्णकँ टोकैत छथिन। हुनकासँ अनेक प्रश्न करैत छथिन। मुदा कर्ण एकदम मौन सधने छथि। किछु बजबे नहि करैत छथि। की बजितथि? सभ तरहेँ सामर्थ्य संपन्न रहितहुँ ओ ओहि स्वयंवरमे सामिल होएबासँ वंचित छथि। भने ओ नहि आबि रहल छलाह। दुर्योधन दुराग्रह कए हुनका आनि लेलखिन। मुदा कर्णकेँ एहिसँ कष्टे भए रहल छनि। ओहो एहन कष्ट जे ओ अपन अभिन्न मित्रोकेँ नहि कहि पाबि रहल छथि।

“तूँ एते गुमसुम किएक छह?”-दुर्योधन कर्णकँ पुछलखिन।

“हम कहैत रहियह जे हमरा एहिठाम नहि आनह।परंतु,तूँ नहि मानलह। एहिठाम साफे बैमानी भए रहल अछि। पुरुषार्थ आ वीरतापर जातिक धुआँ मरड़ा रहल अछि। जखन से बात छलैक तँ स्वयंवर आयोजनक प्रयोजन की छल?द्रुपद हमरालोकनिसँ छल कए रहल छथि।”

कर्णक समर्थन करैत दुश्शासन बीचेमे बाजि उठलाह-“द्रुपदकेँ दंड अबस्स भेटबाक चाही जाहिसँ भविष्यमे ओ एहन गलती फेर नहि करथि,वीरलोकनिक अपमान करबाक प्रयास दोबारा नहि कए सकथि।”

"एकदम सही बाजि रहल छह तूँ। एहिमे सोचबाक की छैक? एकबेर अपन वीरता आ शक्तिक अनुभव हुनकालोकनिकैं होएबेक चाही।"

दुर्योधनकैं एतेक बजबाक देरी छल कि दुश्शासन आँखि मुनि कोनो मंत्रक उच्चारण केलनि। चारूकात भायाओन अन्हर उठि गेल,बिजलौका चमकए लागल।द्रौपदी मंचपर ठामहि छलीह ,मुदा हुनकर चारूकात बाणक देबाल ठाढ़ भए गेल। द्रुपद,द्दष्टदुम्र सहित अन्य राजा,महराजा अपन-अपन स्थानपर भयभीत छलाह,बुझेबे नहि करनि जे ई की भेल? के केलक एहन चमत्कार?

सभामण्डपमे बिरड़ो उठि गेल।हबाक गति ततेक तीव्र भए गेल छल जे द्रुपदक माथसँ मुकुट उड़िआ कए मंडपमे नाचि रहल छल। द्रुपद असहाय देखि रहल छलाह। लज्जित,विवश। सभ हँसि रहल छल।हुनका अपन मुकुट बहुत प्रिय छलनि। दुर्बल शरीरपर रत्नजड़ित भरिगर मुकुट खसि नहि जाए ताहि लेल ओकरा बेर-बेर सम्हारैत छलाह। सुतलोमे मुकुट माथेपर रहैत छलनि। एहन प्रिय वस्तु माथपरसँ हटि गेलनि आ ओ देखैत रहि गेलाह। एहिसँ दुखद आर की भए सकैत छल? आब तँ हुनको होनि जे स्वयंवरक आयोजन नहि करबाक छल। ओ तँ कृष्णक बले एतेकटा आयोजन ठाढ़ कए लेलथि,मुदा घटनाक्रम एहन रूप धए लेत से ओ नहि सोचने रहथि।

गीत-नाद बंद भए गेल। पंडालमे प्रकाश बंद कए देल गेल। मंचपर कनीके फटकी बैसल कृष्ण एहनो परिस्थितिमे हँसि रहल छलाह। मुदा अर्जुन तनतना रहल छलाह। ओ बेर-बेर युधिष्ठिर दिस देखि रहल छथि। हुनकासँ आज्ञा मांगि रहल छथि।

"अहाँक अनुमति होअए तँ हम एक्के क्षणमे सभ ठीक कए देबैक। दुश्शासनक ई दुस्साहस।"

"अगुताह नहि अर्जुन। हमरो सभक समय आओत। तखन अपन परिचय देबैक। हमरा विश्वास अछि जे ई कन्या आर ककरो नहि भए सकैत अछि।"

"मुदा दुश्शासन तँ सीमा टपि रहल छथि। हम हुनका यदि जल्दी उत्तर नहि देबनि तँ ई सभा नहि चलि सकत। सभ राजकुमार डरा कए भागि जेताह। द्रुपद स्वयं लाचार लागि रहल छथि। द्रौपदी एक हिसाबे जहलमे छथि।एहन परिस्थितिमे हम मूकदर्शक कोना रहि सकैत छी?"

"जखन कृष्ण स्वयं एहिठाम विद्यमान छथि तखन किछु चिंताक बात नहि। फेर व्यास मुनि सहित अनेक गणमान्यलोकनि सेहो एहिठाम उपस्थित छथि आ सभ किछु देखि रहल छथि। हमरा हिसाबे तँ तोरा अगुतेबाक नहि चाही,शांत रहबाक चाही। देखहक तँ जे आगू की होइत अछि।"

"एहन ने होअए जे हमसभ शांते रहि जाइ आ किछु अप्रत्याशित घटित भए जाए।"

अर्जुन एतेक बजले छलाह कि कृष्ण मंचपर ठाढ़ भेलाह।

"अहाँलोकनि अतिथि थिकहुँ आ उचित अछि जे अतिथिक मर्यादाक पालन करी। स्वयंवरक नियम कोनो आइ नहि बनल अछि। समस्त राजा ,महराजालोकनिकेँ तकर पूर्व सूचना देल गेल छनि। हम एतबे कहब जे आब सभकेँ तकर पालन करक चाही। सभ गोटे पूर्वघोषित नियमानुसारे स्वयंवर चलए देथु।"-कृष्ण बजालह।

"हमरा सभकेँ कृष्णक विचारक आदर करबाक चाही। ई युद्धक समय नहि थिक। स्वयंवरक सर्त मात्र एकटा व्यवस्था थिक। आखिर,द्रौपदीक बिआह तँ एक्के गोटेसँ हेतनि ने।हम तँ एतबे चाहलहुँ जे द्रौपदी एहि पृथ्वीक सभसँ वीर,पुरुषार्थी राजकुमारसँ बिआह करथि। तकर निर्धारण लेल स्पष्ट विधान कएल गेल अछि। मत्स्य यंत्रमे निरंतेर घुमि रहल माछक दहिन आँखिकेँ नीचाँ पानिक तसलीमे बनैत ओकर प्रतिबिंबकेँ देखि जे छेदि देताह सएह हेताह हमर जमाए। आब अहीं सभ कहू जे एहिमे कोनो दुबिधा कतए अछि। यदि से बुझना जाइत अछि तँ स्पष्ट करू। हम ओहिपर अबस्स विचार करब।"-द्रुपद बजलाह।

“से बुझलहुँ। सत्य बात इएह थिक जे एहिठाम उपस्थित सभ राजकुमार द्रौपदीक सुंदरतासँ मोहित भए गेल छथि,हुनका प्राप्त करबाक लेल किछु करबाक लेल उद्यत छथि। एहन हालतिमे ककरो दोषी कोना कहल जा सकैत छथि।”-मामा शकुनी बजलाह।

“सभ गोटे शांत होउ। स्वयंवरक प्रकृया होमए दिऔक।अपने समाधान भए जेतैक।”

“मुदा एहि स्वयंवरमे किछु ब्राह्मणलोकनि सेहो झोड़ा-झपटा लेने बैसल छथि। से किएक?”

“अहूँ मामाजी भसिआ जाइत छी। एतेक राजकुमारसँ बँचतीह द्रौपदी जे ब्राह्मण युवक किछु करताह।”-दुश्शाशन बजलाह।

“सही बात बजलाह,दुर्योधन।”-से कहि शकुनी ठहाका पारि रहल छलाह। कौरबसभ कर्ण सहित हुनकर संगे ठहाका पारए लगलाह। सौंसे मंडप हुनकरलोकनिक ठहाकासँ गुंजित भए रहल छल।

१५

द्दष्टदुम्नक घोषणा

कृष्णक हस्तक्षेप अछैत माहौल शांत नहि भए रहल छल। पाण्डवलोकनि द्रौपदीक सौंदर्यसँ ततेक मोहित भए गेल छलाह जे होनि की करी कि नहि। युधिष्ठिर जे सामान्यतः शांत रहैत छथि,अपन मर्यादाक सदिखन ध्यान रखैत छथि,आइ ओहो बहुत विचलित छथि। एक हिसाबे छटपटा रहल छथि। भीमक तँ बाते कोन? ओ तँ बस चलनि तँ बस एक बेर अपन गदा भाँजथि आ द्रौपदीकेँ उठा-पुठा कए लेने चलि जाथि। अर्जुन तँ अर्जुने छलाह। पहिनेसँ हुनका द्रौपदीक संग मोनक मिलान भए गेल छलनि। नकुल सहदेव पर्यन्त उत्तेजित

छलाह। सभ द्रौपदीकेँ एक टक देखि रहल छलाह,बेमत्त भए गेल छलाह। की करी की नहि से नहि फुरा रहल छलनि।

तकर बाद अचानक मंचसँ घोषणा भेल-

"देश-विदेशसँ आएल राजकुमारलोकनि ध्यानसँ सुनथि। स्वयंवरक आयोजन द्रुपद कन्याक लेल वरक चुनाओ करबाक लेल कएल गेल अछि ने कि युद्धक आमंत्रण देबाक लेल। एहि ठामक माहौल तँ युद्धे सन भेल जा रहल अछि। एहनमे स्वयंवरक संचालन संभव नहि अछि। अस्तु,ई सभा फिलहाल एक घंटाक लेल स्थगित कएल जा रहल अछि जाहिसँ सभ गोटे शांत होथि,आपसमे विचार करथि आ सोचथि जे स्वयंवरक शांतिपूर्ण संचालन कोना संभव होएत?"-द्दष्टदुम्न घोषणा केलथि। उपरोक्त घोषणाक बाद स्वयंवर पंडालमे उपस्थित राजा-महराजालोकनि बाहर भए गेलाह। ओ सभ सामिआनासँ बाहर राखल अनेक प्रकारक पेय सभक पिबए लगलथि,संगे आपसमे विमर्श से करथि। मुदा दुश्शासन अखनहु अनुरंजिते छलाह। ओ शांत होएबे नहि करथि। हुनका दुर्योधन एकांतमे लए गेलथि। हुनकर कानमे कहैत छथि-

"तोहर क्रोध एकदम उचित अछि। द्रुपदक की औकात छैक?ओ तँ कृष्णक बले कुदि रहल अछि। असली समस्या द्रुपद नहि अछि। असल समस्या तँ पाण्डव आ ओकरालोकनिक समर्थनमे ठाढ़ भेल अर्जुन अछि।"

"अर्जुन!अर्जुन! तोरा तँ सपनोमे अर्जुनो देखाइत रहैत छह। ओ अछि कहाँ?"

"ओ पाँचो भाए एतए आबि गेल अछि।"

"की बात करैत छह? हमरा तँ कतहु नहि देखा रहल अछि।"

"मुदा हमरा तँ जासूससभ खबरि केलक अछि जे पाण्डवसभ वारणावतमे जीवित बचि गेल अछि आ एहिसभामे कतहु नुकाएल बैसल अछि।"

"अहाँ अद्भुत खिस्सा गढ़ि लैत छी। हम कोनो आन्हर छी? हमरा तँ ओ सभ कतहु नहि देखा रहल अछि । फेर अर्जुन कोनो नुका कए रहए बला व्यक्ति नहि अछि। यदि ओ एहिठाम रहैत तखन अखन धरि चुप नहि रहैत । किछु कए गेल रहैत।द्रौपदीकेँ निचेन नहि रहए दैत ओ।"

"तोरामे इएह गड़बड़ी छह । हम कहासँ तोरा बुझेबाक प्रयास कए रहल छी। हमरा यदि आवश्यक नहि बुझाइत तखन तोरा एहिठाम अनितहुँ किएक? आब देखि रहल छहक ने।अखन की भेल अछि। आगू-आगू देखहक जे की सभ होइत अछि।"

"हमरा बुझौअलि नहि बुझाबह। हम साफ बात बुझैत छी। यदि पाण्डब आबिए जाएत तँ की हेतैक? हम एसगरे ओकरा सभकेँ देखि लेबैक। मुदा एहि ठाम तँ हाले-बेहाल अछि। पता नहि ई स्वयंवर अछि कि किछु आर। द्रुपद सन लाचार राजासँ आर की उम्मीद कएल जा सकैत छल।"

"बात एतेक आसान नहि अछि । एकरा सभक पाछू छथि कृष्ण। ओएह एकर सभक शक्ति छथि। तेँ सावधान रहबाक प्रयोजन अछि।"

"फेर ओएह बात। हम अपन सामर्थ्यपर विश्वास करैत छी।केओ रहथु,ताहिसँ की फरक पड़ैत छैक।जे हेतैक तकर सामना कएल जेतैक।"

१६

पाण्डवलोकनि मे चर्चा

स्वयंवर घंटा भरि स्थगित रहल।मुदा ओहि अवधिमे मंडपमे बैसल ब्राह्मणलोकनि कतहु नहि गेलथि। तकर मूल कारण हुनकालोकनिक आपसी विवाद छल। यद्यपि ओ सभ बहुत फुसुर-फुसर गप्प करैत छलाह,मुदा हुनकालोकनिक बीचमे एकगोटे गप्पक क्रममे रहि-रहि कए उत्तेजनामे ठाढ़ भए जाइत छल। एहि बातसँ आस-पास घुमि रहल राजा द्रुपदक जासूसलोकनिक

कान ठाढ़ भेलनि। ओ सभ हुनकालोकनिक संवाद ध्यानसँ सुनए लगलाह आ तकरा द्दष्टदुम्न धरि पहुँचाबए लगलाह।

“हमरालोकनिकेँ ब्राह्मणक भेष छोड़ि अपन मौलिक रुपमे आबि जेबाक चाही।”-भीम बजलाह।

“से किएक?यदि दुर्योधनकेँ हमर सभक पहिचान पहिने सँ भए जाएत तखन ओ सभ उच्छन्नर करबासँ पाछू नहि रहत। फेर अखन तँ हमरालोकनिकेँ कोनो राज अछि नहि। हस्तिनापुरक लेल हमसभ तँ मरि चुकल छी।पहिने अपन राज वापस ली तखन किछु आर।”-युधिष्ठिर बजलाह।

“तखन तँ हमसभ स्वयंवर जीति लेलहुँ।”

“तँ की अहाँ एहिठाम स्वयंवरमे द्रौपदीसँ बिआह करए आएल छी?”-युधिष्ठिर बजलाह।

“आर कथी लेल आएल छी? हमरा तँ द्रौपदी बहुत पसिंद अछि।”-अर्जुन बजलाह।

“हद भए गेल। पहिने युधिष्ठिरक बिआह हेतनि तखन ने छोट भाए सभक।”-भीम बजलाह।

“तँ ओएह जीति लेथु।हम कहाँ मना करैत छिअनि। मुदा एहन ने होअए जे ओ धनुष देखितहि भागि जाथि। ओतए नियम-कानून पढ़लासँ काज चलए बला नहि अछि। ओहि ठाम चाही सामर्थ्य जाहिसँ राजा द्रुपदक सर्तक पालन होअए।”-अर्जुन बजलाह। नकुल आ सहदेव हुनकालोकनिकेँ एना गप्प करैत सुनि चकित छलाह,किछु बाजि नहि रहल छलाह। मुदा ओहो सभ द्रौपदीसँ प्रभावित भए गेल छलाह। देखा चाही आब की होइत अछि।हुनकालोकनिक आपसी चर्चा जासूस सभ द्दष्टदुम्न धरि पहुँचा देलाह। मुदा ओसभ ई नहि बुझि सकलाह जे आखिर ई सभ छथि के?

घंटा भरिक बाद शङ्खनाद सुनि राजा-महाराजालोकनि स्वयंवर मंडपमे वापस आबि गेलाह।

“सुनथु द्रुपद आ सुनथु हुनकर शुभचिंतकलोकनि । ई स्वयंवर द्रुपदपुत्री द्रौपदीक बिआहक लेल आयोजित अछि। स्वयंवरक नियम पूर्वघोषित अछि। नियम ईहो बनाओल गेल अछि जे एहिमे मात्र राजकुमारे सामिल भए सकताह।तखन ई ब्राह्मणलोकनि एहिठाम किएक आएल छथि?”-स्वयंवर मंडपमे अबितहि दुश्शासन बाजि उठलाह।

“एहि स्वयंवरमे के सामिल होएत,के नहि तकर निर्णय करबामे राजा द्रुपद स्वयं सक्षम छथि। अहाँसभ एहि विषयमे अपन शक्ति व्यर्थ खर्च नहि करू।”-द्दष्टदुम्न बजलाह।

“खबरदार द्दष्टदुम्न ! बेसी एमहर-ओमहर नहि करी। साफ-साफ बाजी जे स्वयंवर मात्र एकटा छल अछि, छल। देश-विदेशक राजकुमारक संग कएल गेल महान धोखा अछि।यदि से नहि रहैत तखन इमानदारीपूर्वक काज कएल जाइत। जे केओ किन्दुरा नामक धनुषसँ ओहि चिड़ैक आँखि छेदि दैत से विजयी होइत आ तकर बिआह द्रौपदीसँ होइतनि।”-दुश्शासन बजलाह।

दुनूगोटेमे वाद-विवाद बढ़िते जा रहल छलनि। मामिला गड़बड़ाइत देखि कृष्ण स्वयं आगू आबि बजलाह-

“नियम ईहो छैक जे द्रौपदी सहमतिक बादे बिआह होएत,नियम ईहो छैक जे कोनो प्रकारक स्थितिमे राजा द्रुपदक निर्णय अंतिम हेतनि।आखिर द्रौपदीक बिआह होएबाक छनि। हुनकर बात कोना ने सुनल जेतनि। रहल ब्राह्मणक आगमनक प्रश्न तँ ई कोनो कहबाक काज नहि थिक जे ओ सभ आदरणीय छथि आ हुनकालोकनि एहि सभामे स्वागत केनाइ राजा द्रुपदक कर्तव्य छनि। यदि राजकुमारलोकनि सक्षम साबित होइत छथि तँ ओ सभ किएक किछु बाधा करथिन?प्रश्ने नहि उठैत अछि।अस्तु,हमरालोकनि शांतिपूर्ण

ढंगसँ स्वयंवरक संचालन होमए दिऐक।यदि कोनो तरहक विवाद होइत अछि तँ द्रुपदक निर्णय अंतिम मानि तकरा स्वीकार करी।”

एहि बीचमे कर्ण दुर्योधनक कानमे फुसफुसाइत छथि-

“तूँ दुश्शासनकेँ किएक ने रोकि रहल छहक? ओ अनेरे चिचिआ रहल अछि।”

“ओ तँ तोरे लेल चिंतित अछि आ प्रयास कए रहल अछि जे तूँ एहिमे सामिल भए सकह।”

“ हम भने एहिमे भाग नहि लेब,मुदा तोरा जीतैत देखि हमरा जे प्रसन्नता होएत से हमरा लेल बेसी आनन्दक बात होएत।”

“हम तँ पहिने दुश्शासने केँ आगू करबाक पक्षमे छी। यदि ई धनुष उठा सकत तकर बादे किछु आर सोचल जाएत।”-दुर्योधन बजलाह।दुर्योधनकेँ एना बजैत सुनि कर्ण बहुत दुखी भए गेलाह।

“जखन तोरा अपन शक्तिपर विश्वासे नहि छह तखन की युद्ध जीतबह?”

“तूँ परेसान नहि होअह।धैर्य राखह।हम रणनीति बना रहल छी।देखहक तँ जे की होइत अछि।”-दुर्योधन बजलाह।

ओमहर मंडपमे विद्यमान आर-आर राजकुमार सभ सेहो उत्तेजित रहथि। कृष्ण माहौल बुझि रहल छलाह आ द्रुपदकेँ इसारासँ स्वयंवर अविलंब शुरू करबाक आग्रह करैत छथि।

१७

स्वयंवरक प्रारंभ

एक घंटा स्थगनक बाद स्वयंवरक कार्यक्रम फेरसँ प्रारंभ होएबाक सूचना प्रसारित होइतहि मंडपक माहौल गरमा गेल। राजकुमारलोकनि मोने-मोन अपन-अपन कुलदेबीकेँ स्मरण केलनि। एक बेर द्रौपदीकेँ देखथि आ एक बेर

अपन मोछपर ताओ देथि। बीचमे ओ मत्स्ययंत्र अपन करतब प्रारंभ कए देने छल। ओ निरंतर वृत्ताकार नाचि रहल छल। ओकर प्रतिबिंब नीचाँ तसलामे राखल पानिमे बनि रहल छल। ओही प्रतिबिम्बकेँ देखि ऊपर घुमि रहल माछक दहिना आँखिमे निसाना साधबाक छल। किंधार धनुष राजकुमारलोकनिक प्रतीक्षा कए रहल छल ।

राजा शाल्व ,मगध नरेश जरासंध,चेदिराज शिशुपाल,सिंधुनरेश जयद्रथ,सभ बेराबेरी प्रयास केलनि,मुदा किछु नहि कए सकलाह।एक सँ एक राजकुमार अपन-अपन भाग्य अजमओलथि,मुदा व्यर्थ।हारल,थाकल,निराश अपन स्थानपर वापस आबि गेलाह।दुर्योधनक सहपर दुश्शासन सेहो आगू बढ़लथि। मुदा हाय रे भाग्य! ओहो किंधार धनुषक प्रत्यंचा नहि चढ़ा सकलाह,लक्ष्य संधान करब तँ बड़का बात होइत। जखन दुश्शासनक ई हाल भेलनि तँ दुर्योधन बुझि गेलाह जे ओहो किछु नहि कए सकताह। बहुत क्रोध आ निराशामे ओ सभ गोटे स्वयंवर मंडपसँ बाहर भए गेलाह। चारूकात निराशाक माहौल छल। राजा द्रुपद चिंतित छलाह। सोचि रहल छलाह-

“सएह कहू। की हाल भए गेल। संपूर्ण क्षत्रिय समाजमे केओ राजकुमार एहन नहि छथि जे एहि स्वयंवरक लेल निर्धारित योग्यताक अनुकूल होथि।”

ओ से बात स्पष्ट रूपसँ बाजिओ देलखिन।सोचल जा सकैत अछि जे द्रौपदी मोनपर केहन प्रभाव पड़ल हेतनि। एक सँ एक बली,पराक्रमी,पुरुषार्थी राजालोकनि असफल भए गेलाह। स्वयंवरक सर्तक पालन नहि कए सकलाह।राजकुमारक ओहि भीड़मे एकटा तेजस्वी युवक सक्षम लगैत छलाह,द्रौपदीकेँ पसिंदो रहथिन,मुदा ओ एहि परीक्षामे भाग नहि लेताह। पहिनेसँ निर्णय कए चुकल छथि। तथापि,स्वयंवर मंडपमे आएल छथि,मात्र अपन मित्र दुर्योधनक संग देबाक लेल। मुदा दुर्योधनकेँ तँ साहसो नहि भेलनि। आब की

होएत? की द्रौपदी बिना बिआहले रहि जेतीह? आ कि द्रुपद किछु आर ब्योंत करताह?

कृष्ण द्रौपदीक निराशा बुझि रहल छलखिन। ओ मोने-मोन हँसि रहल छलाह। मुदा किछु बाजि नहि रहल छलाह। एतबे मे ब्राह्मणक भेषमे अर्जुन आगू अएलाह।ओ बेस नमगर-पोरगर छलाह। हुनकर मुखमंडल चमकि रहल छलनि। हुनकर एक-एक डेग आत्मविश्वाससँ भरल छलनि।ओ सोझे धनुषकेँ उठओलनि आ मोने-मोन मंत्र जाप केलनि। तकर बाद नीचाँ पानिमे देखैत तुरंत तीर चला देलाह जे सोझे माछक आँखिमे जा कए लागल।एहि तरहेँ प्रथमे प्रयासमे ओ स्वयंवरक सर्त जीति लेलनि। आब तँ चारूकात हाहाकार मचि गेल। राजकुमारलोकनिक उत्साह मंद पड़ि गेलनि। ईर्ष्यावश ओहिमे सँ किछु गोटे अंट-संट बाजि रहल छलाह।

“ई तँ समस्त क्षत्रिय समाजक घोर अपमान अछि। जानि-बूझि कए किछु एहन षड़यंत्र कएल गेल अछि जे केओ एहि धनुषकेँ उठा नहि सकल।ई ब्राह्मण पहिनेसँ सिखाओल-पढ़ाएल लागि रहल छथि। हिनका कतएसँ आएल शस्त्रक एतेक ज्ञान।सभ धोखा अछि,छल अछि। एकर प्रतिकार होएबाक चाही। राजा द्रुपदकेँ मृत्युदण्ड देबाक चाही।”

माहौलकेँ गरमाएल देखि भीम अर्जुन लग पहुँचलाह। पाछू लागल युधिष्ठिर,नकुल,सहदेव सेहो पहुँचि गेलाह।भीमक वलिष्ठ भुजा देखि द्रौपदी सहित हुनकर पूरा परिवार चिंतामे पड़ि गेलथि। ई सभ ब्राह्मण तँ कतहुसँ नहि लागि रहल छथि।

“आब सोच-विचारक समय नहि अछि।द्रौपदी वरमाल अर्जुनकेँ पहिराबथि।”-कृष्ण बजलाह।द्रौपदी कृष्णक बातक अनुसरण करैत वरमाल अर्जुनक गलामे राखि देलनि। से सभ तँ भेल। मुदा द्रुपदक चिंता तँ आर बढ़ि गेलनि। ई दरिद्र ब्राह्मणलोकनि हमर बेटीक पालन-पोषण कोना कए

सकताह?हिनका सभकेँ हमरे ओहिठाम रहि जेबाक चाहिअनि। हमसभ सुख सुविधा एतहि कए देबनि। हमर बेटी हिनका सभक संगे रने-बने कतए बौआइत रहतीह।"

ब्राह्मण भेषमे अर्जुन जखने लक्ष्य छेदि दैत छथि कि मंडपमे हाहाकार मचि गेल। कहाँ प्रसन्नता होइत,विजेताक जयगान कएल जाइत आ कहाँ ई माहौल? तकर कारण छल क्षत्रियलोकनिक ईर्ष्या।ओ सभ अपने हारि गेलाह तकर दुख कम छलनि,मुदा एकटा ब्राह्मण जीति गेल तकर दुख बेसी छलनि। जातीय अहंकार चरमपर छल। ओमहर द्रुपद,दृष्टदुम्न आ हुनकर संपूर्ण परिवार चुप छल। द्रुपद सोचथि-

"केओ तँ स्वयंवरक सर्त पूर्ण कए सकलथि? आखिर द्रौपदीक बिआह भए जेतनि। कम सँ कम एतबा तँ निश्चित अछि जे ओ ब्राह्मण महान धनुर्धर छथि,वीर छथि।एहन व्यक्ति गरीब रहिए नहि सकैत अछि। ओ अपन पुरुषार्थसँ जीवनमे अपन स्थान बना लेताह,एहिमे कोनो सक नहि होएबाक चाही।"

लक्ष्य छेदि देलाक बाद ब्राह्मण युवक आगू बढ़ैत छथि। हुनका संगे आएल आर चारिटा ब्राह्मण कनीके फटकी ठाढ़ भेल छथि। ओ सभ हुनका तेना ने घेरि लेने छथिन जे केओ आन हुनकालोकनिक बीचमे प्रवेश नहि कए सकैत अछि।अपना भरि सभ ओ विजेताक रक्षा कए रहल छलाह ।द्रौपदीक हाथमे वरमाल अछि। ओ जयमाल लेने धीरे-धीरे ब्राह्मण युवक दिस बढ़ैत छथि। हुनका देखि द्रौपदीकेँ भीतरसँ प्रसन्नता भए रहल छनि।ओ एकटक हुनका देखने जा रहल छथि। नीचाँ सँ ऊपर धरि अंग-अंग ओ निरीक्षण करैत छथि। फेर विचारमग्न भए जाइत छथि-

"ई तँ ओएह छथि।"

जयमाल पहिरबैत काल द्रौपदी अर्जुनकेँ नीकसँ चिन्हि गेलखिन। हुनकर प्रसन्नताक तँ अंते नहि छल। ओ कहैत छथि-

“पिताश्री अहाँ व्यर्थ चिंता कए रहल छी। जखन नियति हमरा हिनकालोकनिक संग बान्हिए देलक अछि तँ एकरा सहर्ष स्वीकार करबाक चाही। आब व्यर्थ विमर्शक औचित्य की अछि?हमरा हिनका संगे जेबाक आज्ञा दिअ। हमर जीवन आब हिनके संगे जुड़ि चुकल अछि।हम सहर्ष हिनका संगे जेबाक लेल प्रस्तुत छी।”

द्रौपदी पाण्डवलोकनिक संगे बिदा छथि। हुनका बिदा होएबासँ पूर्व द्रुपद आ हुनकर परिवार ठोह पारि कए कानि रहल छलाह। द्रुपद पिताक कर्तव्यक निर्वाह करैत द्रौपदीकेँ अपना भरि मूल्यवान गहना,साड़ी,गृहस्थीक लेल आवश्यक सामान सहित नौकर-चाकर देलखिन। मुदा से सभ अर्जुनकेँ पसिंद नहि भेलनि।

“हमसभ गरीब वनबासी ब्राह्मण थिकहुँ।हमरासभक लेल एहि मूल्यवान वस्तुसभक कोन काज?केओ कतहु छिनि लेत। जानोपर आफद भए सकैत अछि। हमरासभपर दया करू। कृपया एकरा सभकेँ वापस राखि लिअ।”

“अहाँसभ संतोषी थिकहुँ से बहुत प्रसन्नताक बात। मुदा अपन बेटीकेँ बिदा करैत काल किछु देबाक परंपरा छैक।बेटीकेँ खाली हाथ बिदा नहि कएल जाइत छैक। हमरोसभक किछु मनोरथ अछि। तँ अपनेसभ एकरा अन्यथा नहि ली।हमर सभक उपहार सहर्ष स्वीकार करी।”

मुदा पाण्डवलोकनि अड़ि गेलाह। हुनकासभकेँ किछु नहि चाही।हारि कए द्रुपद सभ किछु वापस राखि लेलथि।बस द्रौपदीक देहक गहना आ वस्त्रटा छोड़ि देलखिन।बहुत मोसकिलसँ अर्जुन से मानलथि।

जखन द्रौपदी स्वयं सभ किछु स्वीकार कए लेलनि तखन द्रुपद वा दृष्टदुम्न की करितथि?मुदा ओ आग्रह केलखिन जे ब्राह्मणलोकनि द्रौपदीकेँ हुनकर देल गेल रथ सँ लए जाथि।

“आखिर हमर बेटी राजकुमारी छथि।सुखसँ पालल गेल छथि। ओ हिनकासभक संगे पाथरपर पैरे कोना चलि सकतीह?”

"अहाँ एहि बातसभक चिंता नहि करू। जखन द्रौपदी हमरा संगे रहतीह तखन हुनका हमरसभक सुख-दुखकेँ संपूर्णतासँ स्वीकार करहि पड़तनि।"

आखिर द्रुपद द्रौपदीकेँ पाण्डवलोकनिक संगे बिदा कए देलखिन। ओ सभ द्रौपदीक संगे आगू बढ़ैत छथि। मुदा,मुख्यद्वारिपर पहुँचतहि स्वयंवरमे हारि गेल राजकुमारसभ विरोधमे ठाढ़ भए जाइत छथि।आगू जेबाक रस्ता बंद अछि।आब की होएत?

१८

राजकुमारलोकनिक विरोध

अर्जुन अपन चारू भाए आ द्रौपदीक संगे पैरे-पैरे बिदा भेलाह। ओ सभ मुख्द्वारि धरि पहुँचले छलाह कि चारूकातसँ राजकुमारसभ हुनका घेरि लेलखिन।ओ सभ बहुत आक्रमक रहथि आ विचित्र तरहसँ चिकरए-भोकरए लगलथि। किछु गोटे तँ अपन शस्त्र-अस्त्र सेहो संधान कए लेलनि। हुनकालोकनिक नेतृत्व केओ आर नहि,अपितु दुर्योधन स्वयं कए रहल छलाह।

"हे ब्राह्मण! ध्यानसँ सुनह। तूँ असली मानेमे एहि स्वयंवरक विजेता नहि छह,खलनायक छह।एतेक राजकुमारकेँ ठकि कए चलि जेबह से संभव नहि अछि। अस्तु,यदि अपन कल्याण चाहैत छह तँ द्रौपदीक लौलमे नहि पड़ह। तुरंत द्रौपदीकेँ सुपुर्द करह आ अपन जान बचा कए एहिठामसँ खसकि जाह। बढ़िआँ होएत जे कतहु नदीक कातमे जा कए ध्यान लगाबह आ द्रौपदीक सौंदर्यक चिंतन करह। ई सभ द्रुपदक चालि थिक । ओ जानि -बुझि कए मसीन तेना ने फँसा देने छल जे केओ ओकरा चला नहि सकल। नहि तँ एतेक शूर-वीर सभ व्यर्थ थोड़े भए जइतथि ?जखन ओकरा इच्छा भेलैक,मसीनकेँ ठीक कए देलक।"

ओकर बातकेँ दुश्शासन सहित अनेक राजकुमार समर्थन केलनि आ अपन-अपन हथिआर चलेबाक लेल प्रस्तुत भए गेलथि।आश्चर्यक बात जे ओहि

समयमे कर्ण ओतए उपस्थित नहि रहथि। ताबतमे ब्राह्मणमे सँ वलिष्ठ लगैत एक गोटे चिचिआ उठलाह। लगलैक जेना कोनो पहाड़ खसि रहल होइक।

"हे घमंडी राजकुमारलोकनि! लगैत अछि तोरासभक एहि पृथ्वीपर समय पूर्ण भए गेल अछि। अन्यथा एहि दुष्ट व्यक्तिक कहलापर एहिठाम उपद्रव नहि करितह। एकर समय तँ विपरीत छैहे। तूँ सभ अपन जान बचाबह,नहि तँ अंतिम यात्राक लेल तैयार भए जाह।" से बाजि ओ असगरे चारि-पाँचटा राजकुमारकेँ भरि पाँज पकड़लनि आ जुमा कए फेकि देलनि। ओ सभ चिड़ै जकाँ हहाइत-पताइत आकाशमे उड़ि रहल छलाह। अर्जुन अपन दहिना हाथकेँ ऊपर केलनि। हुनकर हाथमे चमकैत-दमकैत एकटा हथिआर आबि गेलनि। ओ ओकरा जोरसँ फेकैत छथि। आहि रे बा ! देखिते-देखिते राजकुमारसभ चारूकातसँ तीरसँ घेरा गेलाह। हुनकरसभक हाथ से बान्हि देल गेल छलनि। हुनकासभकेँ एही हालतिमे छोड़ि ब्राह्मणसभ द्रौपदीक संगे प्रस्थान कए गेलाह।

द्रौपदी हुनकालोकनिक संगे आब बहुत आश्वस्त छलीह। ब्राह्मणक भेषमे पाँचो पाण्डव चारूकातसँ द्रौपदीकेँ सुरक्षा प्रदान केने छलाह। बीचमे द्रौपदी आ ठीक हुनका आगू अर्जुन छलाह। बीच-बीचमे युधिष्ठिर द्रौपदी दिस हुलकैत छलाह। भीम कोनो बहन्ने द्रौपदीसँ किछु गप्प कए लेबए चाहैत छलाह। नकुल आ सहदेव बहुत संयत रहथि,किछु बाजथि नहि।मुदा द्रौपदी हुनकोसभक मोन आकर्षित तँ कइए लेने रहथिन। ओ सभ चुपचाप द्रौपदीक पाछू-पाछू चलि रहल छलाह।पाण्डवलोकनिक संगे चलि रहल द्रौपदीक शोभा देखैत बनैत छल।लगैत छल जेना प्रातःकालीन सूर्य भगवानक छटा सगतरि पसरि रहल होअए। द्रौपदीक सौंदर्य आकाशमे सूर्यक तेज जकाँ चमकि रहल छलनि। सभ दिन राजसी ठाठमे पालल गेलि द्रौपदी पाण्डवलोकनिक संगे पैरे-पैरे चलि रहल छलीह। हुनकर सभ दिन राजसी ठाठमे पालन-पोषण भेलनि ,आब एहि हालमे चलि रहल छथि। कतेक काल बरदास करितथि?हुनकर पैर सौंसे छिला गेलनि।हालति एहन खराप

भए गेलनि जे आब एक्को डेग चलब मोसकिल छनि। तथापि ओ प्रसन्न छलीह।अर्जुन सन वीर,तेजस्वी आ बलशाली पुरुषसँ बिआह हेतनि,से सोचिए कए ओ रस्ताक सभ कष्ट बिसरने छलीह।

द्रौपदी अर्जुनकेँ चिन्हि गेल रहथिन। हुनका पहिनेसँ जनितो रहथिन। जंगलमे भेंट भेलाक बाद हुनकासभकेँ आपसी लगाओ सेहो भए गेल रहनि। मुदा द्रौपदी ई रहस्य आन पाण्डवलोकनिकेँ नहि बुझए देबए चाहलथि। अर्जुन सेहो एहि लेल सावधान छलाह। ओना ई स्वयंवर सभ तरहेँ सफल छल। राजा द्रुपदकेँ चिर अभिलाषा पूर्ण भेल छलनि। अर्जुन सन वीर हुनकर जमाए बनि गेल रहनि।मुदा ओ सभ अखन छलाह ब्राह्मणक भेषमे।कोनो तरहक सुख-सुविधा हुनका सभ लग नहि रहनि।द्रौपदी पाण्डवलोकनिक संगे हुनकर आवासपर जा रहल छलीह।रस्तामे काँट-पाथरसभ हुनकर पैरमे गरि रहल छलनि। तथापि,ओ किछु बजैत नहि छलीह। ओ नहि चाहथि जे शुरूएमे हुनकर पति हुनकासँ असंतुष्ट भए जाथि। जेना-तेना साँझ पड़ैत ओ सभ अपन आवास लग पहुँचए बला रहथि कि पांडवलोकनिमे जोरसँ झगड़ा शुरू भए गेलनि। असलमे रस्ता भरि हुनकासभमे गुन-धुन चलिए रहल छलनि। बीच-बीचमे भीम टोकारा दैत रहैत छल।

“सएह कहू। अखन धरि युधिष्ठिर अविवाहित छथि। तखन अर्जुन कोना बिआह कए लेताह। ठीक छैक , ओ स्वयंवर जीतलाह,मुदा हमहूँसभ तँ ओहिमे सहयोगी रहिअनि। यदि हम ओकरासभकेँ नहि डरबितिऐक तँ असगर अर्जुन की कए लितथि?ओ तँ चारू कातसँ घेरा गेल छलाह।हमसभ जानपर खेल गेलहुँ।तखन जा कए मामिला सलटल।”

भीम एहिना अड़बड़ बजैत रहलाह ।तकर प्रतिवाद युधिष्ठिरो नहि केलथिन। नकुल आ सहदेव सेहो मौन समर्थन कए रहल छलाह। असलमे सभ भाए द्रौपदीसँ मोहित भए गेल छलाह। एक-दोसरसँ उपराउज कए रहल छलाह।

द्रौपदी ई बात बुझि रहल छलीह। ओ अत्यन्त प्रतिभाशाली छलीह। लोकक मोनकेँ बुझबाक,गुनवाक हुनकामे अद्भुत शक्ति छलनि। आश्चर्यक बात जे अर्जुन किछु नहि बाजथि। चुपचाप सभ किछु सुनि रहल छलाह। एहि बातसँ द्रौपदी बहुत चिंतित रहथि।

"स्वयंवर जीतलाह अर्जुन। हम वरमाल पहिरओलिअनि अर्जुनकेँ। आब ई विवादक की औचित्य थिक? यदि अर्जुन विआह योग्य नहि छलाह वा युधिष्ठिरक बिआह पहिने होएबाक छलनि तखन ओएह ने स्वयंवरमे भाग लितथि। मुदा,से तँ ओ केलनि नहि। भेल हेतनि जे हारि जाएब। ताहि समयमे तँ सभ गोटे अर्जुनकेँ आगू कए देलखिन। आब आगू-पाछू सोचबाक कोन औचित्य अछि?"

-द्रौपदी मोने-मोन सोचि रहल छलीह। जेना-जेना पाण्डवलोकनि अपन आवासक लगीच आबि रहल छलाह तेना-तेना हुनकालोकनिक आपसी झंझटि बढ़िते जा रहल छलनि।घर लग पहुँचैत काल धरि हल्ला ततेक जोर होमए लागल जे कुंती डरा गेलीह,हड़बड़ा कए बाहर भेलीह। ओ अपन पुत्रसभक संगे एकटा सुंदरीकेँ देखि चकित छलीह। हुनका बुझबामे देरी नहि भेलनि जे इएह स्त्री हुनकासभक बीचमे वैमनस्यताक कारण अछि।

पाण्डवलोकनिक कुटीमे किछु सुविधा नहि छल। जेना-तेना सभ एकटा खाटक ओरिआन केने छलाह। माता कुंती ओहिपर सुतैत छलखिन। पाँचो भाए जमीनपर पटिआ ओछा कए सुति रहल छलाह। मुदा आब द्रौपदी आबि गेल छलखिन। मात्र एकटा कोठरी,एकटा चौकी आ एकटा पटिआ आ रहनाहर सात गोटे।पाण्डवलोकनिक आवास पहुँचैत-पहुँचैत द्रौपदीक हालति बहुत खराप भए गेल रहनि। हुनका ठाढ़ नहि भेल होनि। भीम हुनका एना बेहोस होइत देखि चिकरि उठलाह-

"माते! जल्दीसँ एक लोटा पानि आनू।"

"ई तँ भीमक अबाज लागि रहल अछि। मुदा ओ एना परेसान किएक अछि?"-कुंती सोचलीह। ओ फेर ध्यानसँ हुनकर अबाज सुनैत छथि। ताधरि तँ ओ सभ केबाड़ लग ठाढ़ रहथि। कुंती तुरंत एक लोटा पानि लेने पहुँचलीह। एक हिसाबे ओ सगुन भेल। कुंती हुनकालोकनिक स्वागत भरल जलक लोटासँ केलनि। द्रौपदीक सामने कुंती अचक्के आबि गेल रहथि।

"एतेक सुंदरि कनिआँ कतएसँ आएलि?"-ओ तुरंत पुछैत छथि।

"पहिने हिनका पानि पिआउ।रस्तामे पैरे चलैत-चलैत थाकि गेल छथि।"-भीम बजलाह।

द्रौपदी पानि पिबैत छथि।फेर चारूकात देखैत छथि। सामनेमे कुंतीकेँ देखि कनी विस्मितो छथि।

"ई के छथि?"

"ई हमर माताश्री छथि। हिनका प्रणाम करिअनु।"

द्रौपदी हुनका प्रणाम करैत छथि। ओ कुंतीकेँ देखिते रहि जाइत छथि।

"सएह कहू। एहन प्रतापी राजाक पत्नी एहि हालतिमे?" -द्रौपदी मोने मोन सोचैत छथि।

कुंतीकेँ बुझेबे नहि करनि जे पाँचो भाए एना किएक कए रहल छथि? थोड़ काल तँ मुरुत जकाँ ठाढ़ रहि गेलीह। किछु नहि फुरानि । हुनकर जीवनक एकमात्र लक्ष्य अपन संतानलोकनिक रक्षा करब छलनि। हुनकालोकनिक आपसी एकता बनल रहनि ताहि लेल किछु करबाक लेल तैयार रहथि। मुदा आइ हुनकर सभ स्वप्न भंग भए रहल छलनि। हुनका भेलनि जे इएह स्त्री एकर सभक कलहक कारण थिक। फेर हुनका अपनो मोनमे तँ हीनग्रंथि रहबे करनि। ओ स्वयं अनेक पुरुषक संयोगसँ चारिटा संतान उत्पन्न केलनि। परिस्थितिवश,एकटा संतानकेँ तँ स्वीकारो नहि कए सकलनि। भेलनि जे इएह अवसर अछि। एकाएक बाजि उठलीह-

"अहाँसभ अनेरे आपसमे लड़ि रहल छी। आपसमे एकता बनओने रहू। एक सँ एक अवसर भेटत।ओना स्वयंवर तँ अर्जुन जीतलनि अछि,तँ एहि स्त्रीसँ बिआह करबाक अधिकार तँ हुनके छनि।मुदा ई बात आपसी विवादक कारण बनए से कतहुसँ नीक नहि होएत। अस्तु,हमरा हिसाबे पाँचो भाए हिनकासँ बिआह कए लिअ।"

कुंतीक से बजितहि युधिष्ठिर आ भीम प्रसन्न भए गेलाह। नकुल आ सहदेव सेहो खुस रहथि। मुदा अर्जुन विषादसँ भरि गेलथि।तथापि किछु बाजि नहि सकलथि। थोड़ेकालक लेल ओहिठाम मौन पसरि गेल। ओहि मौनकेँ भंग केलक द्रौपदीक प्रतिरोध। ओ भयाओन अबाज केलनि। ओ जोर-सोरसँ चिकरि रहल छलीह।लागि रहल छल जेना सौंसे जंगल ओहि अबाजकेँ सुनलक। मुदा कुंती लेल धनसन।ओ सदा-सर्वदा जकाँ शांत छलीह।

१९

कुंतीक निर्णयक द्रौपदीक विरोध

एखन धरि द्रौपदी चुप रहथि। मुदा, कुंतीक मुँहे ओ जखन पाँचो भाएसँ बिआह करबाक प्रस्ताव सुनलनि तँ देहमे आगि लागि गेलनि।ओ चिचिआ उठलीह आ उत्तेजनामे बड़ी काल धरि बजिते रहि गेलीह-

"जे अपने जेहन रहैत अछि तकरा सौंसे दुनिआ तेहने देखाइत छैक। अहाँ अपने अनेक पुरुष संगे संतान उत्पन्न केलहुँ। मानि लेलहुँ जे अहाँकेँ मजबूरी छल,संतान चाहैत छल तेँ ई रस्ता अपने लेलहुँ। मुदा ताहि लेल तँ एक्केटा संतान पर्याप्त छल। बेर-बेर आवाहन मंत्रक प्रयोगक की औचित्य छल?आब अहाँकेँ जे मोनमे हीन भावना गरल अछि तकर निवारण हमर जिनगी बरबाद करए चाहि रहल छी। ई कतहुसँ न्यायपूर्ण नहि कहल जा सकैत अछि।अहाँ जे केलहुँ आ कए रहल छी से अहाँ जानी,मुदा हमरा ऊपर अपन विचार थोपबाक प्रयास नहि करी।

अहाँकेँ बुझल होएबाक चाही जे हम द्रुपद नरेशक पुत्री थिकहुँ,कोनो मामुली स्त्री नहि थिकहुँ। हमर अपमान करबाक परिणाम अहाँ सोचि सकैत छी।"

"खबरदार द्रौपदी! जे बाजि लेलहुँ से बाजि लेलहुँ।यदि आब एक्को शब्द आगू बाजब तखन परिणाम भोगबाक लेल तैयार रहू। हमरालोकनिक जिनगीमे माएक अतिरिक्त अछिए की? कुंती एहन माता छथि जे अपन संतानक लेल सभ किछु त्याग कए चुकल छथि। हमरेसभक लेल ओ रने-बने बौआ रहल छथि। अन्यथा ओहो कोनो राजमहलमे निचेनसँ समय बिता सकैत छलीह।"-अर्जुन बजलाह।

"सही कहि रहल छथि अर्जुन। हमरालोकनि अपन माताक विरुद्ध किछु नहि सुनि सकैत छी। मानलहुँ जे स्वयंवरमे अर्जुन आगू छलाह,मुदा हमहूँसभ चुप नहि रही,अपना भरि जान लगा देने रही। जखन राजकुमारसभ अर्जुनकेँ घेरि लेलकनि,द्रौपदीकेँ बलपूर्वक छिनि लेबए चाहलकनि, तखन तँ हमसभ भाए मिलि कए ओकरासभकेँ पाछू केलहुँ। अन्यथा की होइत से के कहि सकैत अछि?"-भीम बजलाह।

"तँ अहाँ की चाहैत छी? हम मनुक्ख छी ,जानबर नहि छी। अहीं कहू जे हम पाँचगोटेसँ केना बिआह कए सकैत छी?यदि अर्जुन चाहथि तखन ओ युधिष्ठिर वा कोनो आर भाएक पक्षमे पाछू हटि जाथि। हम ओकरेसँ बिआह कए लेब। ओहो एहि लेल जे हम अपन पिताकेँ परेसान नहि करए चाहैत छी।यदि बिना बिआहकेँ हम एहिठामसँ वापस भए जाइत छी तखन हमर पिता बहुत दुखी भए जेताह। ततबे नहि, भए सकैत अछि जे क्षत्रिय राजालोकनि फेरसँ युद्ध उन्माद पसारि देथि। अस्तु,अहाँलोकनि आपसमे निर्णय करू आ से जल्दी करू। अन्यथा हमरो धैर्यक सीमा अछि। कहीं किछु अनर्थ ने भए जाए।"-द्रौपदी बजलीह।

द्रौपदी जखन स्वयंवर विजेता अर्जुन आ हुनकर भाएसभक संगे बिदा भेलीह तँ स्वपनोमे एहन परिस्थितिक कल्पना नहि केने छलीह।हुनकर पिता सभ

किछु बरदास केलनि आ स्वयंवरक परिणामक मान्यता दैत ब्राह्मणक संगे द्रौपदीकेँ बिदा कए देलनि। मुदा हुनकर दुलारी बेटीक संगे एहन जुलुम होएत से के सोचि सकैत छल?

द्रौपदीकेँ ब्राह्मणलोकनिक संगे बिदाइक समय दृष्टदुम्न सेहो बहुत चिंतित रहथि। ओ हुनकर पछोड़ करैत -करैत ब्राह्मणलोकनिक डेरा धरि आबि गेलथि आ नुका कए चुपचाप हुनकरसभक आपसी चर्चा सुनैत रहलाह। ओ एहि बातसँ बहुत प्रसन्न भेलाह जे हुनकर बहिनक भावी पति केओ आर नहि अपितु अर्जुन छथि। मुदा कुन्तीक प्रस्तावसँ ओ बहुत अनुरंजित भेलथि। पंचाल वापस जा कए ओ सभ वृतान्त द्रुपदकेँ कहलखिन।

एमहर द्रौपदी बहुत व्याकुल रहथि। किछु फुरेबे नहि करनि जे की कएल जाए। पाण्डवलोकनिक विवाद बढ़िते जा रहल छलनि। आखिर ओ कृष्णकेँ स्मरण केलथि। कृष्ण तुरंत ओहिठाम उपस्थित भए गेलखिन।

“कृष्णे! की भेल? बहुत परेसान लागि रहल छी।” हुनका देखितहि द्रौपदी ठोह पारि कए कानए लगलीह।

पाण्डवलोकनिक आपसी विवाद बढ़िते जा रहल छलनि। पाण्डवलोकनिकेँ आपसमे विवाद करैत देखि कृष्ण हँसि देलाह। ओ कहैत छथि-

“अहाँसभ एना किएक लड़ि रहल छी? एनामे अहाँसभ आगूक युद्ध कोना जिति सकब?”

“द्रौपदीकेँ कारण झंझटि भए रहल अछि।”-भीम बजलाह।

“एहिमे झंझटिक कोन बात छैक। माताश्री तँ ठीके कहि रहल छथि। अहाँ पाँचो भाए द्रौपदीसँ बिआह कए लिअ।एहिसँ आपसी एकता बनल रहत।”

“मुदा द्रुपद की कहताह?”

“हम हुनका मना लेबनि। अहाँसभ अपनामे तँ सामंजस्य करू।”

"कृष्ण सही कहि रहल छथि। हमहूँ सएह कहलिअनि। मुदा द्रौपदीक सहमति बिना आगू कोना बढ़ल जाएत?"-कुंती बजलीह।

२०

द्रौपदीक पाँचो पाण्डवसँ बिआह

पाण्डवलोकनिक आपसी संघर्ष थमि गेल। आइ कतेक कालक बाद युधिष्ठिर प्रसन्न छलाह। भीमोक तामस कम भए गेल छलनि। अर्जुन अबाक,गंभीर छलाह। ओ मोने-मोन कृष्णक परामर्शकेँ स्वीकार कए लेने छलाह। नकुल,सहदेव तँ बिना कोनो विवादमे पड़नहि लाभान्वित भए रहल छलाह। कुंती एहि लेल संतुष्ट लागि रहल छलीह जे हुनकर पुत्रसभक आपसी कलह थमि गेल छलनि। ओ सभ आर बेसी एकतासँ रहि सकताह,से प्रबल संभावना लागि रहल छल। एहि घटनाक्रमसँ अखनहु केओ दुखी छलीह तँ द्रौपदी।कृष्णपर हुनका बहुत विश्वास रहनि। वर्तमान परिस्थितिसँ अत्यन्त दुखी भेलाक बादे ओ कृष्णकेँ स्मरण केने छलीह। ओ आबिओ गेलखिन। मुदा हुनकर निर्णय द्रौपदीक हृदयकेँ आर चोट पहुँचा रहल छलनि।

"एहनो कतहु भेलैक अछि? एकटा पुरुषकेँ अनेक पत्नी तँ होइत रहल अछि,सुनबामे अबैत अछि। मुदा एकटा स्त्रीक एक्के संगे पाँच-पाँचटा पति। छीआ!छीआ! । हमरा तँ स्वयंसँ घृणा भए रहल अछि। कोना हम पाँचोकेँ एकदृष्टिसँ देखि सकबनि?कोना ओ सभ हमरा अपन-अपन स्त्री मानि एक्के संगे प्रणय निवेदन करताह? हम किनकर बात मानि किनका विरोध करबनि वा किनका मना कए सकबनि। नियति हमरा एहन हालतिमे किएक पहुँचा रहल छथि?"

"हम अहाँक दुबिधा बुझि रहल छी। सामान्य स्त्रीक लेल ई बात जरूर अनरगल कहल जाइत। मुदा अहाँ तँ इतिहास निर्माता थिकहुँ। समस्त आर्यावर्त अहाँक एहि त्यागक कथाकेँ जुग-जुग धरि मोन राखत।निश्चय अहाँकेँ एहिसँ

व्यक्तिगत परेसानी होअए ,मुदा ई समयक जरुरति अछि। अखन आपसी संघर्षक औचित्य नहि अछि। हमरासभकेँ सभ किछु बिसरि एकतावद्ध भए शत्रुपर प्रहार करबाक अछि। कहबाक प्रयोजन नहि अछि जे राजा द्रुपदक सहयोग बहुत मुल्यवान साबित होएत।रहल बिआहक मर्यादा आ तदजन्य सामंजस्यक बात,से पाण्डवलोकनि आपसी सहमतिसँ निर्धारित कए सकैत छथि।"-कृष्ण बजलाह।

कृष्णक वारंबार कहलापर द्रौपदी मानि गेलीह।

"जे अपनेक आज्ञा। हम तँ अहाँसँ बेसी नहि सोचि सकैत छी।मुदा एहन बिआहमे व्यवहारिक समस्या अएबे करत। तकर की निदान होएत? हम एसगरि ककरा-ककरा प्रसन्न कए सकब। एक गोटे प्रसन्न हेताह तँ चारि गोटेकेँ तामस भए सकैत छनि। एहि समस्याक की समाधान होएत?"-द्रौपदी बजलीह।

एतबहिमे व्यास मुनि कतहुसँ प्रकट भए गेलाह। हुनका देखितहि ओहिठाम उपस्थित लोकसभमे नव आशाक संचार भए गेलनि। ओ सभ हुनका सादर प्रणाम केलखिन । केओ किछु कहितथि ताहिसँ पहिने ओ बाजि उठलाह-

"द्रौपदी अहाँ कृष्णक परामर्श मानि बहुत नीक काज कए रहल छी। भारतवर्ष अहाँक एहि उपकारक लेल सर्वदा ऋणी रहत।रहल एहि बिआहसँ निर्मित व्यवहारिक समस्या । से समाधान हम कए दैत छी। एक-एक वर्ष धरि बेरा-बेरी पाँचो पाण्डव अहाँक पति रहताह। ओहि अवधिमे शेष चारि पाण्डव अहाँक संगे भाएक पत्नी माने भौजी जकाँ व्यवहार करताह। ओहि अवधिमे चारूगोटे मे सँ केओ अहाँक शयनकक्षमे नहि जेताह। जे केओ ओहि नियमक उल्लंघन करताह से बारह वर्ष धरि वनवासमे रहताह।ततबे नहि। एकवर्षक अवधि समाप्तिक बाद जखन अपन दोसर पतिक संग रहतीह तखन ओ फेरसँ कौमार्य प्राप्त कए लेतीह।"

व्यासक वचन कालजयी छल,अटल छल। ककरो साहस नहि रहैक जे ओकर खिलाफ किछु बाजि सकैत। बजबो के करैत? युधिष्ठिरक लालसा तुरंत

पूर्ण हेतनि। भीम तकर बादे लाभान्वित हेताह। रहि गेला अर्जुन ,से स्पष्ट रूपसँ किछु नहि बाजि पाबि रहल छलाह। हुनका लेल ज्येष्ठ भ्राताक सम्मान सभसँ उपर छलनि। कृष्ण आ व्यासक परामर्श कोनो आदेशसँ ऊपर छलनि। निश्चित रूपसँ ओ सभ हिनकालोकनिक शुभचिंतक छलखिन। हुनकासभकेँ भविष्यक ज्ञान छलनि। ओ सभ जनैत छलाह जे वर्तमान परिस्थिति स्थायी भइए नहि सकैत अछि। पाण्डवलोकनि अपन अधिकार लेल प्रयास करबे करताह आ कौरब तकर विरोधमे जे किछु कए सकताह से करबे करताह। तँ हिनकालोकनिक आपसी एकता बहुत जरूरी अछि। द्रौपदी संग पाँचो पाण्डवक बिआह हिनकालोकनिक आपसी एकताक लेल बहुत जरूरी अछि।

आखिर पाँचो पाण्डवक द्रौपदीक संगे विधिवत बिआह होएव निर्धारित भेल।

२१

द्रुपदक चिंता आ तकर निदान

दृष्टदुम्न सभटा समाचार अपन पिता द्रुपदकेँ कहलखिन।द्रुपद एहि बातसँ बहुत दुखी छलाह जे हुनकर बेटी द्रौपदीक बिआह पाँचगोटे सँ हेतनि। ओ एहि प्रस्तावक बहुत विरोध केलनि।

“एहनो कहीं भेलैक अछि? स्वयंवर जितलनि एकगोटे आ बिआह करताह पाँच गोटे । ई तँ स्वयंवरक सर्तक स्पष्ट उल्लंघन होएत। फेर एकटा पति जीवित अछैत केओ स्त्री दोसर,तेसर पतिक संगे केना बिआह करत?केना अपन जीबन चलाओत?केना ओकर संतानक पिताक निर्धारण होएत?हम तँ एहन समस्याक कल्पना सपनोमे नहि केने रही। सोचने रही जे देश-विदेशक राजकुमारसभ स्वयंवरमे भाग लेताह आ सभसँ वीर आ पुरुषार्थी राजकुमारसँ

द्रौपदीक बिआह हेतनि। मुदा ई की भए रहल अछि? हम द्रौपदी संग एहन जुलुम कदापि नहि होमए देबैक,चाहे एकर परिणाम जे होइक।”

“आब हमरा अहाँक हाथमे किछु नहि अछि।हमसभ यदि विरोध करबो करब तँ उल्टे परेसानीमे पड़ि जाएब। द्रौपदीकेँ जे होएबाक छनि से तँ होएबे करतनि।”

“से किएक?”

“अहाँक संगे दिक्कतिए इएह अछि। अहाँ ककरो बात सुनबे नहि करैत छिऐक। कहि रहल छी जे हम अपना कानसँ सभ बात सुनलहुँ अछि। तकर बादे ओहिठामसँ भागल-भागल अहाँ लग पहुँचलहुँ अछि।”

“तूँ की सभ देखलहक?की सभ सुनलहक से साफ-साफ कहह।”

“एक्के बात कतेक बेर कहूँ। कहि तँ रहल छी जे द्रौपदीक बिआह पाँचो पाण्डवसँ हेतनि। व्यास मुनि आ स्वयं भगवान कृष्णक उपस्थितिमे कुन्ती ई प्रस्ताव रखलनि आ से सभ गोटे समर्थन केलनि।”

“आ द्रौपदी?की ओहो एहि प्रस्तावकेँ मानि लेलनि?की ओ एहि व्यवस्थासँ सहमत छथि?”

“हुनका हाथमे आब छनिहे की?यदि ओ एहि बिआहकेँ विरोध करतीह तखन अहाँक लेल महान संकट उत्पन्न भए सकैत अछि।”

“हमरा लेल की संकट होएत? हम जहिना छी तहिना रहब।”

“असंभव। एक दिस पाण्डवलोकनि तमसा जेताह। दोसर दिस स्वयंवरक निर्णयसँ अप्रसन्न राजकुमारलोकनिकेँ विरोध करबाक फेर अवसर भेटि जेतनि। अहाँ कतबो वीर होइ मुदा छी तँ बूढ़े। फेर एतेक गोटेक तामस असगरे कोना सहि सकब? तेँ बढ़िआँ होएत जे कृष्ण आ व्यासक बात मानि द्रौपदीक बिआह पाँचो पाण्डवसँ कए देल जानि।जे होएबेक छैक से होउक। हमसभ किएक ने एहि घटनाकेँ एकटा अवसरमे बदलि ली?यदि पाण्डव सन

बलशाली आ वीर योद्धा हमरालोकनिक कुटुम्ब होइत छथि तखन अपनसभक राज्य सभ तरहेँ सुरक्षित रहत। ककरो साहस नहि हेतैक जे पांचाल दिस टेढ़ आँखि देखा सकए।”

द्रुपद आ दृष्टदुम्नक आपसी विचार-विमर्श चलिए रहल छलनि कि एतबे मे कृष्ण ओतए उपस्थित भए गेलाह। कृष्णकेँ आएल देखि द्रुपद गदगद रहथि।

“आउ,आउ। अहाँ बहुत सही समयपर आबि गेलहुँ।”

“से की?”

“हम अहाँकेँ की कहब? अह स्वयं सभ किछु जनैत छी। आगू की होमए बला अछि सेहो जनैत छी। तेँ अखन जे परिस्थिति अछि ताहिमे अहाँक आएब बहुत माने रखैत अछि।”

“हम अहाँक निहितार्थ बुझि रहल छी। हमरालोकनिकेँ ई नहि बिसरबाक चाही जे समय बहुत बलवान होइत अछि। हमसभ नियतिक अधीन छी। अपन काज करैत चली, फलक चिंता कदापि नहि करी।”

“तखन अहीं कहू जे हमसभ की करी?”

“जे भए रहल अछि सएह होएबाक छल,से होएबे करत।हम सभ व्यर्थ माथा-पच्ची नहि करी। द्रौपदीक बिआह पाण्डव पाँचो भाएसँ सहर्ष कए दिअनि।”

“मुदा से हेतनि केना?”

“व्यास सेहो आबि रहल छथि। ओ तरीका निकालि देलनि अछि। पाँचो भाएक बिआह बेरा-बेरी एकदिनका बाद हेतनि। द्रौपदी नित्य स्वतः कौमार्य प्राप्त कए लेतीह ,से व्यासक वरदान छनि।”

सचमुचकेँ थोड़बे कालमे व्यास मुनि सेहो आबि गेलाह। ओ कृष्णक परामर्शकेँ सर्वथा उचित कहलनि।

“द्रौपदी महान स्त्री थिकीह। भारतवर्षक भविष्यकेँ ओ प्रभावित करतीह। ई बिआह तकरे तैयारी अछि। द्रुपद अहाँ शुभ-शुभ कए एहि यज्ञकेँ संपन्न करू।”

कृष्ण आ व्यासक बात मानि द्रुपद द्रौपदीक पाँचो पाण्डवसँ बिआहक तैयारीमे लागि गेलाह।

२२

बिआहक विधि-विधान

पांचाल नरेश द्रुपदक ओहिठाम आइ उत्सवक माहौल छल। पाँचो पाण्डवलोकनि अपन माता कुन्तीक संगे विशेष रूपसँ बनाओल गेल अतिथिगृहमे आबि गेल छलाह। धौम्य ऋषि पुरोहितक काज करबाक लेल तैयार छलाह। रसनचौकीक मधुर ध्वनिसँ समस्त वातावरण आनन्दमय छल। सहरमे अनेक तोरण द्वारि बनाओल गेल छल। ओहि द्वारिसभमे बहुत सुंदर सजाबटि कएल गेल छल। राजा द्रुपद आ हुनकर परिवारक लोकसभ विशेष प्रकारक मंचपर विद्यमान छलाह। द्रौपदी बीचमे सजल-धजल बैसल छलीह।सामनेमे राखल गेल सताधिक कुर्सीपर नगरक प्रतिष्ठित लोकसभ बैसि गेल छलाह।

“आब देरी कथी लेल भए रहल अछि?”

सभक मोनमे एतबे प्रश्न छलैक।एतबे मे कृष्ण,बलरामक संगे सदल-बल बिआह मण्डपमे पहुँचलाह। राजा द्रुपद स्वयं मुख्यद्वारिपर सँ अरिआति कए हुनकासभकेँ अनलखिन आ अपना बगलमे सभसँ उच्च आसनपर बैसओलखिन। हुनका अबितहि ओहिठाम उपस्थित लोकसभ एकस्वरमे बाजि उठलाह-

“कृष्ण भगवानक जय!”

बिआह मण्डपमे कृष्णक आगमनक पश्चात विद्वानलोकनि वेदक ऋचासभक पाठ प्रारंभ केलनि। मंगलाचरण गाओल गेल। भगवतीक गीत सेहो गाओल गेल। तकर बाद कृष्ण घोषणा केलनि-

“एहिठाम उपस्थित महानुभावलोकनिक द्रौपदीक बिआहक सुअवसरपर स्वागत अछि।आइ एकटा अभूतपूर्व अवसर थिक। आइए आगामी

हजारों साल धरि घटित होमए बला भविष्यक आधारशिला राखल जाएत। भविष्यमे जे किछु होमए बला अछि तकर नायक पाण्डवलोकनि हेताह। हिनकासभक आपसी एकताक बिना भारतक भविष्यक उज्ज्वल निर्माण संभव नहि अछि। तेँ नियंताक आदेशकेँ सिरोधार्य करैत द्रौपदीक बिआह पाँचो पाण्डवसँ हेतनि। अहाँ पुछि सकैत छी जे से केना हेतनि? ई आ ओ। मुदा हमसभ सभ प्रश्नपर गंभीरतासँ विचार केलहुँ अछि।आब तकर निर्णयक कार्यान्वयन दिस बढ़ि रहल छी। निर्णय ई भेल अछि जे आइ सभसँ पहिने द्रौपदीक बिआह ज्येष्ठ पाण्डव युधिष्ठिरसँ हेतनि। काल्हि भीम सँ,तकर बाद अर्जुनसँ ,तहिना नकुल आ सहदेवसँ एक-एक दिनक बाद बिआह हेतनि। अस्तु ,ई बिआह कार्यक्रम पाँच दिन धरि चलत। ताहि लेल पर्याप्त ओरिआन कएल गेल अछि। अहाँसभ एहि अवसरक फएदा उठाउ। सभ गोटे प्रसन्नतापूर्वक एहि आयोजनमे सामिल होउ आ वर-कनिआँकेँ आशीर्वाद दिअनु।”

ओहिठाम उपस्थित राजा ,महराजा सहित नगरक गणमान्यलोकनि कृष्णक उद्घोषणाक करतलध्वनिसँ स्वागत केलनि। तकर बाद धौम्य ऋषि मंत्रोच्चार प्रारंभ केलनि। युधिष्ठिर सजल-धजल बिआहक लेल बनाओल गेल विशेष मंडपमे बैसि गेलथि। सामनेमे शेष चारू भाए बैसल रहथि। हुनकालोकनिक माता कुंती सेहो दहिना कात बैसल छलीह। हुनकर प्रसन्नताक तँ अंते नहि छल। ओ एहि बातसँ आश्वस्त छलीह जे आखिर द्रौपदीक सौंदर्यसँ पाण्डवलोकनिक एकताक मार्ग निकलि सकल। आब ओ सभ आर बेसी ताकतिसँ शत्रुक सामना कए सकताह।

बिआह मण्डपमे बैसल युधिष्ठिरक शोभा देखैत बनैत छल।राजा द्रुपदक द्वारा देल गेल अनेक प्रकारक आभूषण आ वस्त्र पहिरने ओ आइ अद्भुत सुंदर लागि रहल छलाह। हुनका भीतर प्रसन्नता छलनि। होनि जे कखन बिआहक बिधि समाप्त होएत जे ओ एकांतमे द्रौपदीसँ भेंट करताह । ओहि जल्दीमे ओ कैक बेर

गलत-सलत मंत्रोच्चार कए देथि। जखन धौम्य ऋषि टोकथिन तँ हुनकर भक टूटनि।

"जा ई की बजा गेल?"-से सोचि ओ लजा जाथि। एक बेर सामने बैसल द्रौपदीकेँ देखथि आ एकबेर धौम्य ऋषि दिस। एही दुबिधामे हुनका गलती भए जानि। द्रौपदी सेहो बहुत उत्साहित रहथि। विनम्र आ विद्वान युधिष्ठिरक व्यवहारसँ ओ बहुत प्रभावित रहथि। ओ बेर-बेर घोघे तरसँ हुनका देखबाक प्रयास करथि।आब हुनका सचमुचकेँ बिआहक आनन्द आबि रहल छलनि। ओहो एहन बिआह जे पाँच दिन धरि होइत रहत ,सेहो भिन्न-भिन्न पुरुषसँ।

बिआह मण्डपमे सामनेमे बैसल चारू पाण्डवलोकनि निरंतर द्रौपदी दिस देखैत रहैत छलाह। ओ सभ अपन-अपन बिआहक कल्पनामे तल्लीन छलाह। मुदा अर्जुन चिंतामग्न छलाह। किछु बाजि नहि रहल छलाह।

"आइ हमरे संगे द्रौपदीक बिआह होइतनि।हमर हुनकापर एकाधिकार रहैत। किएक ने? हमही द्रौपदीकेँ स्वयंवरमे जीतने छलहुँ। जे सभ बरिआती जइतथि से स्वयं वर बनि गेल छथि। ई तँ बड़का अन्याय भेल। हमर संगे आ द्रौपदीओक संगे। अफसोचक बात अछि जे हम एहि निर्णयक विरोध नहि कए सकलहुँ,अपितु चुप रहि अपन मौन समर्थन केलहुँ। हमरा तँ मजबुरी छल, सामनेमे युधिष्ठिर सन जेठ भाए छलाह,कुंती सन माता छलीह,कृष्ण आ व्यास पर्यन्त अपन मत देने छलाह। मुदा द्रौपदी तँ विरोध कए सकैत छलीह। यदि ओ एक बेर मना कए दितथि तखन हमरे संग हुनकर बिआह होइतनि। मुदा ओ से किएक करितथि? लगैत अछि ओहो हमर भाइलोकनिक गुण आ सौंदर्यसँ मोहित भए गेल रहथि। हुनका तँ अनेक प्रकारक पुरुष संगे आनन्द मनएबाक अवसर भेटतनि। भने ओ चुप रहि अपन एहि स्थितिकेँ स्वीकृति देलनि।"-ओ इएह सभ सोचैत छलीह कि धौम्य ऋषि बाजि उठलाह-

"बिआह संपन्न भेल। आब हिनकालोकनिकेँ दूर्वाक्षत देल जेतनि।"

द्रुपद सहित श्रेष्ठलोकनि वर-कनिआँकेँ दूर्वाक्षत देलनि। बिआहक बिधि संपन्न भेल। युधिष्ठिर बहुत व्यग्रतासँ एहि क्षणक प्रतीक्षा कए रहल छलाह। विशेष रूपसँ सजल रथपर सबार युधिष्ठिर आ द्रौपदी तुरंत रंग महल दिस बढ़ि गेलथि। बिआह मण्डपमे आजुक लेल पटाक्षेप भए गेल।

२३

आक्रोश

साँझक समय छल।पांचाल नरेश द्रुपदक राजधानीसँ दसकोस फटकी महादेव मंदिरपर कीर्तन भए रहल छल। ओहिमे लगपासक सेकड़ों लोकसभ सामिल छलाह। भजन-कीर्तनक कार्यक्रम घंटो चलैत रहल।आगन्तुकलोकनि बहुत आनन्दमे छलाह। रहि-रहि हे कृष्ण!हे कृष्ण! बाजि रहल छलाह। बीच-बीचेमे केओ-केओ कीर्तनक पाँति दोहरबैत नृत्य सेहो करए लगैत छलाह।लोकसभ उत्साहमे रहि-रहि कए थपड़ी बजबैत रहैत छलाह।कीर्तन समाप्त भेल।प्रसाद बाँटल गेल। तकर बाद लोकसभ आपसमे गप्प-सप्प करैत अपन -अपन घर वापस बिदा भेलाह। ओही समयमे किछुगोटे पांचालसँ आबि रहल छलाह। मंदिर लग लोकसभकेँ जमा भेल देखि ओहोसभ रुकि गेलाह।उत्सुकतावश पुछलखिन-

“की बात छैक?अहाँसभ एतेक रातिमे कतएसँ आबि रहल छी?”

“हमसभ पांचाल नरेशक कन्या द्रुपदक बिआहमे गेल रही। मुदा... ।”

“मुदा की?कोनो गड़बड़ी भेलैक की? अहाँसभ बीचेमे वापस किएक भए गेलहुँ?”

“कोना ने वापस होइतहुँ? जे नहि होएबाक चाही,जे कहिओ नहि सोचने रही, सएह भए रहल छल। राजा स्वयं जखन अनुचित काज करत तखन प्रजा की करत?लोक मर्यादाक पालन कोना होएत? जकरा जे मोन हेतैक से करत।

वातावरणक कुप्रभावसँ नीको लोक बरबाद भए जाएत।सातु संगे घुनो पिसाइते अछि?”

“साफ-साफ किएक ने बजैत छी?हमसभ एतेक पेंच नहि बुझै छिऐक।”

“अहाँसभ तँ तेना बाजि रहल छी जेना किछु बुझले नहि होअए। कतेक दिनसँ द्रौपदीक बिआहक तैयारी चलि रहल छल। गाम-गाम घुमि-घुमि ई समाचार राजाक दूतसभ दए चुकल छथि। सभ गामक प्रतिनिधिसभ ओहिमे आमंत्रित कएल गेल छथि।तखन अहाँसभ एना किएक बाजि रहल छी?जेना किछु बुझले नहि होअए?”

“अर्जुन द्वारा स्वयंवर जीति लेलाक बाद द्रौपदीक बिआह हुनकासँ होएबाक छनि,ई जनतब ककरा नहि छैक।एहिमे आश्चर्य करबाक की बात छैक से नहि बुझलहुँ?”

“ओएह तँ बात छैक। यदि अर्जुनक बिआह द्रौपदीसँ होइतनि तखन तँ कोनो बात नहि छल।हमहूँसभ प्रसन्न रहितहुँ,उत्सव मनबितहुँ।मुदा तेहन-तेहन बातसभ सुनबामे आएल जे बजितो लाज भए रहल अछि।”

“से की?”

“हमसभ ओहि बिआहमे सामिल होएबाक लेल बहुत उत्साहसँ गेल रही। मुदा ओहिठाम गेलाक बाद पता लागल जे द्रौपदीक बिआह मात्र स्वयंवरमे विजेता,अर्जुनेटा सँ नहि,अपितु पांचो भाएसँ हेतनि। पहिने तँ एहि बातमे विश्वास नहि भेल। मुदा जखन बिआह मण्डपमे समस्त राजा,महराजाक सामनेमे कृष्ण स्वयं तकर घोषणा केलनि तखन नहि रहल गेल।हमसभ ओहिठामसँ उठि गेलहुँ। की करितहुँ,की देखितहुँ ,अहीं कहू?”

“ओ! एहन बात छलैक।ई तँ हद भए गेल। एकटा कन्याक बिआह पांचगोटेसँ होएत?छीआ!छीआ! कृष्ण एहन बिआहक अनुमति किएक देलनि?ई तँ स्त्रीक घोर अपमान थिक,ओहो द्रौपदी सन गुणी आ सुंदरि कन्याक जकरा लेल

एतेक पैघ स्वयंवरक आयोजन भेल,जाहिमे देश-विदेशक अनेक प्रतिभाशाली राजकुमारलोकनि भाग लेलनि। ओहिमे सँ केओ द्रौपदीसँ बिआह कए अपनाकेँ भाग्यवान बुझितथि। मुदा ई की भेल? एकरे कहैत छैक भाग्यक खेल।"

"सभसँ आश्चर्यक बात तँ ई अछि जे कृष्णो एकर समर्थन केलनि।"

"समर्थन? ओ तँ एहि बिआहक पृष्ठभूमि रचलनि । ओएह छथि एकर सूत्रधार।"

"मुदा ओ एना किएक केलनि?ओ तँ महान छथि,सर्वज्ञ छथि। तखन एना?"

"हुनकर कहब छनि जे एहि घटनामे भारतक भविष्य निहित अछि। पाण्डवलोकनिक कल्याण एहीमे छनि।"

"की कहल जा सकैत अछि?"

एहि तरहेँ गप्प-सप्प करैत ओ सभ अपन-अपन गाम दिस बढ़ि गेलाह।

ओमहर युधिष्ठिर द्रौपदीक संग बिआहक बाद प्रथम भेंटक आनन्द उठा रहल छलाह।कखन भोर भए गेलैक से पता नहि लगलनि।द्रौपदी अन्हरोखे उठि कए चलि गेल रहथि। हुनका अगिला बिआहक तैयारी करबाक रहनि। भोरेसँ अनेक प्रकारक विधि-विधानसभ शुरू भए गेल। भीम नहा-सोना कए तैयार भए गेल रहथि। पंडितलोकनि हुनकर कल्याण लेल पूजाक अनुष्ठानमे लागि गेल छलाह। द्रुपद आ हुनकर परिवारक लोकसभ सेहो कार्यक्रमक सफल संचालन लेल तत्पर भए रहल छलाह। साँझ होइते भीमसँ द्रौपदीक बिआहक कार्यक्रम प्रारंभ भेल। आइ विशेष दर्शकदीर्घामे युधिष्ठिर सहित,अर्जुन,नकुल,सहदेव हुनकर माता कुंती सेहो विद्यमान रहथि।

भीमक उत्साहक वर्णन नहि छल। ओ भोरे-भोर चुपचाप पर्याप्त मात्रामे मधुर ,फल आ मेवा खा लेने रहथि जाहिसँ बिआह काल धरि ओ निश्चिन्त रहि सकथि। तथापि जखन धौम्य ऋषि मंत्रोच्चार करए लगलाह तखने हुनका बड़ी

जोरसँ भूख लागि गेलनि। भूख सहबाक हुनका आदति नहि रहनि। ओ रहि-रहि कए एमहर-ओमहर ताकि रहल छलाह।हुनकर ई अवस्था देखि युधिष्ठिरकेँ बुझा गेलनि जे भीम भोजन करबाक लेल छटपटा रहल छथि। ओ भीम लग जा कए फुसफुसेलाह-

"हद भए गेल। अखनो तोरा पेटे देखा रहल छह।कनी काल धैर्य राखह।"

हुनकर बात सुनि भीम सकपका गेलाह। आखिर जेना-तेना बिआह संपन्न भेल। द्रौपदी बहुत थाकि गेल रहथि। तथापि बिआहक अगिला कार्यक्रमक लेल हुनका रथपर भीम संगे विशेष भवनमे पठा देल गेलनि।भीम द्रौपदी संग बहुत प्रसन्न रहथि।द्रौपदी शुरूमे गुमसुम छलीह। मुदा भीमक अनुराग देखि ओ बहुत प्रभावित भेलथि। हाल ई भए गेल जे भीम हटबे नहि करथि। भोर भए गेल छल। द्रौपदीक अगिला दिनक कार्यक्रम शुरू करबाक लेल तगादा आबि रहल छलनि। बहुत मोसकिलसँ ओ बाहर भए सकलीह। हुनकर संगीसभ बाहर केबाड़ लग हुनकर प्रतीक्षा कए रहल छलनि।थाकल-झमारल द्रौपदी हुनकासभक संगे आगू बढ़ि गेलीह।

२४

बिआहसँ पहिने अर्जुनक चिंता

आइ भोरे सँ अर्जुन बहुत शांत छथि।उठि-सुठि ओ अपन प्रिय मित्र कृष्णक ध्यान केलनि। फेर वारणावतमे घटल घटनाक ध्यान केलथि। ओहिसँ पूर्व हस्तिनापुरमे घटित पाण्डवलोकनिक संगे अन्यायपूर्ण घटनासभ मोन पड़ैत गेलनि।माता कुंतीक चिंता आ हुनकर अपन संतानसभक लेल कएल जा रहल त्याग ध्यानमे अएलनि।

"एनामे हमसभ कतेक दिन जीवित रहि सकब। हस्तिनापुरक मर्यादा पुरुष भीष्मक अछैत हमरालोकनिक जीवनपर एहन आघात भेल। धन्य कही

विदुर काकाकेँ जे हमसभ बचि गेलहुँ अन्यथा सभ गोटे छाउर भए गेल रहितहुँ।हमसभ तकर बाद नुकाएल फिरि रहल छी। माता कुंती बहुत डरि गेल छथि। मुदा एना कतेक दिन चलत?हमसभ अधिकारहीन भए कतेक दिन जीबि सकब?दुर्योधन सुधरत नहि।ओ हमरासभपर अनेक प्रकारसँ आक्रमण करिते रहत। कारण ओकर उद्येश्य हमरासभकेँ बरबाद करब थिक। ओकर हीन भावना छथि। ओ भविष्य देखि रहल छथि। हमरालोकनिकेँ यदि अपन आस्तित्व बँचेबाक अछि तँ आइ ने काल्हि कौरब संगे युद्ध करहि पड़त। तकरे ध्यानमे रखैत कृष्ण द्रौपदीक पाँचो पाण्डवसँ बिआहक समर्थन केलनि।युद्धमे विजयक लेल कखन-के कतए सक्रिय भए जाएत तकर कोन ठेकान?अस्तु,कृष्ण सही सोचि रहल छथि। आपसी एकता जरूरी अछि,मजगूत समर्थक होएब जरूरी अछि।

से सभ तँ ठीक। मुदा द्रौपदीक सोचिऔक।हुनकर कोन गलती छनि। एकटा राजकुमारी जे सभ तरहेँ सुयोग्य अछि,जकर सौंदर्य आ प्रतिभा सौंसे दुनिआँकेँ प्रभावित केने अछि तिनका हमरालोकनि एहि हालमे पहुँचा देलिअनि अछि। पछिला दू दिनमे ओ दूटा पुरुष संगे बिआह कए चुकल छथि। आइ तेसर दिन थिक।आइ हमरा संगे हुनकर बिआह निर्धारित छनि। बात एतहि नहि रुकत। एकर बादो दूटा आर पुरुषकेँ ओ बिआहल जेतीह। ई बिआह नहि अछि,अपितु हमरालोकनिक आपसी संघर्ष रोकबाक लेल कएल गेल समझौता अछि। धिक्कार अछि हमरा।हमही द्रौपदीकेँ धोखा देलिअनि।धोखा? हँ,हँ धोखा नहि तँ आर की? हमही हुनका स्वयंवरमे जीतलिअनि। हमरे ओ जयमाल पहिरओलनि। बादमे हमर आर भाएलोकनिकेँ लोभ भए गेलनि।हमर कर्तव्य छल जे हुनकालोकनिकेँ बुझबितिअनि। नहि तँ अपन शौर्यसँ शांत कए दितिअनि। पतिक रूपमे हमर ई धर्म छल। मुदा हम से नहि कए सकलहुँ।अपितु,अपन भाएलोकनिक मुँह देखैत रहि गेलहुँ। तकर की माने भेल?की द्रौपदी हमर ई अपराध क्षमा कए

सकतीह?की ओ हमर दुबिधाग्रस्त व्यक्तित्वकेँ हृदयसँ आदर कए सकतीह?कदापि नहि।”

चिंतामग्न अर्जुन अपन कोठरीसँ निकलिए नहि रहल छलाह। बाहर लोकसभ हुनकर प्रतीक्षा कए रहल छलाह। पंडितलोकनि मंगलाचरण गेबाक लेल प्रस्तुत छलाह।हुनकर राजकीय परिधान बनि कए तैयार छल।अनेक प्रकारक सुगंधित तेलसभ स्नानगृहमे राखल छल। बिआहक समयमे अर्जुनक व्यक्तित्वसँ मेल खाइत वस्त्रक चुनाओ द्रुपद स्वयं केने छलाह। मुदा ओ बाहर हेताह तखन ने किछु? आखिर ई समाचार कृष्ण धरि पहुँचलनि। ओ अर्जुनक दुबिधा बुझि रहल छलाह। ओ तुरंत अर्जुनक कोठरी लग पहुँचि गेलाह। कोठरी बंद छल। ओ हल्लुके सँ केबाड़ खटखटबैत छथि। अर्जुन तुरंत बुझि गेलाह।

“ई तँ कृष्ण लागि रहल छथि। लगैत अछि ओहो चिंतामे पड़ि गेल छथि।”

अर्जुन केबाड़ खोलैत छथि। सामनेमे कृष्णकेँ देखि बाजि उठलाह-

“अहाँ किएक कष्ट केलहुँ?हम तँ आबिए रहल छलहुँ। असलमे जखनसँ उठलहुँ ,लगैत अछि जेना विचारक समुद्रमे दहा रहल छी। मोन स्थिर होइते नहि अछि।सभ किछु जनितहुँ वारंबार ओएहसभ सोचाइत अछि।स्वयंवर कालक समयक प्रफुल्लित द्रौपदी मोन पड़ि जाइत छथि।की सोचने रही आ की भए रहल अछि?हमरा लगैत अछि जे एहिसभक लेल हमही जिम्मेबार छी। द्रौपदीक रक्षा करब हमर कर्तव्य छल। हम से नहि कए सकलहुँ।”-से बाजि अर्जुनक आँखिसँ नोर खसि पड़लनि।हुनकर ई स्थिति देखि कृष्ण बाजि उठलाह-

“तोहर मनःस्थिति हम बुझि रहल छी। ई तोहर भ्रम छह जे तूँ द्रौपदीक रक्षा कए सकैत छह,किंवा ई तोहर व्यक्तिगत धर्म छलह। जे समय आबए बला अछि ताहिमे द्रौपदीक रक्षा तूँ के कहए,सभ पाण्डव मिलिओ कए कए सकबह की नहि से नहि कहल जा सकैत अछि।अस्तु,व्यर्थ चिंतनसँ बाँचह। ई तोरा सन वीरकेँ

शोभा नहि दैत अछि। तोहर ई कोनो अंतिम दुबिधा नहि अछि। अखन बहुत किछु होमए बला अछि।”

“ई सभ कहि अहाँ हमरा आर डरा देलहुँ। अहीं कहू जे हम की करू?”

“जे आइ करबाक अछि से करह। आगूक चिंता छोड़ि आजुक द्रौपदीक संग बिआहक कार्यक्रमकेँ सफल करह।”

“अपनेक आज्ञा शिरोधार्य अछि।”-से कहि अर्जुन कृष्णक पाछू-पाछू कोठरीसँ बाहर निकलि गेलाह।

२५

बिआह कार्यक्रमक तेसर दिन

आइ द्रौपदी बिआह कार्यक्रमक तेसर दिन अछि।अखन धरि सभ किछु ठीक चलि रहल छल। मुदा आजुक भोरे शुरू भेल खटपटसँ। अर्जुन जे एहि समस्त घटनाक्रमक केन्द्र विंदु छथि,जे वस्तुतः स्वयंवरमे विजयी भेलथि, आइ अपना कोठरीमे पड़ल-पड़ल विचारमग्न छलाह। बाहर चारूकात हंगामा भए रहल छल। अर्जुन कहाँ गेलाह?ओ बाहर किएक नहि आबि रहल छथि?की हुनका ई बिआह पसिंद नहि छनि?की कोनो नव उकबा भए गेल? बात कृष्ण धरि पहुँचल।ओ दौड़ल-दौड़ल अर्जुन लग पहुँचैत छथि।पता नहि केना अर्जुनकेँ हुनकर आगमनक जनतब भए गेलनि? ओ पहिने सँ केबाड़ खोलि कए हुनकर स्वागत लेल ठाढ़ छलाह। कृष्णकेँ देखितहि ओ बाजि उठलाह-

“सएह कहू। अहाँकेँ अनेरे परेसान कए देलक।हम तँ आबिए रहल छलहुँ।”

“कोनो बात नहि।हमरा-अहाँमे की अन्तर अछि?हम तँ एहिठाम आएले छी अहीं लेल। सभ किछु नीकसँ संपन्न भए जाइ,बस एतबे लक्ष्य अछि।”

"हमर अहोभाग्य थिक जे अपने सन मित्र भेटल।"-कृष्ण संगे गप्प-सप्प करैत अर्जुन आगू बढ़लाह।

अर्जुन आजुक बिआह कार्यक्रम लेल सजि-धजि रहल छलाह। अतिथिलोकनि सेहो नित्यकर्मक बाद जलखै कए रहल छलाह। एतबे मे मुख्यद्वारि लग हल्ला भेल। हल्ला सुनि कए प्रहरीलोकनि सुरक्षाप्रभारीक संगे मुख्यद्वारिकेँ घेरि लेलनि।

"ई सभ छथि के?"

"हिनकालोकनिक प्रमुख मांग की छनि?"

"की हिनका सभकेँ जेठरैयतसभ परेसान केलखिन?"

ओहिठाम उपस्थित लोकसभ अनेक प्रकारक अनुमान लगा रहल छलाह।ताबतमे मुख्यद्वारि लग आर लोकसभ आबि गेल छल। केओ दौड़ि कए द्रुपदकेँ समाद देलकनि।समदिआसभकेँ परेसान देखि ओ पुछलखिन-

"ओ सभ छथि के आ की चाहैत छथि?"

"ओ सभ लगपासक गामसँ आएल अहाँक प्रजा छथि।हुनकासभकेँ अहाँकेँ किछु कहबाक छनि।"

"ई कोनो समय छैक अड़बड़ करबाक?हमसभ द्रौपदीक बिआहमे लागल छी। एहि समयमे आर काजसभ नहि कएल जा सकैत अछि।"

से सभ गप्प-सप्प करैत ओ मुख्यद्वारिपर पहुँचि जाइत छथि। ओहिठाम उपस्थित लोकसभसँ पुछलखिन-

"आइ शुभदिनमे अहाँसभ हंगामा किएक कए रहल छी?"

"हमसभ द्रौपदीक पाँचटा पुरुषसँ बिआहक विषयमे गप्प करबाक लेल आएल छी।"

"अहाँसभकेँ से करबाक कोनो अधिकार नहि अछि।द्रौपदीक बिआहक निर्णय अत्यन्त स्पष्टता आ पारदर्शी तरीकासँ लेल जा चुकल अछि। एहिमे अहाँसभकेँ टांग अड़ेबाक ने कोनो औचित्य अछि ने प्रयोजन।"

"इएह तँ बात छैक।ई बिआह ने स्पष्ट अछि ने पारदर्शी। स्वयंवर जीतलनि अर्जुन। ओहो सही छल कि गलत से कहब मोसकिल अछि। कारण कहबाक काज नहि अछि। हे चलू ओकरा यदि सहीए मानि ली तखनहु बिआह तदनुकूल नहि भए रहल अछि।द्रौपदीक बिआह पाँचो पाण्डवसँ भए रहल अछि। द्रौपदी कोनो मोटा नहि छथि जे सुविधानुसार रंग-विरंगक बाकसमे राखि देल जाथि। अखन धरि दूटा पुरुषसँ हुनकर बिआह भए चुकल अछि आ अखन आर तीनटा पुरुष पाँतिमे ठाढ़ छथि। ई बिआह संपूर्ण समाजक लेल कलंक अछि। एकरा अनेरे महिमामंडित कएल जा रहल अछि। कहल जा रहल अछि जे द्रौपदी युगपरिवर्तक हेतीह। ई हेतीह ,ओ हेतीह। की ओ आब अपन गरिमा बचा सकतीह? समाजमे लोक की कहत?एहि घटनासँ की प्रेरणा लेत?हमरासभ तँ अपने चिंतासँ परेसान छी। हे द्रौपदी छथि राजाक पुत्री।केओ किछु नहि कए सकतनि। मुदा हमसभ तँ साधारण लोक छी। हमरसभक धिआ-पुता की कहत? ओकरासभ लेल द्रौपदी केहन उदाहरण बनतीह?"

द्रुपद हुनकालोकनिक वार्तालाप सुनि अबाक छलाह। किछु फुरा नहि रहल छलनि।केओ हुनकर बात मानबाक लेल तैयार नहि छलनि। हल्ला बढ़िते जा रहल छल। भीड़मे उपस्थित लोकसभ बजिते जा रहल छल।द्रुपद विवश भए गेल छलाह। आखिर हल्ला सुनि कए भीम ओहिठाम पहुँचलाह आ ततेक जोरसँ चिकरलाह जे दस कोसक लोकसभक कान ठाढ़ भए गेल। तकर बाद ओ जोरसँ अपन गदा भजलाह। औ बाबू! से देखितहि ओतए उपस्थित लोकसभमे हरकम्प मचि गेल।ओ सभ यत्र-तत्र भागल। क्रमशः मामिला शांत भेल।

द्रौपदी आन दिनक अपेक्षा आइ बेसी उत्साहित छलीह। स्वयंवर विजेता आ परमवीर अर्जुनसँ आइ हुनकर बिआह हेतनि।ओ कहिआसँ एहि दिनक प्रतीक्षा कए रहल छलीह।आइ भोर होइतहि तकर तैयारीमे लागि गेलथि। आब साँझ पड़ि रहल छल।बिआह मंडपमे अतिथिसभ आबि गेल छथि। द्रुपदक पूरा परिवार सेहो अपन स्थान ग्रहण कए चुकल छथि। कृष्ण ,बलराम हुनका संगे आएल प्रमुख-प्रमुख लोकसभ अपन-अपन स्थान ग्रहण कए चुकल छथि। अर्जुन बिआहक सजल-धजल आसन ग्रहण कए चुकल छथि। अर्जुनक भाएलोकनि सेहो अपन-अपन स्थानपर विराजित छथि।धौम्य ऋषिक मार्गदर्शननमे बिआहक कार्यक्रम प्रारंभ भेल । ओ मंत्रोच्चार प्रारंभ केलनि। बिआहक विधि दुपहर राति धरि चलैत रहल। तकर बाद अर्जुन द्रौपदीक संगे विशिष्ट महलमे चलि गेलाह। राजा द्रुपद सहित ओहिठाम उपस्थित अन्य अतिथि,अभ्यागतलोकनि सेहो अपन-अपन आवासपर वापस भए गेलाह।

बिआहक बाद द्रौपदी आ अर्जुन पहिल बेर अर्धरात्रिमे एकांतमे ओहि कोठरीमे आमने-सामने बैसल छथि।अर्जुन संग बिआहक लेल द्रौपदी कहि नहि की की मनोरथ रखने छलीह। मुदा ओ तँ चुपचाप चिंतामग्न बैसल छथि। द्रौपदीक सामने अबितहि ओ अपराधवोधसँ ग्रसित भए गेल छथि। हुनका बेर-बेर एतबे सोचानि-

“हमरे चलते द्रौपदी ई हाल भेलनि।स्वयंवर हम जीतलहुँ,बिआहक लेल द्रौपदी हमरा जयमाल पहिरओलनि। उचित छल जे हमहीटा हुनकासँ बिआह करितहुँ। मुदा देखिते-देखिते की की ने भए गेल?युधिष्ठिर,भीम ज्येष्ठ छथि। हुनकासभकेँ विवेकसँ काज लेबाक चाहैत छलनि। आश्चर्यक बात अछि जे ओ सभ अपना पक्षमे निर्णयक लेल कटिवद्ध भए गेल रहथि। नकुल,सहदेव सेहो मूकदर्शक बनि गेल रहथि।एहनमे द्रौपदी की कए लितथि? हम यदि विरोधमे ठाढ़

होइतहुँ आ हुनकर भावनाक ध्यान रखैत हुनकासँ असगरे बिआहक लेल अड़ि जइतहुँ आ ओ हमर बात नहि मानितथि तखन ने?”

तरह-तरहक प्रश्न हुनकर अपने मोन उठा रहल छलनि। द्रौपदी बड़ीकाल धरि प्रतीक्षा करैत रहलीह। हुनका अर्जुनक चिंतासँ सहानुभुति रहनि। मुदा आब की कएल जा सकैत छल? समयचक्र बहुत आगू बढ़ि चुकल छल। आब तँ जतए ओसभ पहुँचि चुकल छथि तकरा वापसो नहि कएल जा सकैत छल।जखन अर्जुन किछु नहि बजलथि,गुनधुन करिते रहि गेलथि,तखन हारि कए द्रौपदीए गप्प-सप्प प्रारंभ केलनि।

“अहाँ बहुत चिंतित बुझाइत छी।की अहाँ एहि बिआहसँ प्रसन्न नहि छी?”

“जे सभ भेल अछि से उचित नहि भेल।हमर इच्छाक विरुद्ध भेल। एनामे हम प्रसन्न कोना रहि सकैत छी?”

“यदि से बात छल तखन समय रहैत किछु करितहुँ । जखन बजबाक प्रयोजन छल तखन तँ अहाँ गबधी लाधि देलहुँ। आब अफसोच केलासँ की फएदा?”

अर्जुन किछु नहि बजलाह।ओहिना चुपचाप बैसल रहि गेलाह।किछु-किछु सोचैत रहि गेलाह।

“अहाँ एतेक चिंता किएक कए रहल छी?समयक संग चलबाक चाही। हमरासभक बिआह आइ भेल अछि।ई समय दोबारा नहि आओत। किएक ने हमसभ एहि अवसरक अनुकूल आनन्द उठाबी।”

“हम सोचि रहल छी ...।”

“ई समय सोचबाक नहि अछि। ताहिसभ लेल तँ सौंसे जिनगी पड़ले अछि।”

“हमरा हिसाबे अहाँकेँ हमर पारिवारिक पृष्ठभुमिक जनतब होएब जरूरी अछि। से यदि नहि होएत तखन आजुक घटनासभक हमसभ निहितार्थ नहि बुझि सकब,ने हमसभ अपन कर्तव्य पालन नीकसँ कए सकब।”

“कोनो हरज नहि। सएह कहू। चुप रहबासँ किछु बजनाइ बहुत नीक।”

“ध्यानसँ सुनू।किछु अनट लागए तँ परेसान नहि होएब। हमरालोकनिक कथा विचित्र तँ अछिए,समाजक लेल कैक मानेमे दृष्टान्तो अछि।हमर पिताजीसँ काका धृतराष्ट्र पैघ छलाह,मुदा ओ छलाह जन्मजात आन्हर। तेँ काका विदुरक परामर्शपर हुनका राजा नहि बनाओल गेलनि।हमर पिता पाण्डु छोट होइतहुँ हस्तिनापुरक राजा बनाओल गेलाह। ई बात धृतराष्ट्र कहिओ स्वीकार नहि कए सकलथि। बादमे जखन हमर पिता प्रायश्चितस्वरुप जंगल गेलाह आ राज-काज अपन ज्येष्ठ भाएकेँ दए गेलखिन तखन अवसर हुनका भेटि गेलनि आ ओ हस्तिनापुरक राज सभ दिन लेल हथिआ लेलनि।ततबे नहि,अपन पुत्र,दुर्योधनकेँ उत्तराधिकारी बनेबाक लेल बेचेन रहए लगलाह।भेलैक ई जे किछु दिनक बाद जंगले मे परिस्थिवश हमर पिताक मृत्यु भए गेलनि।”

“से कोना?”

“सिकार करबाक लेल पाण्डु जंगल गेल रहथि। ओहि समयमे हुनका एकटा हरिण जंगलमे देखेलनि।ओकर सिकार करबाक लेल पाण्डु तीर चलओलथि। दुर्भाग्यवश ओ तीर किंदम ऋषिकेँ लागि गेलनि।ओहि समयमे किंदम ऋषि अपन पत्नी संग सहवासमे लागल रहथि। ओहि तीरसँ आहत किंदम ऋषि हुनका श्राप देलखिन-

“जहिना सहवास करैत हमर मृत्यु भए रहल अछि तहिना जखन कखनहु तूँ अपन पत्नीक संग सहवास करबह,तोरो दुनूगोटेक ठामहि अकालमृत्यु भए जेतह।”

एहि घटनासँ दुखी प्रायश्चितस्वरुप हस्तिनापुरक राज धृतराष्ट्रकेँ सोपि पाण्डु कुंती आ माद्री सहित जंगल चलि गेलाह।ओ जंगल प्रवासक क्रममे मुनिक श्रापसँ बचबाक लेल तत्पर रहैत छलाह। मुदा एहि बातसँ बहुत चिंतित छलाह जे आब हुनका संतान नहि भए सकतनि।तखन कुन्ती दुर्वासा ऋषि द्वारा आशीर्वादस्वरुप हुनका देल गेल मंत्रक बारेमे कहलखिन।ओ मंत्र पढ़ितहि कुन्तीक सामने इच्छित देवता आबि जइतथि आ ओ हुनका संग संतान उत्पन्न करितथि। ओतहि दुर्वासाक देल गेल मंत्रक प्रभावसँ हमरालोकनिक जन्म भेल।ओतए संयोगसँ एकदिन माद्रीक संग ओ सहवास करए गलाह कि मुनिक श्रापवश हुनकर तत्काल मृत्यु भए गेलनि।

"हमरा तँ ई बातसभ बहुत विचित्र लागि रहल अछि। मंत्र पढ़लासँ कोना केओ देवता आबि जेताह आ कुन्ती संतानवती भए गेल हेतीह?एहिमे जरूर किछु बात छैक जे कहल नहि जा रहल छैक?"

"से जे होउक,मुदा सत्य इएह अछि जे हम पाँचो भाए पाण्डुक जैविक पुत्र नहि छी।"

"ई सभ सुनि आश्चर्य लागि रहल अछि ।तेँ ने अहाँसभक देह आ स्वभावमे एतेक अंतर अछि। केओ ककरोसँ मेल खाइते नहि अछि। एतेक भिन्नताक अछैत अहाँसभ एक होएबाक आकांक्षा रखैत छी आ ताहि लेल हमरासँ पाँचो भाएक बिआह कराओल जा रहल अछि।"-से बाजि द्रौपदी जोरसँ हँसि देलथि।अर्जुन द्रौपदीक हँसीसँ लजा गेलाह,मुदा की करितथि? सत्य तँ सएह छल ।फेर ओ बजैत छथि-

"बात एतबे नहि छैक।"

"कहू,कहू। अहाँलोकनिक खिस्सा बहुत रुचिकर अछि। हमरा बहुत मोन लागि रहल अछि।"

"हमहीसभ अपन पिताक जैविक संतान नहि छी से बात नहि अछि।"

"माने ...?"

"हमरसभक वंशमे बहुत विचित्र घटनासभ घटित होइत रहल अछि। सभटा कहबामे तँ कतेको दिन लागि जाएत।तथापि अहाँक रुचिक ध्यान रखैत प्रमुख बातसभ कहैत छी।फेर पता नहि कखन कहिआ अवसर भेटए?"

"जल्दी कहू। हमहूँ से सभ जानबाक लेल बहुत उत्सुक छी।"

विचित्रवीर्यक असामयिक मृत्युक बाद सत्यवती भीष्मकेँ आग्रह केलनि जे ओ वंशकेँ नाश होएबासँ बचाबथि। मुदा ओ तँ आजन्म ब्रह्मचारी रहबाक प्रतिज्ञा कए चुकल रहथि,ओहो हुनके सामने। साफे मना कए देलखिन। आब तँ ओ बहुत चिंतामे पड़ि गेलथि। हारि कए सत्यवती अपन संतान व्यास मुनि लग पहुँचलाह।अहाँकेँ ई जानि आश्चर्य होएत जे व्यास मुनि सत्यवतीकेँ कुमारिएमे जन्म लेने रहथिन।"

"से कोना भेलैक? ई तँ बहुत गड़बड़ भेलैक।"

अर्जुनकेँ नहि रहल गेलनि। बहुत जोरसँ हँसा गेलनि। ओ बजैत छथि-

"पहिने एकटा खिस्सा सुनि लिअ तखन दोसर दिस बढ़ब।नहि तँ बौआइते रहि जाएब।

"सत्यवती भीष्मसँ एहन उत्तरक उम्मीद नहि केने छलीह। हुनका होनि जे कुलनाशक संभावित परिस्थितिसँ ओ अपन निर्णयकेँ बदलि लेताह। मुदा से भेल नहि। भीष्म अड़ले रहि गेलाह। ओ कहलखिन-

"माते! अहीं तँ हमरा ई प्रतिज्ञाक कारण भेल रही। हमर पिता शान्तनु अहाँसँ बिआह करबाक लेल उत्सुक रहथि। मुदा अहाँक पिता सर्त राखि देलनि जे अहींक संतान हस्तिनापुरक राजा हेताह। ततबे नहि,भविष्यमे कोनो प्रकारक संकट नहि होइक ताहि लेल सेहो शान्तनुपर जोर देलनि। तखने हमरा प्रतिज्ञा करए पड़ल जे हम अखंड ब्रह्मचारी रहब,बिआह नहि करब आ हस्तिनापुरक जे

केओ राजा हेताह हुनकर रक्षा करबनि।आब की?एतेक समय बीति गेल।हमअपन प्रतिज्ञासँ बान्हल छी,हम किछु नहि कए सकैत छी। ”

आखिर सत्यवती व्यास मुनि लग पहुँचलथि। ओहो हुनकर संतान छलखिन। सत्यवतीकेँ आएल देखि व्यास मुनि पुछलखिन-

“माता! हम अहाँक की सेवा कए सकैत छी?”

“अहाँ तँ स्वयं सर्वज्ञाता छी। अहाँसँ की कहू?बजितो लाज भए रहल अछि।”

“अपन संतानसँ कथीक लाज?”

हस्तिनापुरक भविष्य संकटमे अछि। हम एहि बातसँ बहुत चिंतित छी। विचित्रवीर्य बिना कोनो संतानकेँ मरि गेलाह। एहि समस्याक निवारणक लेल हम भीष्म लग गेल रही। हुनका बहुत आग्रह केलिअनि जे ओ अम्बिका आ अम्बालिकासँ संतान उत्पन्न करथि,मुदा ओ अपन प्रतिज्ञाक कारण हाथ ठाढ़ कए देलनि। आब तँ अहींटा सँ उम्मीद अछि।”

“अहाँक आज्ञा शिरोधार्य अछि माते! मुदा हम तँ अखने तपसँ बाहर भेलहुँ अछि। हमर शरीर ओहि स्थितिमे नहि अछि। अस्तु,हमरा किछु समय देल जाए।”

“नहि,नहि।समय नहि अछि। अहाँ एहि काजकेँ अविलंव संपन्न करू।”

“जे भावी । मुदा एकटा बातक ध्यान राखब। ओहि कालमे जे जेहन भावमे रहतीह तिनका तेहने संतान हेतनि।”

आखिर ओहने हालतिमे व्यास मुनिक अम्बिका आ अंबालिकाक संग संपर्क भेलनि। अंबिका आ अंबालिका सामान्य नहि रहि सकलीह। परिणामस्वरुप हुनकालोकनिक संतान अवदाह भेलथि। धृतराष्ट्र जन्मजात आन्हर आ पाण्डु रोगी भेलाह। दासी संगे तेसर संतान बहुत स्वस्थ आ प्रतिभाशाली भेलाह। ओ छलाह दासी पुत्र विदुर।

द्रौपदी ई खिस्सा सभ सुनि बहुत आनन्दित भेलथि।फेर कहैत छथि-

"अहाँ तँ माता सत्यवतीक लेल सेहो किछु कहि रहल छलहुँ?"

"हमरा बहुत संकोच भए रहल अछि।की कहू, केना कहू?"

"हमरा अहाँक बीचमे कोन संकोच?हमसभ पति,पत्नी छी।"

"से तँ आइए भरि ने।काल्हि तँ अहाँ ककरो आनक पत्नी बनब,परसू ककरो आरक।"

"आब एतेक बात अहाँक मुँहे सुनलाक बाद हमरा तामस नहि भए रहल अछि ने चिंता भए रहल अछि।"

आइ पहिल बेर अर्जुन द्रौपदीक बात सुनि लजा गेलथि। मुदा हुनकालोकनिक आपसी गप्प-सप्प बहुत रोमांचक भेल जा रहल छल।

जहन एतेक बात भेबे केलैक तँ कनी आर सही...।

"अच्छा तँ संक्षेपेमे सुनि लिअ। आब भोर होमए जा रहल अछि।बाहर लोकसभ जागि जाएत।"

"कहिऔ ने ।सभकेँ बुझल छैक जे अहाँ के छी?केओ बिदति करबासँ पूर्व दस बेर सोचत।"

अर्जुन जोरसँ हँसि देलाह।फेर कहैत छथि-

"माता सत्यवतीकेँ कुमारिएमे संतान भए गेलनि। ओही संतानक नाम पड़लनि-वेदव्यास।"

"से केना?"

"एक दिन पराशर मुनि जमुना नदीमे नाओसँ पार भए रहल छलाह। नाओ खेपि रहल छलि एकटा सुंदरि जकर नाम सत्यवती छलैक। पराशर मुनि ओकर सुंदरतासँ मोहित भए ओकरासँ संतान उत्पन्न करबाक याचना केलनि। सत्यवती बहुत लज्जित भेलीह।मुदा पराशर नहि मानलखिन । ओ सत्यवतीकेँ आश्वस्त केलखिन जे हुनकर कौमार्य बनल रहतनि आ हुनकर देहसँ निरंतर सुगंध निकलैत रहतनि। "तखन की छै देरी...?" एहि तरहेँ व्यासक जन्म भेलनि।"

"अहाँक वंशक खिस्सा तँ अद्भुत अछि।"

"चलू आब हमसभ नव सृष्टिक सृजन करी।"

एहि तरहेँ दुनूगोटे गप्प-सप्प करैत रहलाह।अर्जुन रहि-रहि कए गंभीर भए जाथि। द्रौपदी कैक बेर टोकरा देथिन।

"अहाँ तँ सभटा समय गप्पेमे बिता लेलहुँ। अहाँक दुनू भाए तँ एकर बहुत नीक उपयोग केलथि।हमरा उम्मीद छल जे आजुक राति आर रमनगर होएत। अहाँ सन वीर पुरुषक संग आनन्द उत्कर्ष धरि पहुँचि सकत।"

"केओ वीर आ पुरषार्थी ओहिना नहि होइत अछि। ओहि लेल बहुत साधनाक काज पड़ैत छैक।बहुत त्याग करबाक प्रयोजन होइत अछि। हमर अहाँक संबंध आत्मिक अछि।हमर अहाँसँ प्रेम शारीरिक मिलनसँ बहुत ऊपर अछि,श्रेष्ठतर अछि आ रहत। तेँ हम अहाँ लग रहब वा नहि रहब ,मुदा एतबा अहाँ विश्वास करू जे हमर आत्मा सदिखन अहींक संग रहत।अहीं हमर शक्ति छी,प्रेरणाश्रोत छी।"

"हम से जनैत छी। अहाँ सरिपहुँ महान छी। अहाँक त्याग जुग-जुग धरि मोन राखल जाएत। जगदंबा अहाँलोकनिक मनोकामना पूर्ण करथि।"

अर्जुन कहैत छथि-

"अहाँ बेसी नहि सोचू। अहाँ सचमुच महान छी।अहाँक त्याग महान अछि। हमसभ भाए भने शरीरसँ पृथक छी,मुदा हमरसभक आत्मा एक्के अछि। अहाँ कतहु रहब,हमरे लग रहब।हम एहि लेल अहाँक सभ दिन कृतज्ञ रहब।"

एहिनामे भोर भए गेल।कौवा डाक दए रहल छल। बाहर संगी सभ द्रौपदीक प्रतीक्षा कए रहल छलखिन। द्रौपदी बात बूझि कए बाहर भए गेलीह। अर्जुन द्रौपदीकेँ देखैत रहि गेलथि।

२६

नकुलक बिआह

आइ बिआह कार्यक्रमक चारिम दिन अछि।आइ नकुलक बिआह द्रौपदीक संग हेतनि।ओ माद्रीक संतान छलाह। हुनका संगे सहदेवक जौंवा जन्म भेल रहनि। नकुल जेठ छलाह। ओ अत्यंत सुंदर आ गुणी छलाह। अनेक शास्त्रमे निपुण छलाह। संगे पशुप्रेमी छलाह।हुनका पशुक चिकित्साक बहुत ज्ञान छलनि। ओ घोड़सबारी करबामे सेहो निपुण रहथि।

एहन रुपवान गुणी नकुल तीन दिनक प्रतीक्षाक बाद आइ द्रौपदीक संग बिआहल जेताह।एहिसँ पूर्व युधिष्ठिर,भीम आ अर्जुनक संग द्रौपदीक बिआह भए चुकल छनि।व्यास मुनिक आशीर्वाद स्वरुप द्रौपदी बिआहक बाद नित्य भोरे फेरसँ कौमार्य प्राप्त कए लैत छलीह।फेरसँ कुमारि कन्या जकाँ द्रौपदी बिआहक लेल प्रस्तुत भए जाइत छलीह। नकुलक प्रसन्नताक अंते नहि छलनि। केओ तकर अनुमान बाहरसँ नहि लगा सकैत छल।कारण ओ निरंतर शांत आ गंभीर रहैत छलाह। इएह हुनकर स्वभावक विशेषता छलनि।

आजुक पंडालकेँ नकुलक स्वभाव आ गुणक अनुसार सजाओल गेल छल।ओहिमे रंग-विरंगक फूलसभ लागल छल। सामिआनामे अनेक प्रकारक रोमांचकारी चित्रसभ बनाओल गेल छल। आसनक क्रम आने दिन जकाँ छल। पाण्डव श्रेष्ठ युधिष्ठिर कनी अस्वस्थ भए गेल छथि। असलमे बिआहक राति ओ जगले रहि गेलथि।तकर बादो विश्राम नहि कए सकलथि। तेँ आइ हुनकर स्वास्थ्य मंद लागि रहल छनि। मुदा भीम बहुत उत्साहमे रहथि। ओ अपन बिआहक रातिक समयक एक्को क्षण व्यर्थ नहि होमए देलनि। ओ बहुत संतुष्ट आ प्रसन्न छलाह। मुदा अर्जुन अखनहु गंभीर मुद्रामे छलाह,चिंतित लागि रहल छलाह। ककरो ओहि बातपर ध्यान जाइ कि नहि,मुदा कृष्ण हुनकर मनोभाव नीकसँ बुझि रहल छलाह।

हुनकर भावनाक कृष्णसँ बेसी अनुमान ककरा भए सकैत छलैक? आखिर ओ अर्जुनक अनन्य मित्र छलाह।

द्रौपदीक बिआह नकुलक संग बहुत नीकसँ संपन्न भेल। ई हुनकर चारिम बिआह छलनि। नकुल संगे हुनका बहुत नीक लगलनि। पछिला तीनू दिनसँ फराक अनुभव भेलनि। कखन राति बीति गेल,कखन भोर भए गेल से नहि पता चलि सकलनि। सूर्योदयक बाद द्रौपदी फेर तैयारीमे लागि गेलीह। आइ हुनकर पाँचम आ अन्तिम बिआह सहदेवसंग संपन्न हेतनि। सहदेव बहुत गुणी छलाह। ओहो पशुचिकित्सामे माहिर रहथि। ओ भूत,वर्तमान आ भविष्यक ज्ञान छलनि। हुनका पता रहनि जे महाभारत युद्धक परिणाम की होएत। के जीतत,के हारत।अंतिम परिणाम की होएत। मुदा कृष्ण हुनका श्राप देने रहथिन जे यदि ओ से ककरो कहताह तखन हुनकर मृत्यु भए जेतनि।

सहदेवक संग द्रौपदीक बिआह संपन्न भेलनि। आइ द्रौपदी बहुत प्रसन्न छलीह। एहि लेल जे हुनकर बिआहक श्रृंखला आइ संपन्न भेलनि,आब आओर ककरोसँ हुनका बिआह नहि करबाक हेतनि। एक्के संगे पाँच-पाँचटा पति ओहो एक सँ एक वलिष्ठ आ शक्ति संपन्न। केना सम्हारि सकतीह एसगरि द्रौपदी।एहि बातसँ ओ बहुत परेसान रहथि। हुनकर ई चिंता उचित छलनि। मुदा आइ तँ सहदेवक संगे हुनका समय बिताबक रहनि। आगूक चिंता आगू कएल जाएत। से सोचि ओ आनन्दमे रहथि।

२७

हस्तिनापुर वापसी

द्रौपदीक पाँचो पाण्डवक संग बिआह संपन्न भए गेलनि। तकर बाद पांचाल नरेश द्रुपदक ओहिठाम हुनकालोकनिक रहबाक तात्कालिक व्यवस्था कएल गेल। पाण्डवलोकनिक जीवित होएबाक आ द्रौपदीक संग पाँचो भाएक

बिआहक समाचार हस्तिनापुरमे भीष्म धरि पहुँचि गेल रहनि। ओ एहि बातसँ बहुत प्रसन्न रहथि। ओ धृतराष्ट्रकेँ कहलखिन-

"ई बहुत प्रसन्नताक बात अछि जे पाण्डवलोकनि जीबिते छथि आ हुनकासभक बिआह पांचाल नरेश द्रुपदक पुत्री द्रौपदीसँ भेलनि अछि। कुंती सहित ओ सभ गोटे संप्रति सासुरे मे रहि रहल छथि। मुदा ई उचित नहि अछि। हुनका सभकेँ ससम्मान हस्तिनापुर आनल जानि।"

"हम अहाँक विचारसँ पूर्ण सहमत छी। हुनका सभकेँ अविलंब सम्मानपूर्वक हस्तिनापुर आनल जाए। विदुर तकर व्यवस्था करथि।"-धृतराष्ट्र बजलाह।

तकर बाद विदुर प्रमुख लोकसभक संगे पांचाल नरेशक ओहिठाम गेलाह । हुनका देखितहि पाण्डवलोकनि बहुत प्रसन्न भेलाह। सभ गोटे बेराबेरी हुनका प्रणाम केलनि। कुंती से बहुत प्रसन्न रहथि। मुदा हुनका चिंता रहनि जे दुर्योधन कहीं फेर किछु उपद्रव करए।एतेक मोसकिलसँ तँ हुनकर संतानसभक जान बाँचल छलनि। वारणावतक षड़यंत्र अखन धरि ओ बिसरि नहि सकल रहथि। विदुर ई बात बुझलखिन। हुनकर चिंता दूर करैत ओ कहैत छथि-

"अहाँसभ निश्चिन्त भए हस्तिनापुर चलू। कोनो बातक फिकिर नहि करू।जे भए गेलैक से भए गेलैक। आब तकर की हिसाब छैक? हमसभ एक खून छी,सभ केओ अपन छी,एक्के परिवारक अंग छी।तँ एक-दोसरकेँ क्षमा कए आगूसँ मिलि कए रही।ओहिठाम अहाँसभक रक्षाक उचित व्यवस्था कएल जाएत।आब दुर्योधन किछु नहि कए सकत।हमसभ एहि बातक प्रयासमे लागल छी जे युधिष्ठिरकेँ यथाशीघ्र हस्तिनापुरक उत्तराधिकारी घोषित कए देल जानि। तकर बाद तँ समस्ये खतम भए जाएत।सभ किछु अहींसभक नियंत्रणमे रहत।"

"से बात दुर्योधन मानत?कदापि नहि मानत। ओकर जिद्दी स्वभाव आ दुराग्रहक आगू धृतराष्ट्र किछु नहि कए सकताह।"

“धृतराष्ट्रक वशक बात नहि छैक जे ओ युधिष्ठिरक अधिकार नष्ट कए सकए। युधिष्ठिर ज्येष्ठ छथि आ नियमानुसार उत्तराधिकारी बनबाक पात्र छथि। तखन धृतराष्ट्र की कए लेत? फेर हमहूँसभ छीहे।अहाँसभ निश्चिन्त भए हमरा संगे चलू।हम एहि परिस्थितकैं जनैत रही।तैँ अहाँसभकैं हस्तिनापुर लए जेबाक लेल आएल छी। कम सँ कम हमरापर तँ विश्वास करू ।”

“अहाँपर तँ विश्वास अछिए आ सभ दिन रहत। मुदा...”

“मुदा की? सभटा निर्णय आइए आ एतहि नहि होएबाक चाही। अपन जगह छोड़ि देब कतएसँ उचित होएत। अपन माटिपर पहुँचू तँ। फेर किछु आर बात।”

विदुरक बात मानि पाण्डव कुंती आ द्रौपदी सहित हस्तिनापुर वापस जएबाक लेल तैयार भए गेलथि।

द्रुपद सहर्ष अपन प्रिय बेटीकैं बिदा केलथि। संगमे अनेक प्रकारक मूल्यवान उपहार देलथि।पाण्डवलोकनिक स्वागतक लेल हस्तिनापुरकैं बहुत नीकसँ सजाओल गेल छल। मुख्यद्वारिपर अनेक गणमान्यलोकसभ उपस्थित छलाह। पाण्डवलोकनि जखने रथसँ उतरलाह कि शङ्खनाद भेल। स्त्रीलोकनि स्वागतगान गाबि रहल छलीह। आकाशसँ पुष्पवर्षा कएल जा रहल छल। लोकसभ पाँति बना कए पाण्डवलोकनिक स्वागत कए रहल छलाह। द्रौपदी सहित पाँचो पाण्डवलोकनि भीष्म,कृपाचार्य,द्रोण,धृतराष्ट्र,गांधारी सहित समस्त गणमान्यलोकनिक आशीर्वाद प्राप्त कए हस्तिनापुरमे रहबाक लेल वापस आबि गेलथि।

पाण्डवलोकनिक जीवित बचि जाएब,द्रौपदीसँ बिआह करब ,पांचालमे रहब सभ बात दुर्योधनकैं पता छलनि। मामा शकुनीक संगे ओ एहि विषयमे रहि-रहि विमर्शो कएल करथि। मुदा ओ सभ एना हस्तिनापुर वापस आबि जेताह आ हुनकासभक एतेक स्वागत हेतनि ताहि लेल ओ कदापि तैयार नहि रहथि। ओ तँ

एहि बातक प्रयासमे रहथि जे पाण्डवलोकनि वारणावते मे स्वाहा भए जाथि। मुदा भेल तकर उल्टा। आब तँ ओ सभ आर सशक्त भए गेल छलाह। पाण्डवक संग हुनकर ससुर द्रुपद छलखिन।कृष्ण तँ सदिखन हुनकर शुभचिंतक रहबे करथि। सभसँ मोसकिल समय तँ आब आबि रहल छल। कारण युधिष्ठिरकेँ हस्तिनापुरक उत्तराधिकारी घोषित करबाक अबाज बेर-बेर उठि रहल छल। एहि बातसँ दुर्योधन बहुत चिंतित छलाह। ओ शकुनीक संगे राति-राति भरि विचार-विमर्श करैत रहैत छलाह। ओ अपना भरि बहुत प्रयास केलथि जे एहि प्रस्तावकेँ रोकल जाए। मुदा जखन से असंभव बुझेलनि तखन ओ भीष्मक प्रस्तावकेँ मानि लेलाह। तदनुसार हस्तिनापुरक दू भाग कएल जाएत। राजधानी सहित हस्तिनापुर तँ दुर्योधनेक संग रहि जेतनि।पाण्डवलोकनिकेँ खाण्डवप्रदेश देल जेतनि। ओ सभ एकरा सहर्ष स्वीकार केलनि। पाण्डवलोकनि मय दानवक प्रयाससँ इन्द्रप्रस्थमे नव राजधानीकेँ निर्मित करओलनि। ओहिठाम मय दानव द्वारा माया महलक नामसँ राजमहल बनाओल गेल ।माया महलक शोभा अपार छल। आगन्तुकलोकनि ओकरा देखिते रहि जाइत छलाह। द्रौपदी सहित पाण्डवलोकनि इन्द्रप्रस्थमे नवनिर्मित मायामहलमे बहुत नीकसँ समय बिता रहल छलाह। युधिष्ठिर संगे द्रौपदी रानीक कर्तव्य नीकसँ संपन्न कए रहल छलीह।युधिष्ठिरक न्यायपूर्ण शासन व्यवस्थासँ नागरिक बहुत सुखी जीवन बिता रहल छल।

२८

राजसूययज्ञ

इन्द्रप्रस्थमे सभ तरहेँ व्यवस्थित भए गेलाक बाद युधिष्ठिर राजसूययज्ञ करबाक निर्णय लेलनि। ओहि यज्ञमे दुर्योधन सहित हुनकर भाएलोकनिकेँ सेहो आमंत्रित कएल गेलनि। ओ सभ सदल-बल इन्द्रप्रस्थ पहुँचलाह। कर्ण सेहो हुनका सभक संगे छलाह। भीष्म,द्रोणाचार्य,कृपाचार्य,विदुर सेहो ओतए पहुँचि गेलाह।

मायामहलक विशिष्ट अतिथिगृहमे दुर्योधन आ हुनकर भाएलोकनिक रहबाक व्यवस्था कएल गेल छल।

राजसूय यज्ञमे सभ पात्र सोनाक बनल छल। ब्राह्मणलोकनि सोनाक हर युधिष्ठिर द्वारा चलबाए हुनका यज्ञक दीक्षा देलनि।यज्ञ प्रारंभ होएबासँ पूर्व युधिष्ठिर यज्ञक सफल संचालनक लेल प्रमुख लोकसभमे काजक बटबारा केलनि।कृष्ण स्वयं आगन्तुक ब्राह्मणलोकनिक पैर धोबाक काज करबाक घोषणा केलनि।भीमकेँ भनसाघरक देख-रेखक काज देल गेलनि।सहदेवकेँ अतिथिलोकनिक स्वागत करबाक आ नकुलकेँ सामग्रीसभक व्यवस्था करबाक जिम्मा देल गेलनि।अर्जुन श्रेष्ठजनक सेवाक भार देल गेलनि। कर्णक स्वभावकेँ ध्यानमे रखैत युधिष्ठिर हुनका यज्ञमे देल जाए बला दानक हिसाब-किताब राखबाक भार देलखिन। कर्ण से सहर्ष स्वीकार केलनि।

“सभटा भार तँ देल गेल मुदा राजकोषक व्यवस्था के देखताह?एकर घोषणा तँ भेबे नहि कएल।”-भीम बजलाह।

“भ्राता दुर्योधनसँ बढ़िआँ ई काज के कए सकत? हमरा बिचारसँ हुनके ई काज देखबाक चाहिअनि।”

युधिष्ठिरक विचार सुनि भीम चकित छलाह। कारण दुर्योधनक स्वभाव हुनकासभकेँ नीकसँ बुझल छलनि। ओ बहुत ईर्ष्यालु छलाह ,पाण्डवलोकनिक हित चिंतक कहिओ नहि छलाह। मुदा जखन युधिष्ठिर दुर्योधनक नामक घोषणा कइए देलनि तखन की कएल जाएत? भीष्म,धृतराष्ट्र आ दुर्योधन स्वयं एहि निर्णयसँ बहुत प्रसन्न छलाह।असलमे युधिष्ठिर चाहैत छलाह जे दुर्योधनकेँ कहुना प्रसन्न राखल जाए जाहिसँ दुनू परिवारमे आगू संबंध नीक बनल रहए।

एहि प्रकारेँ राजसूय यज्ञक सफल संचालन लेल सभकेँ यथायोग्य जिम्मेबारी देल गेलनि।

यज्ञमे अग्रपूजा किनकर कएल जानि? एहि प्रश्नपर विचार विमर्श भेल। भीष्म बजलाह-

"कृष्ण सभ प्रकारसँ श्रेष्ठ छथि। ओ शुरूऐ सँ महान काजसभ करैत रहलाह अछि। ओ सभ दिन पाण्डवलोकनिक हित चिंतक रहलाह अछि। अस्तु,अग्रपूजा तँ हुनके होएबाक चाही। मात्र शिशुपालकेँ छोड़ि कए ओहिठाम उपस्थित विद्वान,ऋषि,मुनि,राजा-महराजा सभ एहि प्रस्तावक समर्थन केलनि।"

शिशुपाल कृष्णक पिसिऔत छलाह। रुक्मिणीक बिआहक प्रसंगसँ ओ कृष्णसँ कुपित छलाह। बिआहसँ पहिने कृष्ण रुक्मिणीकेँ हुनके सहमतिसँ भगा अनलनि आ बिआह कए लेलनि। शिशुपाल तहिए सँ कृष्णसँ कुपित छलाह,प्रतिशोधक अवसर ताकि रहल छलाह। रहि-रहि कए कृष्णकेँ गरिअबैत रहैत छलाह। कृष्ण हुनका क्षमा करैत रहथि।एहि तरहेँ शिशुपालक निन्नानबेटा गलती कए चुकल छलाह। कृष्ण हुनका एक सए गलती क्षमा करबाक वचन अपन पीसीकेँ देने रहथिन।अखन समस्त विद्वान,मुनि,राजा,महराजाक उपस्थितिमे शिशुपाल फेर कृष्णकेँ अनट-सनट बात कहि रहल छल।ओकर सएटा गलती पुरि गेल छल।कृष्ण आब पीसीक देल गेल वचनसँ मुक्त भए गेल छलाह। ओ चक्र चलओलनि आ शिशुपालक मुरी देहसँ फराक भए गेल। कृष्ण द्वारा शिशुपालक वध केलाक बाद सौंसे सभामंडपमे निस्तब्धता पसरि गेल। सभ एकस्वरसँ बाजि उठल-

"कृष्ण भगवानक जय!"

एकर बात युधिष्ठिरक आज्ञासँ सहदेव कृष्णक अग्रपूजा संपन्न केलनि।तकर बाद ओहिठाम उपस्थित अन्य आदरणीयलोकनिक सम्मानपूर्वक पूजा कएल गेल। राजसूययज्ञ संपन्न भेल। अतिथिलोकनि बेरा-बेरी वापस चलि गेलाह।दुर्योधन ,दुश्शासन,शकुनी   आ किछु खास लोकसभ अखनहु रहथि। हुनकासभकेँ विशेष आग्रह कए रोकल गेल रहनि। एक दिन जलखै केलाक बाद

दुर्योधन अपन भाए दुश्शासनक संगे माया महलमे घुमि रहल छलाह । ओ अचानक पिछड़ि गेलाह।असलमे मकानक फर्शक बनाबट तेहन छल जे ओ सहीसँ पैर नहि बैसा सकलाह आ ठामहि खसलाह। थोड़बे फटकी ठाढ़ि द्रौपदी ठहाका पारि रहल छलीह। ओ दुर्योधन दिस इसारा करैत बाजि उठलीह-

"सही कहल गेल अछि जे आन्हरक बेटा आन्हरे होइत अछि।"

द्रौपदीक मुँहे एहन बात सुनि दुर्योधन बहुत आहत भेलाह,बहुत अपमानित अनुभव केलनि। ओ अपन दुख शकुनी मामासँ कहलखिन।

"चिंता नहि कर भगिना। आब एकर विनाशक समय आबि गेलैक।"

"से कोना मामाजी?"

"मनुक्खकेँ अपन उत्कर्षक समयमे विनम्र होएबाक चाही।मुदा द्रौपदी तँ शुरूए सँ उच्छृंखल अछि। होएत कोना नहि? जे स्त्री एक्के संगे पाँच-पाँचटा पुरुष संगे सहवास करत ओकरामे शील आ चरित्र कतए भेटत?"

"सही कहि रहल छी मामाजी! हमरा तँ मोन होइत अछि जे एकरा अखने घिचने चलि जाइ ...।"

"इएह तँ तोरामे गड़बड़ छह। अखन यदि हमसभ किछु करब तँ अपन जानोसँ हाथ धोएब। सभ पाण्डव अखन अति उत्साहमे अछि। चारूकात एकरसभक सेना सावधान मुद्रामे अछि। ततबे नहि, एकर मित्र राज्यसभक राजा,महराजासभ एकरसभक समर्थनमे तत्पर छथि। एहन परिस्थितिमे हमरासभक दुर्गति निश्चित अछि। तेँ अखन हमसभ वापस हस्तिनापुर चलैत छी। ओहिठामसँ युधिष्ठिरकेँ द्यूतक्रीड़ाक लेल आमंत्रित करैत छी।युधिष्ठिरसँ तखने हिसाब-किताब एक कएल जाएत।"

"मुदा युधिष्ठिर से मानताह?हमरा तँ संशय भए रहल अछि।द्रौपदी बहुत चतुर स्त्री थिक। ओ हमरसभक षड़यंत्र बुझि युधिष्ठिरकेँ रोकि लेत,हस्तिनापुर नहि जाए देत।"

“तखन तूँ युधिष्ठिरकेँ नहि चिन्हैत छहक। ओ नियमक पक्का अछि। यदि ओकरा द्यूत निमंत्रण देल जेतैक तँ ओ हस्तिनापुर अबस्स आओत, ककरो बात नहि मानत।अखन हमरासभकेँ एहिठामसँ निकलक चाही। जाइत-जाइत अपन मोनक भावकेँ किछु अंदाज पाण्डवलोकनिकेँ नहि होमए दी।हस्तिनापुर पहुँचि कए आगूक योजनापर काज कएल जाएत।”

“एकदम सही कहलहुँ मामाजी। हमसभ एहि अपमानक बदला अबस्स लेब।द्रौपदीकेँ ओकर उच्छृंखलताक दंड भोगहि पड़तैक।”

ओही दिन दुर्योधन ,दुश्शासन,शकुनी सहित कौरव परिवारक लोकसभ हस्तिनापुर वापस चलि गेलाह।पाण्डवलोकनि हुनकासभकेँ सम्मानपूर्वक बिदा केलनि। ओ सभ कौरबसभक मोनमे चलि रहल उठा-पटकक किछु अनुमान नहि कए सकलथि।

२९

ईर्ष्या

युधिष्ठिरक राजसूय यज्ञमे भाग लेलाक बाद दुर्योधन हस्तिनापुर वापस आबि गेलाह।ओ रस्ता भरि द्रौपदीक द्वारा कएल गेल अपमानक बारेमे सोचैत रहलाह। हुनका एक्को क्षण चैन नहि छलनि। ओ पाण्डवकेँ खान्डवप्रदेश दए सोचने रहथि जे ओ सभ ओतए कष्ट सहैत-सहैत स्वतः नष्ट भए जाएत। प्रतिस्पर्धाक तँ सबाले नहि छल। मुदा भेल उल्टे। इन्द्रप्रस्थ जा कए जे ओ देखलनि,तकर ओ कहिओ कल्पना नहि केने छलाह।मुदा इन्द्रप्रस्थमे राजसूय यज्ञमे पाण्डवलोकनिक ठाठ-बाठ देखि ओ बहुत दुखी छलाह। ईर्ष्यासँ दुर्योधनक देहमे आगि लागि गेलनि। होनि जे की करी की नहि? एहि भयाओन कष्टकेँ द्रौपदीक व्यंग सए गुना बढ़ा देने छल। हुनका द्रौपदीसँ प्रतिशोध लेबाक लेल मोन छचपटा रहल छलनि। होनि जे इन्द्रप्रस्थपर तुरंत आक्रमण कए दी।ओ

एही लेल शकुनी लग पहुँचलाह। ओहि समय शकुनी असगरमे विचारमग्न छलाह। ओ जहिआसँ अपन बहिनक संग हस्तिनापुर अएलाह,कहिओ निश्चिन्त नहि भेलाह। दिन-राति कौरवसभक माथकेँ पाण्डवक विरुद्ध भरैत रहलाह। ओ कहिओ नहि चाहलथि जे हस्तिनापुरमे शांति स्थापना होइक। हुनका सदिखन अपन बहिन संग भेल अन्याय मोन पड़ैत रहैत छलनि।

" एतेक सुंदरि गांधारीकेँ आन्हर धृतराष्ट्रसँ बिआह कए देब कतएसँ उचित छल?"

तकर बदला ओ पाण्डवलोकनिसँ लैत रहैत छलाह। शांतिक कोनो प्रयासकेँ ओ सफल नहि होमए दैत छलाह।इन्द्रप्रस्थमे घटित घटनाक्रम सेहो हुनका एकटा बहुत नीक अवसर बुझा रहल छलनि।

दुर्योधनकेँ आएल देखि शकुनी बहुत प्रसन्न भेलथि। ओ हुनका सांत्वना दैत कहैत छथि-

"हमरासभकेँ तुरंत युधिष्ठिरकेँ द्यूतक्रीड़ाक लेल आमंत्रित करबाक चाही।"

"मुदा ई समाद ओहिठाम लए जाएत के?"

"विदुरसँ बढ़िआँ ई काज के कए सकैत छथि?हुनका देखितहि युधिष्ठिर मना नहि कए सकताह।"

"मुदा विदुर एहि लेल तैयार हेताह? हमर मोन नहि मानि रहल अछि। कारण ओ मंत्री बेसक हस्तिनापुरक छथि,मुदा हुनकर निष्ठा सदिखन पाण्डव दिस रहलनि अछि। ओएह गड़बड़ केलनि नहि तँ वारणावतमे पाण्डवलोकनि स्वाहा भए गेल रहैत। समस्याक सभ दिनक लेल समाधान ओतहि भए गेल रहैत।"

"तोरामे इएह गड़बड़ छह। सदिखन उलटे सोचैत छह।विदुर राजज्ञा अबस्स मानताह। एक बेर तोहर पिता कहि देथिन।बस खेल खतम।"

“मामाजी। अहाँ तँ तेना बाजि रहल छी जेना हमर पिताजी से विदुरकेँ कहबो करथिन।हमर सभसँ पैघ विरोधी ओएह छथि। यदि ओ हमर बात मानितथि,हमरा नीकसँ संग देने रहितथि तँ पाण्डव नामक लोकसभ एहि दुनिआँसँ कहिआ ने बिला गेल रहैत।”

“ओ करथिन,अबस्स करथिन। ताहि लेल तूँ पर्याप्त छह। एक बेर कहबाक काज छह। ओ आन्हरेटा नहि छथि,अपितु मोहग्रस्त छथि।एहन आदमी अपन विचारपर कतेक काल ठहरि सकत?”

“ठीक छैक।तखन अहाँ कहू जे हम की करी जाहिसँ ई काज शीघ्र संपन्न होअए।”

“अपन पिता लग जाह आ नीकसँ कहि दहुन जे ओ विदुरकेँ आदेश देथि अन्यथा...।”

दुर्योधन जोरसँ ठहाका पारलक , शकुनीकेँ प्रणाम केलक आ बिदा भेल अपन पिता लग।

३०

द्यूत निमंत्रण

धृतराष्ट्र विदुरकेँ द्यूत निमंत्रण लए इन्द्रप्रस्थ जेबाक लेल बजओलखिन।विदुर हुनकर एहि प्रस्तावक घोर विरोध केलथि-

“भ्राताश्री!अहाँ सही नहि कए रहल छी।युधिष्ठिरकेँ हस्तिनापुरमे द्यूतक लेल निमंत्रित करब शकुनीक षड़्यंत्र थिक। ओ नहि चाहैत छथि जे पाण्डव आ कौरवमे आपसी मित्रता रहनि। ओ कहिओ हस्तिनापुरक हितचिंतक नहि रहलाह।ताहि लेल ओ कोनो कुकर्म करबाक लेल तत्पर रहैत छथि।दुर्योधनकेँ बरबाद करए बला ओएह छथि। नेनेसँ ओकर माथाकेँ गलत-सलत बात कहि-कहि ओ पाण्डवलोकनिक प्रतिए पूर्वाग्रहित केने छथि। परिणाम ई भेल जे दुर्योधन

नीको परामर्श सुनबाक लेल तैयार नहि होइत अछि। दुर्योधनक माथपर विनाशक टिकटिकिआ नाचि रहल छैक। यदि पाण्डवलोकनि इन्द्रप्रस्थ नीकसँ बसा लेलनि तँ ओहिसँ दुर्योधनक की क्षति भेलैक? ओ तँ आर नीक बात भेलैक ने। आब ओ निचेन हस्तिनापुरपर राज कए सकैत अछि। मुदा ओ अखनहु बेचेन अछि।ईर्ष्यासँ जरि रहल अछि।ओ कहुना पाण्डवलोकनिक राज हड़पि लेबए चाहैत अछि। द्यूत निमंत्रण तकरे भूमिका थिक। अहाँकेँ एकरा अबस्स रोकबाक चाही।”

“हम बहुत प्रयास केलहुँ। मुदा दुर्योधन हठ कए रहल अछि। ओकरापर हमर किछु वश नहि चलि रहल अछि।तेँ हारि कए अहाँकेँ बजओलहुँ।अहाँकेँ इन्द्रप्रस्थ जाए पड़त। अहाँ पाण्डवसभकेँ कहबनि जे द्यूत निमंत्रण अस्वीकार कए देथि,एहिमे सामिल होएबाक लेल हस्तिनापुर नहि आबथि। युधिष्ठिरेकेँ बुझेबनि।दुर्योधन नहि बुझि सकैत अछि। मुदा युधिष्ठिर तँ बुद्धिमान अछि,आगू-पाछू सोचि सकैत अछि।एहि ठाम शकुनीक षड़यंत्र चलि रहल अछि,हुनकासभक लेल न्यायक कोनो संभावना नहि अछि।यदि ओ एहिमे सामिल हेताह तँ बहुत संकटमे पड़ि सकैत छथि। कारण दुर्योधनक बदलामे शकुनी पासा फेकत आ ओ बैमानी करबामे माहिर अछि।”

“हमर मोन तँ नहि मानि रहल अछि ,तथापि अहाँक आज्ञा मानि हम इन्द्रप्रस्थ जाएब।आगू भावी प्रबल।”

आखिर विदुर द्यूत निमंत्रण लए इन्द्रप्रस्थ पहुँचैत छथि।हुनका इन्द्रप्रस्थमे पाण्डवलोकनि बहुत स्वागत करैत छथिन। संगे अचानक अएबाक कारण पुछैत छथिन-

“दुर्योधन हस्तिनापुरमे द्यूतक आयोजन केलक अछि। ओहिमे सामिल होएबाक लेल तोरोसभकेँ बजाओल गेल अछि।”-विदुरक मुँहे द्यूत निमंत्रणक बात सुनितहि द्रौपदी चिंतित भए गेलीह।ओ युधिष्ठिरकेँ एकांतमे बुझबैत छथि-

"हमरालोकनिकेँ बरबाद करबाक षड़यंत्र अछि द्यूत निमंत्रण।एहिसँ हमरालोकनिकेँ अबस्स बचबाक चाही।"

"मुदा द्यूत निमंत्रणकेँ मना नहि कएल जा सकैत अछि। ई मान्य परंपरा आ क्षत्रिय धर्मक प्रतिकूल होएत।"

"हद भए गेल। जखन दुर्योधन अन्याय करबाक लेल प्रतिबद्ध अछि,तखन ओकरा संगे तँ तेहने व्यवहार कएल जाएत।आखिर हमरालोकनिकेँ आत्मरक्षाक अधिकार तँ होएबेक चाही ने।अहाँक हाथमे हमरालोकनिक भविष्य अछि।इन्द्रप्रस्थक नागरिक भविष्य सेहो अहींक कर्तव्य अछि। एहनमे अहाँ एकतरफा निर्णय कोना लए सकैत छी?"-द्रौपदी बजलीह।

"द्रौपदी सही कहि रहल छथि।अहाँकेँ हुनकर बातपर ध्यान देबाक चाही।दुर्योधनक चरित्र सभकेँ बुझल अछि। मामा शकुनीक कुसंगतिमे ओ बरबाद भए चुकल अछि। हमरा तँ नीकसँ बुझल अछि जे एहि द्यूतमे पासा दुर्योधन स्वयं नहि,अपितु ओकरा दिससँ शकुनी फेकत।शकुनी एहि क्षेत्रमे बैमानीक लेल जगप्रसिद्ध अछि।ओकर लोहा के नहि मानैत अछि।"-विदुर बजलाह।

"जखन अहाँकेँ सभ बात बुझल छल तखनहु द्युत निमंत्रण लए किएक अएलहुँ? अहाँकेँ शुरूए मे मना कए देबाक चाहैत छल।"-द्रौपदी बजलीह।

"हम अपना भरि बहुत प्रयास केलहुँ। धृतराष्ट्रकेँ बुझेबाक प्रयास केलहुँ। मुदा ओहो दुर्योधनक आगू विवश छथि। हारि कए हमरा आबए पड़ल।हम एतए अएलहुँ जरूर,मुदा हमरो इच्छा इएह अछि जे युधिष्ठिर हस्तिनापुर नहि जाथि।एहीमे सभक कल्याण अछि।हम तँ कहबे करबनि। आगू हुनकर मरजी।"-विदुर बजलाह।

"आदरणीय काकाजी!अहाँक बातक हम हृदयसँ आदर करैत छी।हमसभ आइ जीवित छी तँ अहींक मदति सँ अन्यथा वारुणावतमे हमसभ स्वाहा भए गेल रहितहुँ। से सभ जनितहुँ आ ई बुझितहुँ जे द्यूतमे हम हारि

जाएब,हम ओहिमे सामिल होएबासँ मना कोना कए सकैत छी?हम धर्म बिमुख आचरण नहि कए सकैत छी।"-युधिष्ठिर बजलाह।

"धर्म,धर्म की चिचिआ रहल छी।विनाश कालमे अहाँक वुद्धिभ्रष्ट कए देने अछि।"-से बाजि द्रौपदी तमसा कए ओहिठामसँ चलि गेलीह।

३१

युधिष्ठिर जूआ हारि गेलाह

नीक संग नीक व्यवहार करब उचित थिक।तहिना दुष्ट संग तेहने व्यवहार जरूरी होइत अछि। ई छोटसन बात यदि युधिष्ठिर बुझितथि,अपन आदर्शसँ अपनेकँ नहि गछारने रहितथि, तखन आइ भारतक भविष्य किछु आओर रहैत। मुदा ओकर भविष्यमे तँ लिखल छल सर्वनाश। लाखो लोककँ युद्धमे मरब-कटब लिखल छल। युद्ध जे धर्मक रक्षार्थ लड़ल गेल,जाहिमे एक्के वंशक लोक एक-दोसरक विरुद्ध छल, जाहिमे भीष्म पितामह सन वयोबृद्ध भूतकालमे लेल गेल प्रतिज्ञाक कारण अपने पौत्र-प्रपौत्रक विरुद्ध हथियार उठाबक लेल मजबूर भेल छलाह,कृपाचार्य,द्रोणाचार्य सन विद्वान ब्राह्मण अपने शिष्यक विरुद्ध युद्ध लड़ि रहल छलाह।एहन भयाओन युद्ध ने कहिओ भेल ने होएत। तकरे भूमिका हस्तिनापुरमे लिखल जा रहल छल।युधिष्ठिर सभ भाए,द्रौपदीक संगे हस्तिनापुर पहुँचि गेल रहथि। ओमहर दुर्योधन राति भरि शकुनी मामाक संग युधिष्ठिर संग होमए बला जूआ जीतबाक षड़यंत्रमे लागल छलाह। जूआ केना खेलाएल जाएत,युधिष्ठिरकँ केना ठगल जेतनि,द्रौपदीक संगे केना प्रतिशोध लेल जाएत,इएहसभ चर्चाक मुख्यविंदु छल ।

आगू की होमए जा रहल अछि से युधिष्ठिरकँ नीकसँ बुझल रहनि । ओ जूआमे हारि जेताह ताहिमे कोनो संशय नहि छल।शकुनीक छल-प्रपंचक आगू हुनकर न्यायप्रियताक कोनो अर्थ नहि रहत।ई सभ जनितहुँ ओ अपन

भाएलोकनिक संगे जूआ खेलेबाक लेल द्यूतक्रीड़ा भवनमे पहुँचलाह।ओतए भीष्म पितामह,धृतराष्ट्र,विदुर,कर्ण सहित हस्तिनापुरक समस्त गण-मान्यलोकनि उपस्थित छलाह। जूआ प्रारंभ भेल।ई तय भेल जे दुर्योधनक बदलामे जूआक पासा शकुनी चलताह।शकुनी जूआमे माहिर छलाह। युधिष्ठिर शुरूए सँ हारैत गेलाह आ हारिते रहि गेलाह।ओ समस्त संपत्ति,चीज-वस्तु,घोड़ा-गाड़ी,नौकर-चाकर सभ किछु हारि गेलाह।पराजयपर पराजय होइत गेलनि।बुद्धि काज केनाइ बंद कए देलकनि।तथापि, अंत धरि एहि आशामे छलाह जे अगिला बेर हुनकर भाग्य पलटी लेतनि,सभ किछु वापस भए जेतनि।भीम चिचिआइत रहि गेलाह।अर्जुन बेर-बेर अपन बाँहि फरकबैत रहि गेलाह।नकुल,सहदेव ईश्वरक प्रार्थना करैत रहलाह।मुदा किछु काज नहि अएलनि।युधिष्ठिर अपन राज्य हारलाह,अपना सहित चारू भाए हारलाह आ अंतमे द्रौपदीकेँ सेहो दाओपर लगा देलनि ।ओ सेहो दाओ हारि गेलाह।द्यूतक्रीड़ा भवनमे चारूकात पिहकारी पड़ि रहल छल।युधिष्ठिर सहित पाण्डवलोकनि हतप्रभ छलाह।किछु फुरेबे नहि करनि जे की करथि।मान-सम्मान सभ खाकमे मिलि चुकल छलनि।जे व्यक्तिसभ काल्हि धरि राजसूय यज्ञ कए चक्रवर्ती राजा बनि गेल छलाह से आइ भिखमंगोसँ खराप हालतिमे पहुँचि गेल छलाह।भीष्म सहित अनेक श्रेष्ठ जन मौन छलाह,दुखी छलाह।विदुर रहि-रहि कए दुर्योधनकेँ निवेदन करैत रहलाह जे ओ द्यूतक्रीड़ा केँ बीचेमे बंद करबाक आदेश देथि। मुदा ओ किछु नहि कए सकलाह।अपितु,दुर्योधनक विजयपर मोने-मोन प्रसन्न छलाह।दुर्योधन,दुश्शासन,कर्ण,शकुनी सहित ओकर सभ समर्थकलोकनि आनन्दमग्न छलाह। पाण्डवलोकनिक लेल अभद्र भाषाक प्रयोग कएल जा रहल छल। हुनकालोकनिक राजसी वस्त्र देहपर सँ हटा देल गेलनि। माथपरसँ मुकुट हटा देल गेलनि। देहमे मात्र एकटा वस्त्र छोड़ि देल गेलनि जाहिसँ ओ सभ नाङ्ट नहि भए जाथि। आब शुरू भेल असली खेल। दुर्योधन,कर्ण सभ

अपन-अपन प्रतिशोध द्रौपदीसँ चुकता करताह। ताहि लेल ओहि सभामे द्रौपदीकैं आनबाक लेल दूत प्रातकामीकैं पठाओल गेल।

ओमहर युधिष्ठिर जूआ खेलेबाक लेल गेलाह, एमहर द्रौपदी ओछाओनपर धराम दए खसलीह। ओ रजस्वला छलीह। स्वास्थ्य ठीक नहि लागि रहल छलनि।देह टूटि रहल छलनि,हल्लुक बोखार से छलनि। ऊपरसँ जूआमे सामिल युधिष्ठिरक भविष्यक चिंता से होइत छलनि। मोनमे तरह-तरहक भय भए रहल छलनि।

“दुर्योधनक दुष्ट चरित्रकैं जनितहुँ युधिष्ठिर अपनाकैं बचा नहि सकलाह। हुनका हस्तिनापुर नहि अएबाक चाहैत छलनि। युद्ध होइतैक तँ होइतैक। ओहुना तँ जूआमे सभ किछु दाओपर लागले अछि। पता नहि आजुक राति की करैत अछि?हमसभ बचि सकुशल इन्द्रप्रस्थ जाएब कि सभ किछु एतहि लुटा देब?”

द्रौपदी इएहसभ सोचैत रहि गेलीह, एक्को क्षण सुति नहि सकलीह। अनिद्रासँ हुनकर देहमे कनीको सक्क नहि लागि रहल छलनि।ओ पलंगपर पड़ल-पड़ल बेर-बेर करोट बदलि रहल छलीह।एतबहिमे केओ केबाड़ खटकटओलक-

“के अछि?”

“हम छी दुर्योधनक दूत प्रातकामी।”

द्रौपदी पलंगपरसँ उठैत छथि,अपन वस्त्र सरिअबैत छथि आ बहुत मोसकिलसँ आगू बढ़ैत छथि।केबाड़ खोलैत छथि।

“तूँ एतेक रातिमे असगर एहिठाम की करए आएल छह?”

“हमरा राजा दुर्योधनक आदेश कहबाक लेल अपने लग पठाओल गेल अछि।”

“दुर्योधन हमरा आदेश कोना दए सकैत छथि?हम महावीर पाण्डवलोकनिक पत्नी थिकहुँ,एहि ठाम पाहुन छी। तखन एना दुपहर रातिमे केओ हमरा कोना किछु कहि सकैत अछि?”

“युधिष्ठिर जूआमे सभ किछु हारि चुकल छथि।समस्त संपत्ति,चीज-वस्तु सहित स्वयंकेँ हारि चुकल छथि। ततबे नहि!”-से कहि प्रतिकामी चुप भए गेल।

“बाजह ने । चुप किएक भए गेलह।”

“नहि बाजि पाबि रहल छी महारानी!”

“जखन ओ अपन राज्य हारि गेलाह,स्वयंकेँ हारि गेलाह तखन बाँचिए की गेल?”

“ओ अपन चारू भाए सहित अहाँकेँ सेहो हारि चुकल छथि। तेँ दुर्योधन अहाँकेँ द्यूतक्रीड़ा भवनमे अएबाक लेल आदेश देलनि अछि।”

“हम ओतए किन्नहु नहि जाएब।हम रजस्वला छी,एकवस्त्रा छी,एहनमे हम ओतए नहि जा सकैत छी।तूँ हुनकासभकेँ पुछहुन जे युधिष्ठिर पहिने स्वयंकेँ हारलाह कि हमरा?यदि ओ स्वयंकेँ हारि चुकलाक बाद हमरा हारलाह तँ ओ कोना सही भेल?हम कोनो हुनके पत्नी नहि थिकहुँ। हमर चारिटा आर पति छथि। की ओहोसभ हमरा ओतए जेबाक सहमति देलखिन?”

“ओ सभ तँ अपन-अपन मुरी गाड़ने बैसल छथि।असहाय,असमर्थ भेल छथि।किछु बाजि नहि रहल छथि।”

“तूँ वापस जाह आ हुनकासभकेँ हमर प्रश्नक उत्तर देबाक लेल कहुन। ईहो कहि दहुन जे हम एहि हालतिमे ओहिसभामे कदापि नहि आबि सकैत छी।”

“जे आज्ञा महारानी!”-से कहि प्रतिकामी ओहिठामसँ प्रस्थान करैत अछि।

३२

द्रौपदीक विरोध

दुर्योधनक दूत, प्रतिकामी द्रौपदीक विरोध सुनि वापस चलि गेल। तकर बाद द्रौपदी वापस पलंग धरि नहि पहुँचि सकलीह। ओ ठामहि चिचिआ

उठलीह।दुपहर रातिमे हुनकर करुणक्रन्दन बहुत फटकी धरि सुनल जा रहल छल।मुदा गांधारी सहित परिवारक अन्य स्त्रीलोकनि अपन फाटक नहि खोललनि।पाण्डवलोकनि सेहो ई अबाज सुनलिन।युधिष्ठिर लाजसँ मुरी नीचाँ खसा लेलथि।अर्जुन छटपटा रहल छलाह।नकुल, सहदेव मौन धारण केने छलाह। मुदा भीम क्रोधमे ठाढ़ भए गेलाह।हुनकर भुजा फरकि रहल छलनि।ओ अपन गदा ताकि रहल छलाह। मुदा हुनकालोकनिक अस्त्र-शस्त्र पहिने छिनि लेल गेल छलनि। आब तँ ओसभ दुर्योधनक दास छलाह। हाय रे भाग्य! जे ने कराबए,जे ने देखाबए।द्रौपदी मोने-मोन युधिष्ठिरकेँ की की ने कहि रहल छलीह।

“एहन डरपोक,कापुरुषक संग विधाता ककरो नहि देथि। ओ झुठे बात-बातमे धर्मक चर्चा करैत रहैत छथि। मुदा व्यवहारमे घोर अधर्म कए रहल छथि। हम हुनका शुरूएमे जूआमे सामिल होएबासँ रोकने रहिअनि। बहुत बुझेलिअनि जे अहाँ हस्तिनापुर नहि जाउ। ओहिठाम महाषड़यंत्र भए रहल अछि,अहाँ जूआमे सभ किछु हारि जाएब। शकुनी जूआ खेलेबामे माहिर अछि,केहन-केहनकेँ ओ हरा चुकल अछि,अहाँ जूआमे ओकरा आगू किछु नहि छी। मुदा ओ नहि मानलाह,उलटे हमरापर तमसा गेलाह। आ ई चारू भाए?ई सभ तँ जेना युधिष्ठिरक आगू पठरू होथि।कोनो व्यक्तित्व जेना होएबे नहि करनि। यदि अर्जुन एक बेर मना कए दितथि तँ युधिष्ठिर आगू नहि बढ़ितथि। मुदा ओ सभ तँ ठहरलाह युधिष्ठिरक आज्ञाकारी अनुज। धन्य कही भीमेकेँ जे ओ समय-समयपर अपन बात रखलनि। मुदा हुनको किछु नहि चललनि। युधिष्ठिर सर्वनाश दिस बढ़ि गेलाह। आब की होएत? हे कृष्ण! हे कृष्ण!कहि ओ मुर्छित भए पलंगपर खसि पड़लीह।”

पलंगपर खसिते द्रौपदीक आँखि मुना गेलनि। ओही अवस्थामे ओ सुंदर वस्त्रसँ सुसज्जित चक्रधारी कृष्णकेँ देखि रहल छथि । ओ कहि रहल छथिन-

“कृष्णे! अहाँ किएक परेसान छी? अहाँक जन्मे एही लेल भेल अछि। अहाँकेँ एहि पृथ्वीकेँ पापीसभसँ मुक्त करेबाक अछि। पृथ्वी ओकरासभक पापसँ

तबाह छथि। आब महापरिवर्तन होएत। जे होएबाक अछि तकरे पृष्ठभुमि लिखल जा रहल अछि। हमसभ तँ निमित्तमात्र छी। अहाँ अपन कर्तव्य करैत रहू।हम सदिखन अहाँक संगे छी आ रहब।"

एतेक बाजि कृष्ण लुप्त भए गेलाह। द्रौपदी आँखि खोलैत छथि। अत्यन्त व्याकुल भए कृष्णकेँ ताकि रहल छथि। मुदा ओ कतहु नहि देखा रहल छथिन।

"की ई हमर मतिभ्रम छल? मुदा ओ तँ सशरीर उपस्थित छलाह।हुनकर अबाज एकदम स्पष्ट सुना रहल छलनि। हुनकर कहबाक तात्पर्य नीकसँ बुझा रहल छल।"

द्रौपदी इएहसभ सोचिए रहल छलाह कि केबाड़पर फेर खटकेँ अबाज भेल।केबाड़ सटल छल,बंद नहि छल। साइत द्रौपदीकेँ अनुमान रहनि जे ओ दूत फेर अएबे करत।से ओ आबि गेल। पलंगेपर सँ द्रौपदी पुछैत छथिन-

"की हमर प्रश्नक उत्तर दुर्योधन देलखुन?की भीष्म आ अन्य श्रेष्ठजन हमर हालतिक बारेमे बुझलनि?की ओ सभ दुर्योधनक आदशकेँ वापस नहि केलनि?की हमर अन्य वीर पतिसभ हमर दुर्दशापर प्रतिरोध केलनि?"

"किछु नहि भेल महारानी! अपितु,ओ सभ अहाँक समाद सुनि तेना अनठा देलनि जेना ओ सभ किछु सुनबे नहि केलथि।तथापि हम अहाँक बात सभ गोटेक सामनेमे दुर्योधनकेँ कहलिअनि। मुदा ओ अपन आदेश दोहरबैत बजलाह-

"द्रौपदी आब इन्द्रप्रस्थक महारानी नहि अपितु हमरालोकनिक दासी अछि।तेँ ओकरा अपन ठेसी छोड़बाक चाही।पहिने हमर आदेशक पालन कए एतए अएबाक चाही।तकर बादे जे निवेदन करबाक होइक से करए।दासी अपन भविष्य स्वयं निर्धारित नहि कए सकैत अछि।" से बजैत दुर्योधन अपन जाँघपर जोरसँ चाटी मारलनि आ जोरसँ अट्टहास कए उठलाह।सभ केओ देखैत रहि गेलाह। भीष्म सहित अनेक ज्येष्ठलोकनि अपन माथ पिटि रहल छलाह,मुदा किछु कएल नहि होनि।प्रतिरोधक बात तँ छोड़ू।हम की करितहुँ?हम ठहरलहुँ हुनकर

आदेशपाल। जे ओ कहलाह से सुनि लेलहुँ आ हुनकर आदेश सुनेबाक लेल अहाँ लग वापस आबि गेलहुँ।"-से कहि दूत जोर-जोरसँ कानए लागल।द्रौपदी ओकर बात सुनितहि क्रोधित भए गेलीह।ओ कहैत छथि-

"पहिने ई बताबह जे हमर समादपर भीष्म आ अन्य श्रेष्ठजन की कहलनि?की ओ सभ सेहो हमरा एहि अवस्थामे द्यूतक्रीड़ा भवनमे जएबाक समर्थन कए रहल छथि?जा धरि से स्पष्ट नहि होएत ओहि सभामे हम कदापि नहि जा सकैत छी।"

द्रौपदीक बाद सुनि दूत फेर वापस चलि गेल।ओकरा खाली हाथ वापस आएल देखि दुर्योधन चिकरल-

"दुश्शासन की ताकि रहल छह? द्रौपदी हमरालोकनिक दासी थिक।आब ओकरा पटर-पटर करबाक कोनो अधिकार नहि छैक। ओकरा तुरंत एहिठाम उपस्थित करह।"

दुर्योधनक आदेश सुनितहि दुश्शासन तेजीसँ द्रौपदीक भवन दिस बिदा भेलाह।

३३

द्रौपदीक प्रतिज्ञा

प्रतिशोधमे मनुक्ख राक्षस भए जाइत अछि। ओकर विवेक नष्ट भए जाइत छैक।विचार शक्ति लुप्त भए जाइत छैक। एहन मनुक्ख एक हिसाबे आन्हर भए जाइत अछि। अनकर तँ छोड़ू,एहन व्यक्ति अपनो हित रक्षा नहि कए सकैत अछि। सएह हाल दुर्योधन आ हुनकर सहयोगीलोकनिक भेल रहनि। द्रौपदी स्वयंवरमे अपन शक्तिहीनताक कारण ओ सभ असफल भेल छलाह। मुदा से के बुझैत अछि? ओ सभटा दोष द्रौपदीपर ,हुनकर पिता द्रुपद पर आ कृष्णपर लगबैत रहलाह। द्रौपदीक सौंदर्यसँ ओ सभ मोहित छलाह। ओ सभ द्रौपदीसँ बिआह

करए चाहैत छलाह। मुदा से नहि पार लगलनि।अर्जुन द्रौपदी स्वयंवरमे विजयी भेलथि। ई बात दुर्योधन,दुश्शासन,शकुनी केओ स्वीकार नहि कए सकलथि। आइ हुनका सभकेँ द्रौपदीसँ बदला लेबाक अवसर भेटि गेल छनि। मानव इतिहासमे साइते एहन कोनो अमानवीय घटना घटल होइक जाहिमे एकटा एकदम निर्दोष स्त्रीकेँ परिवारक समस्त ज्येष्ठलोकनिक उपस्थितिमे एहि तरहेँ अपमानित करबाक चेष्टा कएल गेल होइक। मुदा आइ सएह होमए जा रहल अछि।दुर्योधनक आदेशपर दुश्शासन द्रौपदीक कोठरीमे बिना कोनो पूर्वसूचनाकेँ पहुँचि जाइत अछि आ जोर-जोरसँ चिकरैत अछि-

"दुर्योधनक दासी द्रौपदी ध्यानसँ सुनै।अपन ठेसी छोड़ि दे। चुपचाप हमरा संगे चल।अन्यथा हम तोरा दुर्योधनक सामने द्यूतक्रीड़ा भवनमे घिसिआ कए लए जेबाक लेल बाध्य भए जाएब।"

"हम रजस्वला छी,एकवस्त्रा छी,नीकसँ वस्त्रो नहि पहिरि सकल छी।एहन हालतिमे हम श्रेष्ठलोकनिक सम्मुख कोना जा सकैत छी?"

द्रौपदी एतेक बाजले हेतीह कि दुश्शासन हुनकर केस कसि कए पकड़लक आ ओकरा घिचैत आगू बढ़ि गेल।द्रौपदी चिचिआइत रहि गेलीह। एही हालतिमे ओ द्रौपदीकेँ घिचने-घिचने द्यूतशालामे पहुँचि जाइत छथि। द्रौपदी कानि रहल छथि। अपन पतिसभसँ रक्षाक निवेदन कए रहल छथि।रहि-रहि कए ओहिठाम उपस्थित महापुरुष भीष्म,विदुर,कृपाचार्य,द्रोणाचार्यसँ निवेदन करैत छथि-

"अहाँसभ महान छी,धर्मक मर्म बुझैत छी,सभ तरहेँ सामर्थ्यसंपन्न छी। तखनहु हमर दुर्दशाकेँ चुपचाप देखि रहल छी। यदि युधिष्ठिर अपनाकेँ जूआमे पहिने हारि गेलाह तखन हमरा दाओपर कोना लगा सकैत छलाह? फेर हम कोनो हुनके पत्नी नहि छी। हमरा आर चारिटा पति छथि।युधिष्ठिर द्वारा हमरा दाओपर लगाबएसँ पहिने की हुनकोसभक सहमति लेल गेलनि?असगरे युधिष्ठिर ,ओहो

स्वयंकेँ हारि गेलाक बाद हमरा दाओपर कोना लगा सकैत छलाह? ई कतहुसँ सही नहि छल,पूर्णतः अनुचित छल,अन्यायपूर्ण छल।अहाँसभ एकर विरोध किएक नहि कए रहल छी?”

द्रौपदीक हृदयविदारक करुणक्रन्दन सुनिओ कए केओ किछु नहि बाजि रहल छल।सभ चुपचाप सुनैत रहि गेल। तकर बाद द्रौपदी भीष्म पितामह दिस देखि हुनकासँ अपन प्रश्न दोहरबैत छथि। आखिर भीष्म बाजि उठलाह-

“युधिष्ठिर स्वयं धर्मज्ञ छथि। हुनका अपन कर्तव्य आ अधिकारक ज्ञान छनि।ओ अहाँक पति छथि आ पतिकेँ अपन पत्नीपर अधिकार तँ सिद्ध अछि। अस्तु,अहाँकेँ जूआमे दाओपर लगाएब वा नहि लगाएब हुनकर विवेकपर निर्भर करैत छल।एहिमे केओ की कए सकैत अछि?सत्य इएह अछि जे ओ अहाँकेँ जूआपर लगओलाह आ दाओ हारि गेलाह।तखनो अहाँक आर पतिसभ मूकदर्शक बनल रहि गेलाह।कहाँ केओ युधिष्ठिरकेँ रोकि सकलथि?कहितथि ने जे अहाँ अपन अधिकारसँ बाहर जा रहल छी?द्रौपदी हमरोसभक अछि।मुदा ओ सभ किछु नहि बजलाह।तकर की अर्थ भेल से अहीं कहू?”

भीष्मक निर्णय सुनि द्रौपदी आर जोर-सोरसँ कानि रहल छलीह।हुनकर करुणक्रन्दनसँ संपूर्ण वातावरण उद्वेलित भए रहल छल।लगैत छल जेना ओ द्यूतशाला द्रौपदीक अश्रुसँ दहा जाएत।

“दुश्शासन ताकि की रहल छह? आब एकर नाटक बहुत भए गेल।हमरासभकेँ अपन काज करबाक चाही।एकर नखरा बरदास करैत रहबाक कोनो औचित्य नहि अछि। एकरा नाङट कए हमर जांघपर बैसाबह।कनी एकर सौंद्रयक लगीचसँ आनन्द लेल जाए।एकर कोन?जहिना पाँचटा पति तहिना किछु आओर सही।”

दुर्योधनक एना बजितहि दुश्शासन द्रौपदीक साड़ी घिचनाइ शुरू केलथि।हुनका एना करैत देखि भीम भयाओन क्रोधमे चिकरलाह-

“खबरदार दुश्शासन!यदि एहि हाथसँ तोहर छातीकेँ नहि फारि दी,आ तोहर तप्त खूनसँ द्रौपदीकेँ संतुष्ट नहि कए दी ताधरि हम चैन नहि लेब।ई सभ किछु हमर डरपोक ज्येष्ठ भ्राता युधिष्ठिरक कारण भए रहल अछि।ओ कतहुसँ राजा होएबाक योग्य नहि छथि।धिक्कार अछि हुनका।कम सँ कम द्रौपदीकेँ दाओपर लगेबासँ पूर्व हुनका हमरालोकनिसँ सहमति तँ लेबाक छलनि। ओ अपन अधिकारक सीमा टपि गेलाह अछि।अस्तु,आब हुनकर कोनो मान-सम्मान नहि अछि। अर्जुन ताकि की रहल छह? उठाबह अपन अस्त्र । दुष्ट दुर्योधनकेँ एकर पापी समर्थकसभक सहित तुरंत नष्ट करह।द्रौपदीक एहन अपमान सहैत रहि जाएब हमरा वशमे नहि अछि।”-भीम बजलाह।

“अहाँकेँ ज्येष्ठ भ्राताक लेल एहन अपमानजनक शब्दक प्रयोग नहि करबाक चाही। ओ जे किछु केलाह तकरा हम सही नहि मानि रहल छी। मुदा तकर प्रतिकार एना नहि कएल जा सकैत अछि। सभ किछुक समय होइत छैक। हमर सभक समय जरूर पलटत आ दुर्योधन अपन करनीक फल भोगबे करत। अहाँ धैर्य धारण करू।”-अर्जुन बजलाह।

ओमहर दुश्शासन द्रौपदीक साड़ी घिचिते रहल।द्रौपदी नाङ्ट होएबासँ बचबाक लेल आर कोनो उपाय नहि देखि कृष्ण भगवानककेँ स्मरण केलनि-

“हे कृष्ण! हे कृष्ण! आब हमर लाज राखू।हमरा नाङ्ट होएबासँ बचाउ।”

तुरंत आकाशवाणी भेल-

“चिंता नहि करू कृष्णे!हम अहाँक संगे सदिखन छी। न मे भक्तः प्रणस्यति।”

आकाशवाणी सुनि भीष्म,विदुर,युधिष्ठिर,अर्जुन सभ चकित छलाह।सभ एतबे सोचथि-

“ई तँ कृष्ण भगवानक अबाज लागि रहल अछि।आब कोनो चिंता नहि।द्रौपदीक लाज बाँचि गेलनि आ बाँचि गेल हमरोलोकनिक मान।”

दुश्शासन साड़ी खिचैत रहि गेल,साड़ी नमरैत रहि गेल।ओकर हालति देखए बला भए रहल छल।घामे पसीने ओ भिजि गेल छल। हाथसँ रक्त खसि रहल छलैक। लगैत छलैक जेना ओ कखनहु बेहोस भए खसि पड़त ।अंततोगत्वा, ओ खसिए पड़ल। साड़ी खतम नहि भेल।द्रौपदीकेँ नाङ्ट नहि कएल जा सकल।द्रौपदी निरंतर हे कृष्ण!हे कृष्ण! करैत रहि गेलीह।

द्यूतशालामे उपस्थित समस्त श्रीमानलोकनि हतप्रभ छलाह। स्वयं भीष्म कृष्ण भगवानक ध्यान कए रहल छलाह।दुर्योधन,शकुनी,कर्ण सभ छगुन्तामे रहथि।

“ई की भए रहल अछि?जरूर मायावी कृष्ण किछु जादू केलक अछि।”-दुर्योधन मोने-मोन सोचि रहल छलाह।ओमहर द्रौपदी अत्यन्त क्रोधित भए बजैत छथि-

“सुनू एहिठाम उपस्थित पाण्डवलोकनि !सुनथि भीष्म,कृपाचार्य,द्रोणाचार्य सहित अन्य महारथीलोकनि ! दुर्योधनक सहपर दुश्शासन घोर अमानवीय काज केलक अछि। आइ समस्त मानवता कलंकित भए चुकल अछि। भारतवर्षक गरिमा,ओकर संस्कृति आ धर्मसभ बरबाद कए देल गेल अछि। दुर्भाग्यक बात जे एहन भारी अन्याय,एहन अनुचित कृति भीष्म सन महान योद्धा आ कुलमे सभसँ श्रेष्ठक उपस्थितिमे कएल गेल अछि।हम एहि अन्यायक विरोध करैत छी आ करैत रहब।जाधरि भीम एकरा दुश्शासनक रक्तसँ धो नहि देताह ताधरि हम अपन केश खुजले राखब ।”

“हम अहाँक प्रतिज्ञा अबस्स पूर्ण करब। दुश्शासनक छातीकेँ चिरि कए ओकर तप्त रक्तसँ अहाँक केसकेँ सिंचित करब।ततबे नहि।जाहि जांघकेँ दुर्योधन अहाँ दिस देखा रहल छल तकरा अपन गदासँ तोड़ि कए देब,टुकड़ी-टुकड़ी कए देब, तखने निचेन होएब।”

द्रौपदीक भयाओन प्रतिज्ञा आ भीमक ललकार सुनि समस्त द्यूतशाला सुन्न पड़ि गेल।

३४

भीम प्रतिज्ञा

द्रौपदीक चित्कार आ भीमक गर्जनसँ द्यूतशाला हिलि रहल छल। लगैत छल जेना भावी महाभारत युद्धक आवाहन भए चुकल अछि। चारूकात प्रलयक बिहाड़ि बहि रहल छल। पाण्डवलोकनि बहुत उत्तेजित छलाह। ओ भीमक बातक समर्थनमे रहितहुँ युधिष्ठिर दिस बेर-बेर देखि रहल छलाह। मुदा युधिष्ठिर? ओ अखनहु शांत छलाह। जेना कोनो खास बात नहि भेल होइक।साइत ओ अखनहु युद्ध टारबाक व्योंत कए रहल छलाह।

"युद्ध ककरो लेल नीक नहि होइत अछि। एहिमे दुनू पक्षक विनाश निश्चित अछि। फेर कौरव सेहो अपने छथि। भने ओ सभ अनुचित काज कए रहल छथि,मर्यादाक समस्त सीमानकेँ टपि चुकल छथि,तेँ की? हमहूँ ओहिना करी? तखन हमरा हुनकामे की अंतर रहि जाएत?"

-युधिष्ठिर सोचि रहल छलाह। हुनकर मौन देखि हुनकर भाएसभ बहुत दुखी छलाह। दुखी होथि किएक नहि। ओ सभ गोटे महावीर छलाह,समस्त शस्त्र-अस्त्र चलेबामे माहिर छलाह। अर्जुन सन महावीर हुनका संगे छलखिन। भगवान कृष्ण स्वयं हुनकरसभक हित चिंतक छलखिन। तखन ओ सभ एहन असमर्थ सन किएक भेल छथि? किएक ने द्रौपदीक सम्मानक रक्षा कए पाबि रहल छथि?भीष्म,कृपाचार्य,द्रोण,सहित आर-आर श्रेष्ठ जन संभवतः धृतराष्ट्रक ऋणसँ दबल छलाह। नहि,नहि । भीष्म किएक कोनो ऋणसँ दबताह। ओ तँ सर्वश्रेष्ठ छलाह। मुदा मजबूर छलाह।किएक?अपने गलामे अपन प्रतिज्ञाक फसरी लगओने घुमि रहल छलाह।तेँ नहिओ चाहि कए अन्यायक संग दए रहल छलाह।

हुनका कोनो हालतिमे हस्तिनापुरक राजाक समर्थन करबाक छलनि,ओहीमे अपन स्वर्गीय पिताक छवि देखबाक छलनि। हाय रे हत भाग्य हस्तिनापुर! जे व्यक्ति विवेकशील छल,श्रेष्ठ छल जे एकरा विनाशसँ बचा सकैत छल,सेहो कोनो ने कोनो कारणवश व्यर्थ भए गेल छल,अपितु दुष्टेसभक सहयोगी बनि कए रहि गेल छल।

दुर्योधन,शकुनी आ ओकर समर्थक सभक हबा निकलि चुकल छल। दुश्शासन द्रौपदीक साड़ी घिचैत-घिचैत बेहोस भए खसि गेल छल।एहन माहौलमे द्रौपदीक कलपैत स्वरक प्रतिध्वनिक बीचमे भीम द्वारा लेल भयाओन प्रतिज्ञासँ गांधारी व्याकुल भए उठलीह।असलमे ओ द्रौपदीक अपमानसँ नहि,अपितु अपन दुष्ट पुत्रसभक भविष्यसँ चिंतित भए गेल छलीह। ओ धृतराष्ट्र लग जा कए हुनकासँ अनुनय-विनय करैत छथि-

“महाराज! आबो होसमे आउ।अन्यायक परकाष्ठाकेँ रोकि लिअ। अन्यथा महाविनाशक लेल तैयार भए जाउ।आबो हमर बात सुनू। पाण्डवकेँ हुनकर राज वापस कए दिअनु।द्रौपदी सहित पाँचो भाए अपन राज,इन्द्रप्रस्थ वापस होथु।भविष्यमे फेर एहन विनाशाकरी जूआ नहि खेलल जाए,अपने वंशक प्रतिष्ठा दाओपर नहि लागए से करू।”

“माताश्री सही कहि रहल छथि। युधिष्ठिरकेँ शकुनी मामा बैमानीसँ जूआमे हरओलथि। हुनकर एक्कोटा चालि सही नहि छलनि। तथापि अहाँ चुपचाप सभ किछु होमए देलहुँ। एकरा की कहल जा सकैत अछि? जे किछु भेल अछि, आगू होमए जा रहल अछि ताहि लेल अहाँ सोझे जिम्मेबार छी। हम चकित छी जे भीष्म पितामहो किछु नहि बाजि रहल छथि। कृपाचार्य,द्रोणाचार्य सन-सन नितिज्ञ मौन छथि। ई शुभ लक्षण नहि थिक।”-विकर्ण बजलाह।

“बहुत फटर-फटर कए रहल छह। तोरा कौरव कुलमे जन्मे नहि लेबाक चाहैत छल। आबि कोनो देरी नहि भेल अछि। तूँ अविलंब एहि दास-दासीक संग पकड़ि लएह।”-दुर्योधन बजलाह।

“विकर्ण सही कहि रहल छथि। माता गांधारीक अबाज सुनल जेबाक चाही। ओ कल्याणकारी अछि। मुदा दुर्भाग्य दुर्योधनकेँ गतानि लेने अछि। ओ ककरो उचितो परामर्श नहि सुनि रहल अछि।एहनमे हम एहि सभामे नहि रहि सकैत छी।”-से कहि कर्ण ओहिठामसँ उठि गेलाह।हुनका पाछू लागल विकर्ण सेहो चलि जाइत रहल। सभामे निस्तब्धता पसरि गेल छल।आब की होएत? सभ एही प्रश्नपर सोचि रहल छलाह। एतबहिमे धृतराष्ट्र बाजि उठलाह-

“हम गांधारीक विचारसँ सहमत छी। जूआमे युधिष्ठिरक हारल राज सहित सभ किछु हुनका वापस करैत छी। संगे आज्ञा दैत छी जे हुनकालोकनिकेँ ससम्मान वापस इन्द्रप्रस्थ जेबाक व्यवस्था तुरंत कएल जाए।”

धृतराष्ट्रक घोषणासँ माहौल एकदम बदलि गेल। द्रौपदी आश्वस्त लगलीह। पाण्डवलोकनि कृतज्ञतावश धृतराष्ट्रक चरणवंदना कए वापस हेबाक तैयारीमे लागि गेलाह।द्यूतसभा विसर्जित कए देल गेल।

३५

दोबारा जूआ

हस्तिनापुरमे द्यूतशालामे भीष्म पितामह,आचार्य द्रोण,आचार्य कृपाचार्य,महात्मा विदुर,हस्तिनापुर नरेश धृतराष्ट्रक उपस्थितिमे जे किछु भेल से ने आइ धरि भेल छल,ने संभवतः फेर कहिओ होएत।एक्के परिवारक लोक समस्त मर्यादाकेँ बिसरि अपने भौजीकेँ नाङट करबामे लागल छलाह। दुर्योधन अपन दुष्ट मामा शकुनीक छल-प्रपंचसँ युधिष्ठिरकेँ जूआमे वारंबार पराजित कए ओकर सभ किछु जिति लेने छलाह।बात ततबे पर नहि रुकल। अपने परिवारक सम्मानित

आ सर्वगुणसंपन्ना स्त्री,द्रौपदीकेँ सभक सामने मे प्रताड़ित कएल जा रहल छल,अपमानित कएल जा रहल छल। अन्यायक तँ पराकाष्ठा छल। किंतु,ओहू सभसँ धृतराष्ट्रक आत्मा नहि जागल छल। ओ तँ तखने सक्रिय भेलाह जखन हुनकर प्रिय पुत्र धरि संकट पहुँचि रहल छलनि। ओ द्रौपदीक प्रतिज्ञा आ भीमक चुनौतीसँ डरा गेल छलाह । तँ अनिच्छापुर्वक पाण्डवलोकनिक राज-पाट वापस करबाक घोषणा केलाह।मुदा ताहिसँ की होमए बला छल?की द्रौपदीक अपमान वापस हेतनि? असंभव।की एहि घोषणासँ ओहिठामक माहौलमे परिवर्तन भेल।एकदम नहि।भेल तँ ई जे दुर्योधन अपने घरमे धृतराष्ट्रकेँ दस हजार फज्झति केलकनि। की नहि केलनि?मोन होनि जे तुरंत हुनकर गला दबा दी। ओ तँ शकुनी बीचमे पड़ि गेल। हारल-झमारल धृतराष्ट्र दुर्योधनक बात मानि एक बेर फेरसँ युधिष्ठिर संगे जूआ खेलेबाक बात मानि लेलनि।

ओमहर पाण्डवलोकनि जूआमे सभ किछु हारि हतप्रभ छलाह। द्रौपदीक विषादपूर्ण भाव अखनहु हुनकामे स्पष्ट देखल जा सकैत छल। युधिष्ठिर बौक भए गेल छलाह। बुझेबे नहि करनि जे की करथि?एतबहिमे केओ केबाड़ खटखटओलक। धृतराष्ट्रक दिससँ एक बेर फेर जूआ खेलेबाक निमंत्रण आबि गेल छल। युधिष्ठिर एहनो हालतिमे आ द्रौपदीक विरोधक अछैत प्रस्तावकेँ मानि दोबारा जूआ खेलेबाक लेल बिदा होइत छथि।हुनकर भाए सभ पाछू-पाछू ओतए पहुँचैत छथि।हुनका सभकेँ चलि गेलाक बाद द्रौपदी असगरे अपन कोठरीमे चिंतामग्न बैसल छलीह। मोनमे तरह-तरहक विचार आबि रहल छलनि।

“हम तँ युधिष्ठिरकेँ बहुत बुझओलिअनि,मुदा ओ किछु सुनबाक लेल तैयार नहि भेलाह।कहि नहि एहि बेरक जूआक अंत की होएत? पता नहि,शकुनी कोन-कोन चालि चलत?”

ओ चिंतित ,विचारमग्न ओछाओनपर पड़ल छलीह,बेचेन छलीह।थोड़बे कालक बाद केओ समाद अनलक-

"युधिष्ठिर फेर अपन सभ किछु जूआमे हारि गेलाह। एहि बेर युधिष्ठिर स्वयं आ हुनकर भाएलोकनि आ द्रौपदी बाँचल छथि। मुदा हुनकालोकनिकेँ बारह वर्ष धरि वनवास आ तकर बाद एकवर्ष अज्ञातवासमे रहए पड़तनि।"

अनुज सहित युधिष्ठिर द्यूतक्रीड़ा भवनसँ पराजित भए बाहर आबि गेल छलाह।द्रौपदी लग जेबाक साहस किनको नहि भए रहल छलनि। आब कोन मुँहे द्रौपदीकेँ किछु कहथिन?की बजताह?लाजे मुँह नुकओने छलाह। अर्जुन,भीम,नकुल,सहदेव सभ भाए बताह जकाँ मुरी पिटि रहल छलाह।सभ युधिष्ठिरसँ तमसाएल छलाह। एक आदमीक गलत निर्णयक कारण संपूर्ण परिवार गर्तमे पहुँचि गेल छल। सभ गोटे चिंतामग्न अवस्थामे छलाह। एतबे मे दुर्योधनक समदिआ पहुँचल। ओ कहैत अछि-

"अहाँसभकेँ ई कोठरी तुरंत खाली करबाक आदेश अछि। बारह वर्षक वनवास जेबासँ पहिने सभटा मूल्यवान वस्त्र,गहना-गुड़िआ एतहि राखि देबाक अछि।"

समदिआ आदेश सुना कए चलि गेल। पाण्डवलोकनि सभ किछु ओतहि छोड़ि वनबासीक भेषमे द्रौपदी सहित हस्तिनापुरसँ बिदा भए गेलाह।

समय बलवान होइत अछि।जे युधिष्ठिर चक्रवर्ती राजा बनि गेल छलाह,जे स्वयं धर्मक अवतार मानल जाइत छलाह, जाहि परिवारमे अर्जुन सन पुरषार्थी व्यक्ति उत्पन्न भेल छलाह,भीम सन बली छलाह,नकुल-सहदेव सन गुणी छलाह से आइ अपन प्रिय पत्नी द्रौपदीक संगे देहमे मात्र एकटा धोती पहिरने पैरे-पैरे हस्तिनापुरसँ खाली हाथ जा रहल छथि। ओ सभ कतए जेताह,की खेताह,कतए रहताह तकर कोनो ठेकान नहि छल।सभ गोटे कालक वशीभूत भए रने-बने बौएबाक लेल विवश छलाह।एहि बेर कुंती हुनका सभक संगे नहि छथिन । ओ विदुरक संगे हस्तिनापुरेमे रहथिन।

बहुत मोसकिलसँ ओ सभ हस्तिनापुरक सीमासँ बाहर भेल छलाह। ओ सभ जाहि बाटे जाथि ,लग-पासक लोकसभ उत्सुकतासँ हुनकासभकेँ देखबाक लेल ठाढ़ भए जाइत छल। सभ दुर्योधनक अन्यायक चर्चा करैत छल। मुदा ओ सभ युधिष्ठिरोक चर्चा सेहो करबे करनि-

"जखन हुनका बुझल छलनि जे द्यूतमे ओ शकुनीसँ हारबे करताह तखन द्यूत निमंत्रण किएक स्वीकार केलनि? ई कोनो राजा जोगर काज नहि भेलनि। युद्ध होइतैक, ओहिमे हारि जइतथि तँ बात अलग छलैक। मुदा ओ तँ युद्धक नामे सँ डरा गेलाह। एहन दुबिधाग्रस्त व्यक्तिकेँ राजा हेबाक कोनो अधिकार नहि छल।"

"युधिष्ठिर सोझ व्यक्ति छथि। ओ नहि सोचि सकल हेताह जे अपने पितिऔत हुनकर सभक ई हालति करतनि? कनी-मनी घाटा सहि गेलासँ यदि पारिवारिक शांति होइत अछि तँ ओकर स्वागत हेबाक चाही। युधिष्ठिर सएह सोचने रहल हेताह।"

"की बाजि रहल छी? जखन युधिष्ठिर एक बेर सभ किछु हारि गेलाह, द्रौपदीक अपमान होइत सद्यः देखि लेलनि,तथापि फेर ओकरे सभक संगे ओहीठाम जूआ खेलमे गेलाह । ई की कहल जाएत? मूर्खता वा कायरता?"

"की कहल जा सकैत अछि?द्रौपदीओसँ गलती तँ भेबे केलनि। हुनका दुर्योधनक अपमान नहि करबाक छलनि। विनाशक जड़ि तँ ओएह थिकीह।ने ओ दुर्योधनकेँ इन्द्रप्रस्थक नवनिर्मित मायामहलमे पिछड़ैत देखि ओकरापर व्यंग करितथि,ने ओ आइ ई दिन देखितथि।"

द्रौपदी सहित पाण्डवलोकनि ग्रामीणसभक गप्प-सप्प सुनैत आगू बढ़ि गेलाह।

वनवास

मनुक्खक समय सभ दिन एक रंग नहि रहैत अछि। राजा,रंक,फकीर सभक समय बदलैत रहैत अछि।जे आइ उत्कर्षपर अछि तकर काल्हि भेने पतन भए सकैत छैक।जे आइ सभ तरहेँ आनन्दमे समय बिता रहल अछि से काल्हि अत्यन्त कष्टमे पड़ि सकैत अछि। एहि दुनिआमे केओ एकर अपवाद नहि अछि।जहिना भोर होइत अछि,संपूर्ण संसार भगवान सूर्यक किरणसँ प्रकाशित भए जाइत अछि,तहिना सूर्यास्तो होइत अछि। जे सभ किछु काल पहिने चमकि रहल छल से अन्हारमे अद्दश्य भए जाइत अछि।प्रकृतिमे वसंत ऋतुक आगमन होइत अछि ,चारूकात मनोरम द्दष्य रहैत अछि। तहिना पतझड़क समय सेहो अबैत अछि।गाछ-बिरीछ सभ पत्रहीन भए जाइत अछि। सभ ठाम उदासी पसरि जाइत अछि।एहि दुनिआमे एक सँ एक पैघ लोक भेलाह आ एक समयक बाद समाप्त भए गेलाह। किछु नहि बचलनि। काल्हि धरि जे भिखमंगा छल ,जकरा केओ नहि पुछैत छलैक से सभ सम्मानित पदपर पहुँचि जाइत अछि। ई समय छैक। सभ एकर प्रभावक अधीन अछि।पाण्डवलोकनिक संगे एहने किछु भए रहल छलनि। एतेक सम्मानित कुलमे जन्म लेलनि,उच्च शिक्षा प्राप्त केलनि,सभ तरहेँ निति कुशल छलाह,धर्मात्मा छलाह,युधिष्ठिर सन ज्येष्ठभ्राता छलखिन जे सपनहुमे ककरो अहित नहि केलखिन से आइ कालक प्रभावमे एकटा साधारण आदमी जकाँ बौआ रहल छथि।आ द्रौपदीक की कहबनि? कतेक अनुरागसँ द्रुपद हुनकर पालन-पोषण केलनि। सभ तरहेँ सौंदर्य संपन्ना छलीह ओ। द्रुपदकेँ कतेक अभिलाषा रहनि हुनका प्रतिए। इच्छा रहनि जे हुनकर बिआह ओहि समयक सर्वश्रेष्ठ राजकुमारसँ होनि। ताहि लेल ओ स्वयंवरक कठिन सर्त रखलनि जाहिसँ सही मानेमे वीर राजकुमारे ओकर पालन कए सकैत छलाह। मुदा भेल की?

द्रौपदीक बिआह एकटा गरीब ब्राह्मण परिवारक युवकसँ होएब तय भेलनि। ओएह स्वयंवरक सर्त पूर्ण कए सकलथि। स्वयंवरमे उपस्थित सभ राजकुमार असफल भए गेलाह। ई तँ संयोग छल जे ओ ब्राह्मण परिवार पाण्डव छलाह। स्वयंवरक सर्त पूर्ण केनिहार स्वयं अर्जुन छलाह। द्रौपदी प्रसन्न रहथि जे हुनकर बिआह सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर अर्जुनक संग हेतनि। मुदा भेल की? एक्के संगे पाँचो पाण्डवसँ हुनकर बिआह करए पड़लनि।द्रौपदी सेहो मानि गेलीह। तकर बादो चेनसँ नहि रहि सकलीह।दुर्योधन हस्तिनापुर नहि देलखिन। जंगल-झाड़ खाण्डवप्रदेश पाण्डवक हिस्सामे देल गेलनि।तकर बादो ओ सभ प्रयास केलनि,नव राजधानी बनओलनि,माया महल बनओलनि।राजसूय यज्ञ कए चक्रवर्ती राजा भेलाह युधिष्ठिर। मुदा तकर बाद की भेल? संयोगसँ द्रौपदीक मुँहसँ दुर्योधनक लेल अपमानजनक शब्द निकलि गेलनि। ओ शब्द परमाणु बमोसँ बेसी घातक सिद्ध भेल। ओकर बदला दुर्योधन द्रौपदीसँ लेलकनि। पाण्डव द्वारा जूआमे सभ किछु हारि जेबाक बाद ओ द्रौपदीकँ नाङ्ट करबाक हुकुम देलक। धन्य कही कृष्ण भगवानकँ जे ओ दुश्शासन द्वारा द्रौपदीकँ नाङ्ट करबाक समस्त प्रयास असफल कए देलनि। तकर बाद जे सभ भेल से जनिते छी। तकरे परिणाम भेल जे आइ पाण्डव द्रौपदी सहित जंगले-जंगल बौआ रहल छथि। कतहु ठेकाना ताकि रहल छथि। आखिर ओ सभ काम्यक वनमे निवास करबाक निर्णय करैत छथि। ओतहि बारह वर्षक समय बितबैत छथि।

पाण्डवलोकनिक बारह वर्षक वनवास प्रारंभ भेल।हुनकासभक संगमे किछु नहि छलनि। की खेताह,की पहिरताह,कतए रहताह?युधिष्ठिर सूर्योपासना केलनि। भगवान सूर्य हुनका अक्षयपात्र देलखिन। नित्यप्रति ओहिपात्रमे ताधरि भोजन उपलब्ध रहत जाधरि द्रौपदी स्वयं नहि खा लेतीह। तकर बाद ओहि दिन ओहि पात्रमे किछु नहि भेटि सकत। युधिष्ठिर अक्षयपात्र द्रौपदीकँ सुनझा दैत छथि। ओएह पात्र हुनकालोकनिक वनवासक समयमे जीवन रक्षा केलकनि। संगे

जंगलमे रहनिहार,हुनकासभक ओहिठाम आएल अतिथिलोकनिक भोजनोक व्यवस्था ओहीसँ भए जाइत छल।

वनवासक बारह वर्षक समयमे अर्जुन भगवान शिवसँ पाशुपतास्त्र प्राप्त केलथि।एकर अतिरिक्त हुनका भगवान शिवसँ 'रौद्रास्त्र' सेहो भेटलनि।ओ भगवान प्रजापति ब्रह्मासँ 'ब्रह्मास्त्र' 'प्रजापति अस्त्र' आ 'सर्वजयी ब्रह्मशीर अस्त्र' प्राप्त केलथि। भगवान इन्द्रसँ 'वज्र अस्त्र', 'इन्द्र अस्त्र', 'महेन्द्र अस्त्र' आ 'शक्ति अस्त्र' सहित बहुत रास अन्य शस्त्र सेहो ओ प्राप्त केलनि। देवराज इन्द्र आ अन्य देवताक पास जे शस्त्रसभ छल सेहो हुनका हस्तांतरित कए देल गेलनि। ओ यमराजसँ यमदन्द शस्त्र सेहो प्राप्त केलनि।भगवान सूर्य अर्जुनकेँ मंत्र द्वारा संचालित दिव्यास्त्र देलखिन।ततबे नहि,अर्जुनक जैविक पिता इन्द्र कर्णसँ ओकर कवच,कुण्डल पर्यन्त दानमे मांगि लेलनि आ कर्ण से सहर्ष दइओ देलकनि।

असलमे पाण्डवलोकनिक वनवासक बारह वर्ष भावी महाभारत युद्धक तैयारीमे बितल छल। अर्जुन शस्त्र-अस्त्रक संग्रह करबाक लेल पृथ्वीसँ पाताल लोक आ स्वर्गसँ यमपुरी धरि भ्रमण करैत रहलाह। ओही समयमे ओ चारिटा बिआह केलनि।नागलोकमे कौरव्य सर्पराज कन्या उलुपीसँ बिआह केलनि।तकर बाद कलिंगक राजकन्या आर्याक संग हुनकर बिआह भेलनि।मणिपुरक राजा चित्रवाहनक कन्या चित्रांगदा सन हुनकर चारिम बिआह भेलनि आ पाँचम बिआह कृष्णक बहिन शुभद्राक संगे भेलनि।युधिष्ठिर,भीम,नकुल,सहदेव सभ गोटे द्रौपदीक अतिरिक्त क्रमशःगोवसनक पुत्री देबिका,हिडिम्बा,चंदी राजाक पुत्री करेनमती,मद्रनरेश द्यूतमतक बेटी विजया(ममिऔत बहिन) सँ बिआह केलनि।सभ पाण्डव एकाधिक बिआह करैत गेलाह आ द्रौपदी किछु विरोध नहि केलखिन?आखिर किएक?ई प्रश्न ककरो उद्वेलित कए सकैत अछि।

जखन कखनहु द्रौपदीकेँ पाण्डव खास कए अर्जुनक बिआहक जनतब होइत छलनि तँ ओ मौन भए जाइत छलीह।मौन जे हुनकर विवशताक प्रतीक

छल। असलमे ओहि समयमे क्षत्रियलोकनि मे बहुविआह करबाक प्रचलन छल।कुंती,आ माद्री विभिन्न पुरुषक संग संयोगसँ पाँचटा पुत्र उत्पन्न केने रहथि। तकर बाद द्रौपदी स्वयं पाँचटा पतिसँ बिआहल गेल छलीह। पाँचो पतिक समय बाँटल छलनि। पाँच-पाँच वर्षक बाद ककरो द्रौपदीक संग एकसाल समय बिताबक अवसर भेटैत छलनि।तखन गुजर कोना होइतनि? रहल अर्जुन चारिटा आर बिआहक बात, से बिआह कम, युद्धक लेल कएल गेल रणनीतिक समझौता बेसी छल। द्रौपदी ई बात नीकसँ जनैत छलीह जे अर्जुन कतबो बिआह करताह,मुदा हुनकर असली पत्नी ओएह रहथिन।हुनका ई नीकसँ बुझल छलनि जे कौरव संगे युद्ध कोनो मामुली नहि होएत। ओ विश्वयुद्धे होएत। ओहिमे विजयी होएबाक लेल देश-विदेशक अधिकांश राजालोकनिक समर्थन जरूरी छल। आ बिआह तकर एकटा सुगम माध्यम छल।

३७

यक्षप्रश्न

वनवासक बारह वर्ष द्रौपदी पाण्डवलोकनिक संगे छाँह जकाँ रहलखिन। ओ कहिओ अपन सुख-दुखक ध्यान नहि केलनि। वनवास जएबासँ पहिने द्रौपदी पाँचो पाण्डवसँ उत्पन्न पाँचो पुत्रकेँ कृष्णक ओहिठाम शुभद्राक देख-रेखमे राखि देने छलीह। ओतहि अभिमन्युक पालन-पोषण सेहो भेलनि।अभिमन्यु पेटेमे रहथि तखन अर्जुन द्रौपदीकेँ चक्रव्युहक रचनाक विषयमे कहने रहथिन।खिस्सा पूर्ण नहि भए सकल छल।परिणाम भेल छल अभिमन्युक चक्रव्युहक अपूर्ण ज्ञानसँ। बादमे ओ महाभारत युद्धमे तकर उपयोग केलनि।बारह वर्ष वनवासक समयमे द्रौपदीकेँ अर्जुनसँ बेसी काल फराके रहए पड़लनि।अर्जुन युद्धक तैयारीमे लागल रहलाह।भीम हिडिम्बा लग अबैत जाइत रहलाह।हुनका हिडिम्बासँ घटोत्कच सन बीर पुत्र उत्पन्न भेलनि।आन भाए सभकेँ सेहो आन पत्नी

सभक संगे एक-एकटा पुत्र भेलनि।अर्जुनकेँ सेहो सभ पत्नीसँ एक-एकटा पुत्र भेलनि।

समय बितैत गेल। मुदा द्यूतशालामे दुश्शासन द्वारा कएल गेल अपमानकेँ द्रौपदी नहि बिसरि सकलीह।हुनकर माथक केस आब खुजले रहैत छनि। जहिआ दुश्शासनक रक्तसँ ओ सिंचित होएत तखने हुनकर केस बान्हल जेतनि,तखन द्रौपदीक आत्मा शांत हेतनि।द्रौपदी आब सुतैत नहि छथि। राति-राति भरि करओट बदलैत रहैत छथि। हुनकर जीवनक एकमात्र लक्ष्य आब दुश्शासन,दुर्योधनसँ प्रतिशोध लेब छनि।देखा चाही जे एकर परिणति की होइत अछि?कृष्ण सन सर्वशक्तिमान,अंतर्यामी हुनका बुझबैत रहि गेलखिन,युधिष्ठिर सन धैर्यवान शांत रहबाक आग्रह करैत रहलखिन,मुदा भेलैक की? ने द्रौपदी बदललीह ने भीमक प्रतिज्ञा कनीको झूस पड़लनि।वनवासक बारह सालक समयमे ओ सभ की की कष्ट ने सहलनि। राजपरिवारक होइतहु बिना कोनो सुविधाकेँ जीबैत रहलाह।मुदा धैर्य बनओने रहलाह।निरंतर अपन शक्ति बढ़बैत रहलाह आ अपन लक्ष्यकेँ कखनहु नहि बिसरलाह। ओ सभ सदिखन इएह दोहरबैत रहलाह-

"हमरालोकनिकेँ अपन राज वापस लेबाक अछि। दुर्योधन,दुश्शासन द्वारा कएल गेल अपमानक बदला लेबाक अछि।"

बारह वर्षक समय आब लगीच छल। पाण्डवलोकनिकेँ आब एक वर्ष गुप्तवासमे बितेबाक छलनि। यदि एहि अवधिमे दुर्योधनकेँ हुनकासभक पता चलि जेतनि तखन ओ सभ फेर बारह वर्ष वनवासमे रहताह। कहबाक माने जे तेहन प्रयास कएल गेल छल जे पाण्डव सभ दिन बनेमे रहि जाथि,ओतहि मरि जाथि,नष्ट भए जाथि आ दुर्योधन सभ दिन हस्तिनापुर आ इन्द्रप्रस्थक राजा बनल रहथि।एहने समयमे पाण्डव द्रौपदी सहित जंगलमे बौआ रहल छलाह। द्रौपदी बहुत थाकि गल रहथि। हुनका बहुत पिआस लागि गेल रहनि। संगमे पानि रहनि ने। दूर-दूर धरि कतहु पोखरि,इनार नहि देखेलनि। पिआससँ द्रौपदीक हालति

खराप होइत गेलनि।अंततः हुनका सभकेँ एकटा जलाशय देखेलनि। सभसँ पहिने सहदेव ओहिमे सँ जल आनए गेलाह। मुदा ओ वापस नहि अएलाह।तकर बाद क्रमसँ नकुल,अर्जुन,आ भीम गेलाह। मुदा केओ वापस नहि अएलाह। युधिष्ठिरकेँ बहुत चिंता भेलनि। ओ छलाह बुद्धिमान आ धैर्यवान। ओ सोचैत छथि-

"एहि जलाशयमे जरूर किछु गड़बड़ अछि जाहिसँ हमर भाए सभ संकटमे पड़ि गेलाह। ओ बहुत सावधानीसँ ओतए पैर रखैत छथि कि तुरंत ऊपरसँ अबाज भेल-

"सुनू युधिष्ठिर! पहिने हमर प्रश्नक उत्तर दिअ तखने एहि जलाशयसँ जल लेब अन्यथा अहूँक हालति अपन भाए सभ जेना होएत?"

"ओ सभ कतए छथि?"

"ओ सभ सामनेमे मृत पड़ल छथि।"

"हुनकर सभक ई हालति किएक भेलनि?"

"ओ सभ हमर चेतौनीपर ध्यान नहि देलनि।हम हुनकासभकेँ कहलिअनि जे पहिने हमर प्रश्नसभक उत्तर देथि तखने ओ एहि जलाशयसँ जल लए सकैत छथि। मुदा ओ हमर बातपर ध्यान नहि देलाह आ एक-एक कए मृत्यकेँ प्राप्त केलाह।"

"ई तँ बहुत जुलुम भेल।हम आब की करू?"

"पहिने हमर प्रश्नसभक उत्तर दिअ ।तकर बादे किछु...।"

"ठीक छैक। अहाँ प्रश्न पुछू।"

तकर बाद यक्ष प्रश्नसभ पुछैत गेल आ युधिष्ठिर तकर उत्तर दैत गेलाह।यक्षक अंतिम प्रश्न छल-

"एहि संसारमे सभसँ पैघ आश्चर्य की अछि?"

"हमसभ नित्यप्रति अपना सामनेमे लोकसभकेँ मरैत देखिओ कए सोचैत रहैत छी जे हम नहि मरब,एहिना रहब। इएह संसारक सभसँ पैघ आश्चर्य थिक।

युधिष्ठिरक उत्तरसभसँ यक्ष बहुत प्रसन्न भेल।ओ बाजल-

“हम अहाँक उत्तरसभसँ बहुत प्रसन्न छी। अहाँ हमरासँ वरदान मांगू।”

“यदि अहाँ हमरासँ सचमुच प्रसन्न छी तँ हमर भाए नकुलकेँ जीवन दान दिअनु।”

“पहिने अहाँ ई स्पष्ट करू जे अहाँ अर्जुन आ भीम सन वीर भाएकेँ छोड़ि नकुलकेँ जीवनदानक लेल किएक कहलहुँ?”

“एहि लेल जे माता कुंतीक ज्येष्ठ संतान हम तँ बाँचले छी। मुदा माता माद्रीक कोनो संतान बाँचल नहि छथि।नकुलकेँ जीबि गेलासँ हुनको ज्येष्ठ संतान बाँचल रहतनि।”

“हम अहाँक विचारसँ बहुत प्रभावित छी। अहाँ सचमुचकेँ धर्मक पालन करैत छी। हम अहाँक चारू भाएकेँ जीवनदान दैत छी।”

यक्ष द्वारा एना बजितहि चारू भाए जीवित भए गेलाह। तकर बाद यक्ष कहलखिन-

“असलमे हम अहाँक पिता धर्मराज थिकहुँ आ अहाँक परीक्षा लए रहल छलहुँ। हम बहुत प्रसन्न छी।अहाँ वरदान मांगू।”

“हम अहाँकेँ प्रणाम करैत छी। अहाँसँ भेंट भेल से परम सौभाग्यक बात।यदि अहाँ हमरासँ सचमुच प्रसन्न छी तँ हमरासभकेँ आशीर्वाद दिअ जे

हमसभ एक वर्षक अज्ञातवास सफलतापूर्वक बिता सकी आ कौरवलोकनिकेँ हमरासभक एहि बातक जनतब नहि होनि।”

“सएह होएत।अहाँसभक मनोकामना अबस्स पूर्ण होएत।”-से बाजि धर्मराज बिला गेलाह।

३८

अज्ञातवास

सुखक समय जहिना तुरंत बीति जाइत छैक तहिना दुखक एक-एक क्षण वर्षक समान लगैत रहैत छैक,बितनाइ मोसकिल लगैत रहैत छैक। लोक नहि बिसरि पबैत अछि अपन अपमान,नहि बिसरि पबैत अछि विश्वासघात जे अपने लोक द्वारा कएल गेल होइक आ जीवन भरि ओहि संतापसँ पिड़ित रहि जाइत अछि। पाण्डवलोकनिक जीवन एतेक दुखद भए जेतनि से के सोचि सकैत छल?हुनकर सभ किछु छुटि गेलनि। एहन राजसी सुखमे जीबि रहल व्यक्तिसभ कोन-कोन कष्ट ने भोगलाह,कोन-कोन विपत्ति ने हुनका सभक जीवन भरि पछोड़ करैत रहलनि। द्रौपदी सन सुंदरि स्त्रीक अछैत ओ सभ हुनका किछु सुख नहि दए सकलाह। कौरव राजसभाक अनेक सम्मानित सदस्यक समक्ष द्रौपदीकेँ दुर्योधन,दुश्शासन द्वारा अपमानित करबाक प्रयास कएल गेलनि आ ओ सभ असहाय भेल देखैत रहि गेलाह।इएह थिक समयक खेल।

ई संसार ककरो नहि अछि। के के ने एहिठाम आएल आ गेल। संगमे किछु नहि लए जा सकल। बाँचि गेलैक मात्र ओकर यश,कीर्ति। एहि पृथ्वीपर सँ दुर्योधनो गेलाह,युधिष्ठिरो गेलाह,के के ने गेलाह। मृत्युक बाद लोकक मात्र ओकर कीर्ति बचि जाइत छैक।ओकर नीक आ अधलाह काजक चर्चा होइत अछि।मुदा

दुर्योधनक नाम अबितहि लोक बाजि उठैत अछि,छिआ,छिआ । पाण्डव अखनहु आदरक पात्र बनल छथि। हजारो साल बीति गेल,मुदा पाण्डवलोकनिक जीवन गाथा अखनहु लोककेँ रोमांचित करैत अछि। लोक एक बेर सोचबाक लेल विवश भए जाइत अछि।आपसी चर्चामे अखनहु लोक बाजि उठैत अछि –“धन्य छलाह युधिष्ठिर,अद्भुत छल हुनकर धैर्य आ अनुकरणीय छल हुनकर धर्मनिष्ठा।”

प्रतिकूल समयमे ,अत्यन्त कष्टक अछैत पाण्डवलोकनि अपन उज्ज्वल भविष्यक लेल आशावान रहथि। ओ सभ युधिष्ठिरक नेतृत्वमे अपनाकेँ एक रखने रहलथि।आ द्रौपदी? ओ तँ अपन सर्वस्व पाण्डवलोकनिकेँ समर्पित कए देलनि।बारह वर्षक वनवास पूर्ण भए गेल अछि। आब एक वर्ष पाण्डवलोकनि अज्ञातवासमे बितओताह। तकर बादे हुनका सभकेँ अपन राज वापस भेटतनि।कहल जा सकैत अछि जे युधिष्ठिर बहुत सज्जन आ सोझ व्यक्ति छलाह ।तेँ ओ दुर्योधनक सर्त सभ मानैत चलि गेलाह। प्रश्न ई अछि जे ओ करबे की करितथि? सर्तक निर्धारण कोनो हुनकर हाथमे तँ छलनि नहि। ओ जूआक दाओ हारि चुकल छलाह ।तकर बाद हुनकापर विजेताक सर्तसभ थोपि देल गेल छलनि। तकर विरोधक अर्थ छल युद्ध। मुदा युद्ध लेल अखन पाण्डवलोकनि तैयार नहि छलाह। फेर युद्ध ककरासँ? भीष्म पितामह हस्तिनापुरक राजाक प्रति निष्ठावान रहबाक प्रतिज्ञा केने छलाह।द्रोणाचार्य,कृपाचार्य सभ अपन-अपन स्वार्थक कारण हस्तिनापुरक राजाक प्रति समर्पित छलाह। यदि युद्ध होएत तखन पाण्डवलोकनिक विरुद्ध ओ सभ ठाढ़ रहताह। से सोचिए कए युधिष्ठिर सहित सभ भाए व्याकुल भए जाइत छलाह। भने चलि जाओ राज,एहन ठाम युद्ध जितिओ कए की फएदा होएत?अपना भरि युधिष्ठिर युद्ध टारैत रहलाह। मुदा आब से असंभव बुझा रहल छलनि। एक वर्षक अज्ञातवास समाप्त होएत आ तखनहु यदि दुर्योधन युधिष्ठिरक राज वापस नहि करताह तखन आर विकल्पे की रहि जाएत?

पाण्डवलोकनि अज्ञातवासक लेल विराटनगरमे मत्स्य देशक राजाक ओहिठाम शरण लैत छथि। ओ सभ अपन नाम,परिचय सभ किछु बदलि लेने छथि।युधिष्ठिर कंक बनि विराटक राजाकेँ चौपड़ि खेलमे संग दैत छथि। भीम वल्लभ नामसँ हुनके ओहिठाम भनसिआक काज कए रहल छथि। उर्वशीक श्रापक अनुपालन करैत एक वर्षक लेल नपुंसक बनल अर्जुन, वृहन्नला बनि राजकन्या उत्तराकेँ नृत्यक शिक्षा दए रहल छथि।नकुल ग्रन्थिक बनि घोड़ासभक रक्षक बनल छथि।सभसँ छोट भाए सहदेव तंत्रिपालक नामसँ गाएक सेवामे व्यस्त छथि।द्रौपदी स्वयं सैरन्ध्रीक नामसँ रानीक परिचारिका बनल छथि।

विराटनगरमे पाण्डवलोकनिक एकवर्षक अज्ञातवासक समय बीति रहल छल। सभ किछु ठीके चलि रहल छल। अचानक दुर्घटना भेल। मत्स्य नरेश विराटक सार आ हुनकर प्रमुख सेनापति कीचकक नजरि द्रौपदीपर पड़लनि। ओ द्रौपदीक सौंदैर्यसँ मोहित भए गेलाह। कोनो तरहेँ हुनका वशमे करए चाहैत छलाह। कीचकक एहि प्रयासमे हुनकर बहिन सुदेष्णा सेहो सहयोगी छलखिन। ओ कोनो-ने-कोनो बहन्नासँ द्रौपदीकेँ कीचक लग जेबाक लेल विवश करैत रहैत छलीह। एक दिन कीचक अवसर देखितहि द्रौपदीपर आक्रमण कए देलथि। आहत,दुखी द्रौपदी बहुत मोसकिलसँ ओकर चाङुरसँ भागि कनैत-कनैत भीमक सामनेमे पहुँचलीह। हुनकर ई दशा देखितहि भीम चिकरि उठलाह। युधिष्ठिर हुनका शांत रहबाक बहुत प्रयास केलनि। मुदा भीम तँ भीम छलाह। ओ कतहु मानथि। आखिर भीम द्रौपदीकेँ एकांतमे अपन योजना कहलखिन । द्रौपदी भीमक इसारापर कीचकसँ एकांतमे भेंट करैत छथि ।दूपहर रातिमे कीचक अपनाकेँ धन्य बुझि द्रौपदी संग ओझरेबाक प्रयास करैत छथि। ताबतमे भीम कीचकपर आक्रमण कए दैत छथि। भीमक गदासँ आहत कीचक भयाओन चीत्कारक संग प्राण त्याग कए दैत अछि। कीचकक मृत्युक समाचार बिजलौका जकाँ चारू कात पसरि गेल। ई समाचार दुर्योधनो धरि पहुँचलनि। ओ बुझि गेलाह जे कीचकक

वध कोनो सामान्य व्यक्तिक वशक बात नहि अछि। जरूर पाण्डवलोकनिक एहिमे हाथ छनि।राजा विराट कीचक बिना बहुत अब्बल भए गेल रहथि। बस,इएह अवसर छल। दुर्योधन कर्ण संगे राजा विराट पर आक्रमण कए देलनि। हुनकर अनुमान छलनि जे यदि पाण्डव विराटक ओहिठाम नुकाएल छथि तखन ओ सभ विराट नरेशक रक्षाक लेल अबस्स आगू अओताह। तखन हुनकर अज्ञातवास स्वतः भंग भए जेतनि । पाण्डवलोकनि फेर बारह वर्ष धरि वनवासमे रहताह।मुदा से भेल नहि।

३९

दुर्योधन द्वारा विराट नगरपर आक्रमण

कीचक वधक उपरान्त राजा बिराट बहुत दुर्बल भए गेलथि।मत्स्य देश बहुत समृद्ध राज्य छल। ओहिपर कबजा कए ओकर अकूत संपदाकेँ लूटि लेबाक लेल दुर्योधन आ कर्ण विराटपर आक्रमण कए देलनि। संयोगसँ विराट ओहि समयमे कतहु बाहर गेल रहथि।हुनकर पुत्र उत्तर कुमार युद्धक समाना करबाक लेल बिदा भेलाह।अर्जुनकेँ बुझल छलनि जे उत्तर कुमार कनीको काल युद्धमे नहि ठहरि सकत। अपितु जानोसँ हाथ धोएत।

“मत्स्य नरेश बिराट हमरालोकनिकेँ घोर संकटक समयमे आश्रय देलनि ।अस्तु,हमरसभक कर्तव्य अछि जे एहि विपत्तिक समयमे हमसभ हुनकर रक्षा करिअनि।”-अर्जुन सोचलथि। ओ युधिष्ठिरसँ एहि विष्यपर चर्चा केलनि ।ओहो हुनकर विचारक समर्थन केलनि।मुदा उत्तर कुमार एहि लेल तैयार नहि होथि।ओ अर्जुनकेँ चिन्हि नहि रहल छलाह।मुदा अर्जुन जेना-तेना हुनका मनओलथि।युद्धमे उत्तर कुमारक संगे बृहन्नलाक भेषमे अर्जुन सेहो गेलथि। युद्ध शुरू होइतहि उत्तर कुमार जान बचा कए भागि जेबाक व्योंतमे लागि रहल छलाह कि अर्जुन आगू बढ़ि युद्धक दशा बदलि देलनि। अर्जुनक वाणसँ आहत कर्ण आ दुर्योधन जान

बचा कए भगलाह। ओतहि स्पष्ट भए गेल जे बृहन्नला आर केओ नहि,अपितु स्वयं अर्जुन छथि। दुर्योधनक हिसाबे पाण्डवलोकनिक अज्ञातवास भंग भए चुकल छलनि। मुदा से भेल नहि। ज्योतिषीलोकनिक गणनाक अनुसार अज्ञातवासक एक सालक समय पहिने बीति गेल छल। राजा विराट पाण्डवलोकनिक असली परिचय पाबि बहुत प्रसन्न भेलाह। संगे हुनकालोकनिक संग भेल अपमानजनक व्यवहारक लेल क्षमा याचना केलाह।

“क्षमाक तँ प्रश्ने नहि उठैत अछि। हमसभ अहाँक कृतज्ञ छी जे संकटक समयमे अहाँक ओहिठाम शरण भेटल।हमसभ अहाँक ऋण कोना चुकाबी से नहि बुझा रहल अछि।”-युधिष्ठिर बजलाह।

“ऋणक तँ कोनो प्रश्ने नहि अछि।अहाँसभ दुर्योधनक आक्रमणक विरुद्ध हमरालोकनिक रक्षा केलहुँ नहि तँ ओ हमरासभकेँ निश्चित पराजित कए देने रहतथि।हमसभ अपनेलोकनिक बहुत कृतज्ञ छी। तेँ हमसभ उपहारस्वरुप उत्तराक बिआह अर्जुनक संगे करए चाहैत छी।कृपया अपन स्वीकृति देल जाए।”-राजा विराट बजलाह।

“ई संभव नहि अछि। उत्तरा हमर शिष्या छथि।हम हुनका सभ दिन अपन पुत्री जकाँ देखलिअनि अछि।हम हुनकासँ बिआह कोना कए सकैत छी?हँ,एकटा काज भए सकैत अछि।”-अर्जुन बजलाह।

“कहू,कहू। की कएल जा सकैत अछि?”

“उत्तराक बिआह शुभद्रापुत्र अभिमन्युक संगे कएल जाए।”

“बहुत नीक विचार।हमसभ सहर्ष एहि लेल तैयार छी।”

समस्त पाण्डव परिवारक उपस्थितिमे उत्तराक बिआह अभिमन्युक संगे संपन्न भेल।पांचाल नरेश द्रुपद,हुनकर पुत्र दृष्टदुम्न,बलराम,सुभद्रा,द्रौपदीक पाँचो पुत्र,सहित अनेक प्रमुख राजालोकनि एहि अवसरपर उपस्थित छलाह। द्रौपदीक प्रसन्नताक तँ अन्ते नहि छलनि। एक जुगक बाद ओ अपन पाँचो संतानसँ भेंट कए

रहल छथि। मोनमे तरह-तरहक सपनासभ आबि रहल छनि। पाँचो पुत्रकेँ एहिना सुंदर कनिआँसभ सँ बिआह करतीह। ओ सभ आनन्दपूर्वक इन्द्रप्रस्थक राज महलमे रहताह। तेरह वर्षक वनवासक अन्त भए गेल छल। सभ किछु समान्य भए जाएत। दुखक समयक अंत भए जाएत।युधिष्ठिर फेरसँ राजा बनताह। द्रौपदी महारानी बनतीह।द्रौपदी आर की की ने सपनाइत रहलीह।देखा चाही भविष्य की रूप लैत अछि?

तेरह वर्षक वनवास आ अज्ञातवासक बाद पाण्डवलोकनिकेँ उम्मीद रहनि जे हुनकर राज वापस भेटि जेतनि।एही उम्मीदसँ राजा द्रुपद अपन राजपुरोहितकेँ हस्तिनापुर पठओलखिन। भीष्म, विदुर, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य,कर्ण, दुर्योधन सहित समस्त कौरवलोकनिक उपस्थितिमे ओ पाण्डवलोकनिक समाद सुनओलक-

“पाण्डवलोकनि भीष्म सहित सभ जेठलोकनिकेँ प्रणाम कए रहल छथि। तेरह वर्षक वनवासक बाद ओ सभ वापस आबि गेल छथि आ अपेक्षा करैत छथि जे हुनकर सभक इन्द्रप्रस्थ वापस दए देल जेतनि।”

“से केना होएत? ओ सभ तँ अज्ञातवासक सर्त पूरा नहि कए सकलाह। ओ सभ अज्ञातवासक एलसाल पूर्ण करबासँ पहिने विराटनगरमे चिन्हल जा चुकल छलाह।अस्तु,हुनकालोकनिकेँ बारह वर्ष आर वनवासमे रहए पड़तनि। तकर बादे ने किछु आर संभव होएत?”-दुर्योधन बजलाह।

ओकरा धृतराष्ट्र कहलखिन जे ओ स्वयं एकटा समदिआ युदिष्ठिर लग पठओताह।ओ सभ हुनकर प्रतीक्षा करथि,अगुताथि नहि।ओ सभटा बात पाण्डवलोकनिकेँ कहलकनि। एहि तरहेँ समदिआ हस्तिनापुरसँ बिना किछु स्पष्ट आश्वासनकेँ वापस भए गेल। तकर थोड़बे दिनक बाद धृतराष्ट्रक समाद लए संजय पाण्डव सभ लग पहुँचलाह। धृतराष्ट्रक समाद छलनि-

"पाण्डवलोकनि सकुसल छथि से बहुत प्रसन्नताक बात। तेरह वर्षक वनवासमे एकवर्ष अज्ञातवासक अवधिपर विवाद अछि। दुर्योधनक अनुसार अज्ञातवास पूर्ण होमएसँ पहिने पाण्डवलोकनि चिन्हल जा चुकल रहथि। तेँ हुनकासभकेँ फेर बारह वर्ष वनवासमे रहबाक हेतनि। अस्तु,एहि विवादमे हुनकालोकनिकेँ नहि पड़बाक चाहिअनि।एहिसँ ओ सभ अनेरे परेसानीमे पड़ताह। नान्हिटा राज लेल आपसमे झंझटि नीक नहि। आइ ने काल्हि सभ मरत। ककरो संगे किछु नहि जाएत। दुर्योधन तँ बुझि नहि रहल अछि,सभ दिनसँ जिद्दी अछि। मुदा युधिष्ठिर तँ सहनशील,विद्वान आ धर्मपारायण छथि। हम तँ हुनका कहबनि जे राजा बनबाक प्रयासमे नहि पड़थि। जे जीवन बाँचल छनि से भजन,कीर्तनमे बिताबथि। शांतिक लेल इएहटा समाधान बुझाइत अछि।"

संजयक बात सुनि भीम तामसे लाल भए गेलाह। ओ चिकरि उठलाह-

"संजय!

जा कए कहि दहुन। युद्ध होएबे करत। आब युद्धकेँ केओ टारि नहि सकैत अछि।कारण ओ सभ अन्यायक पराकाष्ठाकेँ टपि चुकल छथि।क्षत्रिय अपन संतानकेँ एही लेल जन्म दैत छथि जे ओ न्यायक लेल लड़त,ने कि एहि लेल जे भीख मांगि कए जीवन बिता लेत।आखिर हमरा अपन प्रतिज्ञा पूरा करबाक अछि।दुश्शासनक जाँघ तोड़ि ओकर रक्तसँ पांचालीक केसकेँ नहेबाक अछि।तखने पांचाली अपन केस बान्हि सकतीह। हुनकर खुजल केस हमरा सभक पुरुषार्थक लेल चुनौती अछि। हम आब एक्को क्षण बिना विलंब केने हस्तिनापुरपर आक्रमण करबाक पक्षधर छी।"

"तँ की भीमक बातकेँ पाण्डवलोकनिक विचार मानि हम धृतराष्ट्र लग वापस जाइ?"-संजय बजलाह।

“हमसभ युद्ध नहि चाहैत छी। मुदा यदि हमरालोकनिक न्यायोचित अधिकार वापस नहि होएत तखन हमसभ की करब?बाबाजी तँ नहि भए जाएब?तखन तँ युद्ध होएबे करत।”-युधिष्ठिर बजलाह।

संजय सभकेँ यथोचित कहि हुनकर सभक समाद लए हस्तिनापुर वापस भए गेलाह।

४०

युद्धक परिणाम

भावी प्रबल होइत अछि।युधिष्ठिर सभ दिन कौरवलोकनिक दुष्टता सहैत रहि गेलाह। ओ कहुना कए आपसी विवादकेँ शांतिपूर्ण समाधान चाहैत छलाह। अंत-अंत धरि युद्ध टारैत रहलाह।तेँ ई जनतहु जे शकुनी बइमान अछि,ओकरासँ जूआमे पार पाएब युधिष्ठिर के कहए,ककरो लेल मोसकिल छैक,ओ दुर्योधनक द्यूत निमंत्रण मानि लेलाह ,हस्तिनापुरमे आयोजित जूआमे सामिल भेलाह आ सभ किछु हारि गेलाह।बारह वर्ष जंगलमे बौआइति रहि गेलाह ।सर्तक अनुसार एकवर्ष अज्ञातवासमे बितओलाह।सामान्यतः तेरह वर्षक बाद इन्द्रप्रस्थ युधिष्ठिरकेँ वापस हेबाक चाहैत छलनि। मुदा सभ किछु सोचलाहा थोड़बे होइत छैक।तेरह वर्ष बीति गेलाक बादो दुर्योधन हुनकर राज्य वापस करबाक लेल इच्छुक नहि बुझाइत छथि। अंतमे भगवान कृष्ण स्वयं सेहो शांतिदूत बनि कए दुर्योधन ओहिठाम गेलाह।

“बस पाँचटा गाम दए दिअनु आ पाण्डव ओहीसँ संतोष कए लेताह।”

मुदा दुर्योधन ताहू लेल तैयार नहि भेलाह।

“बिना युद्धकेँ किछु नहि भेटतनि।”-दुर्योधन स्पष्ट कए देलक।भगवान कृष्ण आखिर युद्धक घोषणा कए देलनि।

“आब युद्ध अवश्यंभावी थिक।”

कुरुक्षेत्रमे दुनू पक्षक सेना युद्धक लेल तैयार छल। दुनू दिस एक सँ एक महान योद्धा सभ युद्धक लेल फाँर कसि लेने रहथि। कृष्ण अर्जुनक सारथी बनि गेल छलाह। ओ अर्जुनक रथकेँ युद्धक्षेत्रमे आनि लेने छलाह। सामनेमे भीष्म पितामह,द्रोणाचार्य,दुर्योधन सहित अनेक कुटुम्बीलोकनि युद्ध करबाक लेल तत्पर छलाह। एहन समयमे अर्जुनकेँ अचानक विषाद उत्पन्न भेलनि। ओ कृष्णकेँ सविनय कहैत छथि-

"कृपया रथकेँ रोकि दिअ। हम युद्ध नहि करब।"

"ठीक युद्ध शुरू होएबा काल अहाँकेँ एहन कुबुद्धि कोना भेल?ई समय आगू-पाछू करबाक नहि अछि।युद्धक घोषणा भए चुकल अछि।दुनू पक्षक योद्धालोकनि शंखनाद कए चुकल छथि। आब की?"

"अहीं कहू जे हम भीष्म पितामह,गुरू द्रोणाचार्य,कृपाचार्य सभसँ कोना युद्ध कए सकैत छी? ओ सभ तँ हमरा नेनेसँ पालन-पोषण केलनि।हम आइ जे किछु छी से हुनके कारण छी। ओएह सभ हमर प्रेरणा श्रोत छथि,हमर मार्गदर्शक छथि।"

अर्जुनक दुबिधा देखि कृष्ण बहुत परेसान भए गेलथि,चिंतित भए गेलथि।ओ हुनका अनेक प्रकारसँ बुझेबाक प्रयास केलखिन।

"अहाँक दुबिधा व्यर्थ अछि।अहाँकेँ वशमे अछि की?किछु नहि।जखन जकरा मरबाक छैक से मरबे करत।जे जन्म लेलक अछि से एहि दुनिआसँ जेबे करत। तँ अहाँ अपन मोनसँ संकोच हटा लिअ।अपन कर्तव्य करू।परिणामक चिंता नहि करू।"

"हम ई बात कोना मानि लिअ।हमरा हाथे ओ सभ मारल जाथि से हम कोना बरदास कए सकब?अपन स्वजनक रक्तमे सानल राज लइए कए हम की करब?एहिसँ बहुत नीक होएत जे हमसभ एहिना समय बिता ली।हमर मोन एहन भयाओन हिंसाक करबाक स्वीकृति नहि दए रहल अछि।"

महाभारतक युद्धभूमिमे अर्जुनक विषादपूर्ण वार्तालाप सुनि भगवान कृष्ण बहुत चिंतामे पड़ि गेलाह। ओ हुनका बुझेबाक भरिसक प्रयास केलखिन जाहिसँ ओ फेरसँ अपन कर्तव्य करबाक लेल तत्पर होथि।

“मनुक्खक देह नष्ट होइत अछि।मुदा आत्मा अमर अछि। ओ कहिओ ने मरैत अछि ने जनमैत अछि। जहिना वस्त्र पुरान भेलापर बदलि लेल जाइत अछि,तहिना आत्मा अपन जीर्ण शरीरकेँ मृत्युक बाद बदलि लैत छथि। एहिठाम जतेक लोक अहाँकेँ देखा रहल छथि से अखन धरि कतेको बेर जन्मि चुकल छथि,मरि चुकल छथि।तेँ अहाँ कोनो बातक चिंता नहि करू।ई संसार सभ दिन एहिना चलैत रहल अछि आ चलैत रहत। जे पुरुषार्थी अछि,वीर अछि,अपन कर्तव्यक पालन करैत अछि सएह विजयी होइत अछि,संसारमे भोग करैत अछि अन्यथा सभ दिनक लेल अयशक भागी होइत अछि। अहाँ अपन कर्तव्य करू। रणभूमिमे आएल छी तँ तकर मर्यादाक पालन करू ,युद्ध करू। यदि जिति गेलहुँ तँ राज्यभोग करब आ मरि गेलहुँ तखन स्वर्ग जाएब।”

“अहाँ जे एतेक ज्ञानक बात कहि रहल छी तकर की प्रमाण अछि?हम कोना मानि लिअ जे ई महापुरुषसभ मरिओ कए अमर रहताह ,किंवा तकर अयश हमरा नहि होएत आ तकर बादो हम राज्य सुख कए सकब?”

“तखन अहाँ हमर दिव्यरूप देखिए लिअ।हम एहि लेल अपनेकेँ दिव्यचक्षु दैत छी कारण सामान्य आँखिक वशमे नहि अछि जे ई सभ देखल जा सकए।”

तकर बाद अर्जुनकेँ भगवान कृष्ण दिव्यदृष्टि दैत छथि। हुनकर अद्भुत रूप,असाधारण विस्तार आ अनन्त शक्तिसंपन्न छवि देखि अर्जुन डरा गेलाह,चिचिआ उठलाह-

“बंद करू ई सभ।हमरा नहि चाही दिव्यदर्शन।अहाँ जहिना छलहुँ तहिना फेरसँ भए जाउ।”

कृष्ण भगवान बहुत मंद-मंद हँसि रहल छलाह।कहलखिन-"कोनो बात नहि।अहाँकेँ जहिना नीक लागए हम तहिना भए जाएब।"ओ फेरसँ अपन मनुक्खक रूप धए लेलनि।अर्जुन कौल जोड़ने प्रार्थना कए रहल छलाह-

"हे प्राणप्रिय मित्र!हे माधव!हे कृष्ण!

हमरासँ जे किछु गलती भेल,जे अज्ञानतामे अपराध भेल से क्षमा करब।हम अहाँकेँ संगी बूझि जे तंग करैत रहलहुँ ताहि लेल लज्जित छी,क्षमाप्रार्थी छी।"

"छोड़ू ई बात सभ।ई कहू जे आबो अहाँक मोहभंग भेल कि नहि।आबो अहाँकेँ कर्तव्यक ज्ञान भेल कि नहि?"

"की बात करैत छी। हमर मोह साफे नष्ट भए गेल,हम आब पूर्णतः सजग छी।अहाँ हमर सभ किछु छी,हम अहाँक शरण छी,अहाँ जे कहब से हम करब।"

"तखन ताकि की रहल छी।उठाउ गाण्डीव आ सामने ठाढ़ शत्रुसभक संहार करू।हम सदिखन अहाँक संगे छी आ रहब। जतए धर्म अछि ततहि विजय अछि।"

४१

भीष्मक शरशय्या

आखिर महाभारत युद्ध प्रारंभ भेल। ओहि समयमे अर्जुन पैंसठि वर्षक रहथि। कृष्ण तिरासी वर्षक आ भीष्म एक सए चालीस वर्षक छलाह।दृष्टदुम्न पाण्डव सेनाक सेनापति बनाओल गेलाह।भीष्म पितामह कौरव सेनाक प्रथम सेनापति नियुक्त कएल गेलाह। वयोवृद्ध भीष्म दस दिन धरि महाभारत युद्धमे सामिल रहलाह।ओहि बीच पाण्डव आ कौरव सेनाक अतिशय क्षति भेल।भीष्मक रौद्र रूप देखि पाण्डव हतप्रभ भए गेल रहथि।लागनि जे भीष्मक अछैत ओ सभ निश्चित रूपसँ युद्ध हारि जेताह। ओमहर भीष्म अवसर भेटलाक अछैत पाण्डव

कोनो भाएक प्राण नहि लेथि। ताहि बातसँ दुर्योधन बहुत अप्रसन्न रहैत छलाह। ओ हुनका कैक बेर उचित-अनुचित कहबो कएलनि। मुदा भीष्म अपना हिसाबे युद्ध लड़ैत रहलाह। कृष्णाक परामर्शपर युधिष्ठिर भीष्मसँ हुनकर शिविरमे भेंट केलखिन आ कहलखिन-

"अहाँक अछैत तँ हमसभ ई युद्ध कदापि नहि जिति सकब। तेँ अहाँ अपन विजयी होएबाक आशीर्वाद वापस लए लिअ।"

"हम अपन आशीर्वाद कोना वापस लए सकैत छी? एकटा उपाय अछि?"

"कहल जाए।"

"अहाँ काल्हि युद्धमे हमरा आगू शिखंडीकेँ ठाढ़ कए देब। हम ओकरापर कोनो हथिआर नहि चला सकब।तकर बाद ओकर औढ़मे अहाँसभ अर्जुनक सहायतासँ हमरा आहत कए सकैत छी।"

"अहाँ सन महावीरकेँ युद्धमे एहि तरहेँ पराजित करब बहुत अनुचित होएत। कोनो आर रस्ता नहि छैक?"

"आर तँ कोनो उपाय नहि बुझाइत अछि।कारण हम जीबैत युद्धसँ हटब नहि आ जाधरि हम युद्धमे सामिल रहब,अहाँसभ हमरा जीति नहि सकब।"

"जे अहाँक आज्ञा।"

पाण्डवलोकनि प्रात भेने शिखंडीकेँ भीष्मक आगू ठाढ़ कए देलनि।शिखंडीकेँ भीष्मसँ अपन पछिला जन्मक ओलि सधेबाक रहैक। ओ युद्ध भूमिमे भीमकेँ चुनौती दैत रहल आ भीष्म किछु नहि कए सकलथि।ओकरे पाछूसँ अर्जुन हुनका घायल कए देलथि ।अर्जुनक वाणसँ आहत भीष्म युद्ध भूमिमे नीचाँ खसि पड़लाह। चारूकात हाहाकार मचि गेल। ओहि दिनुका युद्ध स्थगित कए देल गेल। पाण्डव,कौरवसभ भीष्मक चारूकात करवद्ध भए ठाढ़ भए गेलाह। अर्जुन भीष्मक इच्छानुसार हुनका लेल अपन तीरसँ शरशय्याक निर्माण केलनि। ओ तीरेसँ पृथ्वीसँ हुनका लेल गंगाजलक व्यवस्था केलनि।

अर्जुन द्वारा निर्मित शरशय्यापर पड़ल भीष्म पितामहक आशीर्वाद लेबाक लेल पाण्डव,कौरव पक्षक लोकसभ हुनका लग अबैत जाइत रहलाह। युधिष्ठिर कृष्णक परामर्शपर हुनकासँ राजनीतिक ज्ञान प्राप्त केलनि। ओही क्रममे द्रौपदी सेहो हुनका लग पहुँचल रहथि।ओ हुनका सविनय प्रणाम निवेदित केलथि आ कहलखिन-

"हमरा मोनमे एकटा प्रश्न बहुत परेसान केने अछि।यदि अपनेक आज्ञा होअए तँ हम बाजी।"

"स्वागत कृष्णे!"

"द्यूतशालामे अहाँ किछु नहि बजलहुँ।दुश्शासन हमर चीर हरण करैत रहल।हम कलपैत रहलहुँ।से किएक?ई कोन धर्म छल?"

"हमरो ओ सभ बहुत खराप लागल छल।हम ओकर प्रतिरोध करए चाहैत रही। मुदा बाजल नहि भेल।कारण हम दुर्योधनक अन्न खाइत रही। हमरा खूनमे ओकर अन्नक अंश आबि गेल छल। आब अर्जुन अपन वाणसँ हमर सभटा खून निकालि देलनि अछि। हम एक बेर फेर पवित्र भए गेल छी। हमरामे दुर्योधनक अन्न खेबाक कारण जे पाप भरि गेल छल,से आब हटि गेल अछि।तँ हम आब अपन मोनक बात बाजि पाबि रहल छी।हम एहि अपराधक लेल अहाँसँ क्षमा प्रार्थी छी।"

भीष्म पितामहक उत्तर सुनि कए द्रौपदीक मोन उद्वेलित भए गेलनि।ओ हाँफि रहल छलीह।मुँह लाल भए गेलनि।होनि जे जोर-जोरसँ चिकरी आ हुनका कहिअनि-

"नहि पितामह,नहि।अहाँक पश्चातापक आब कोनो अर्थ नहि अछि।अहाँ भने किछु बाजि लिअ,बितल बातपर अफसोच प्रकट कए लिअ,मुदा ताहिसँ हस्तिनापुरक भरल सभामे हमरा नग्न करबाक प्रयासक कलंक नहि मिटा सकत।यदि कृष्ण साक्षात हमर रक्षा नहि करितथि तखन की होइत?हम नाङट होइतहुँ आ अहाँ,द्रोणाचार्य सहित ओतए उपस्थित महापुरुषलोकनि तकर

आनन्द उठबितहुँ ,किंवा मौन रहि जइतहुँ ,मुदा ताहिसँ की फरक पड़ैत?हमरा तँ लागि रहल अछि जेना ओहिठाम उपस्थित सभ गोटे मद्यमत्त रही।हमर नग्न दर्शनक लेल आतुर रही,ओहिसँ कम वा बेसी किछु नहि।”

द्रौपदीक उग्रता आ व्यग्रता हुनकर मुँहपर देखल जा रहल छलनि।यदि युधिष्ठिर हुनका इसारासँ रोकि नहि दितथि तँ की पता ओहनो हालतिमे द्रौपदी भीष्मकेँ अपन मोनक बात सुना दितथि। मुदा से उपयुक्त साइते होइत।अस्तु,द्रौपदी चुपचाप रहि गेलीह,अपन मनोभावकेँ शब्द नहि दए सकलीह आ भीष्म पितामहकेँ प्रणाम कए ओहिठामसँ वापस चलि गेलीह।

भीष्म शरशय्यापर अठावन दिन धरि पड़ल रहलाह।पिता शान्तनु भीष्मकेँ इच्छामृत्युक वरदान देने रहथिन। ओहि कारणसँ हुनकर मृत्यु हुनके इच्छानुसार सूर्य भगवानकेँ उत्तरायण गेलापर शीतकालीन संक्रांतिक समय माघ शुक्ल पक्षमे भेलनि।

४२

अभिमन्यु वध

महाभारत युद्धक दसम दिन भीष्मकेँ शरशय्या ग्रहण कए लेलाक बाद दुर्योधन द्रोणकेँ कौरव सेनाक सेनापति नियुक्त केलाह।द्रोण पाँच दिन धरि कौरव सेनाक सेनापति रहथि। ताधरि भीष्म द्वारा बनाओल गेल युद्धक कोनो नियम बाँचल नहि रहि गेल छल।दुनू पक्ष जे-से कए रहल छलाह।युद्ध जीतब आ ताहि लेल शत्रुक संहार करबे लक्ष्य रहि गेल छल।ओहि बीचमे द्रोण प्रचंड युद्ध केलथि।पाण्डव सेनाक असंख्य सैनिक मारल गेलाह।सभसँ हृदय विदारक घटना भेल चक्रव्यूहमे फँसा कए अभिमन्यूक वध।युद्धक तेरहम दिन सातटा महारथी मिलि कए सोलह वर्षक अभिमन्युक निर्मम हत्या कए देलनि। ओहि कुकृत्यमे द्रोणाचार्य,कृपाचार्य,कर्ण,जयद्रथ सन-सन महान योद्धा सामिल

छलाह। तकर प्रात भेने अभिमन्युक वधसँ व्याकुल अर्जुन जयद्रथक वध कए अपन प्रतिज्ञा पूर्ण केलनि,संगे कौरव सेनाक हजारों सैनिक हुनका द्वारा मारल गेल।महाभारत युद्धक पन्द्रहम दिन द्रोंणक हत्या भए गेलनि। युधिष्ठिर “अश्वत्थामा हतः नरो वा कुंजरो”झूठ बाजि कए तकर जोगार केलनि।

कर्ण संगे तँ सभ दिन अन्याये होइत रहलनि।हुनका संगे कहिओ किछु सही भेबे नहि कएल।ओ सभ दिन अपन मित्र दुर्योधनक विजयक लेल प्रयत्नशील रहलाह । हुनके लेल अपन जीवन उत्सर्ग कए देलनि।युद्ध शुरू होएबासँ पहिने अर्जुनक पिता इंद्रदेव द्वारा छलसँ कर्णक कवच,कुण्डल मांगि लेल गेलनि जाहिसँ भावी युद्धमे ओ अर्जुनसँ हल्लुक पड़ि जाथि आ अर्जुन जीवित रहि जाथि,विजेता बनथि।ततबे नहि,अंतमे माता कुंती असगरमे हुनकर असली माता हेबाक प्रसंग सेहो कहि देलखिन।कहुना कर्ण युद्धसँ विरत भए जाथि,नहि तँ अब्बल भए जाथि, से भेल।कर्णक संग कएल गेल अन्यायक ई पराकाष्ठा छल। जे माए हुनका जनमितहि अपन लोक-लाजक लेल गंगामे बहा देलखिन,कहिओ हुनका संगे ठाढ़ि नहि भेलखिन,जाहि कारण ओ क्षत्रिय संतान होइतहुँ सूतपुत्र कहल जाइत रहलाह, सएह हुनकर माए बनि कए स्वयंकेँ लज्जित कए रहल छलीह।आकाशसँ धरती धरि देखि रहल छल हुनकर ई छलपूर्ण व्यवहार।कुंती कर्णकेँ ज्येष्ठ पाण्डवक सभटा अधिकार देबाक लेल प्रस्तुत छथि।मुदा कर्ण अडिग रहलाह,अपन इतिहास नहि बिसरि सकलाह।दुर्योधनक संग अपन मित्रताकेँ नहि छोड़ि सकलाह। कुंती उदास भए गेलखिन। ई बात कर्ण बुझलनि। ओ कुंतीकेँ आश्वासन देलखिन जे ओ युद्धमे अर्जुन छोड़ि आर कोनो पाण्डवक वध नहि करताह। मुदा अर्जुन वा हुनकामे सँ केओ एक्के गोटे बाँचल रहि सकत।महाभारत युद्धमे कर्ण अर्जुन छोड़ि आर कोनो पाण्डवक ऊपर आक्रमण नहि केलनि।

द्रोणक मृत्युक बाद युद्धक सोलहम दिन कर्ण दुर्योधन द्वारा कौरव सेनाक सेनापति नियुक्त कएल गेलाह।ओ बहुत वीरतापूर्वक महाभारत युद्ध

लड़लाह। अंततोगत्वा, सत्तरहम दिन अपने सहोदर अर्जुनक हाथे छलपूर्वक मारल गेलाह। युद्धमे हुनकर रथक पहिआ फँसि गेलनि। ओ अपन रथकेँ निकालबाक प्रयास कए रहल छलाह कि कृष्णक सहपर अर्जुन निहत्था कर्णक हत्या कए देलनि।

४३

दुश्शासन वध

युद्धमे भीम अपन गदासँ दुश्शासनक जांघकेँ टुकड़ी-टुकड़ी कए देलनि। दुश्शासनक देहसँ निस्सृत भए रहल रक्तकेँ आँजुरमे भरि भीम दौड़लाह द्रौपदी लग।ओ अत्यन्त भयाओन लागि रहल छलाह। हुनकर आँखि लाल भए गेल छल,लगैत छल जेना ओहिसँ सालक-साल दबल क्रोध विस्फोट कए रहल अछि।महाभारतक रणभूमि सचमुचकेँ बहुत भयाओन लागि रहल छल।लगैत छल जेना ओ साक्षात काल बनि गेल छथि। हुनकर आँजुरमे दुश्शासनक खून भरल छलनि।रक्तक बुन्नी माटिपर टपकि रहल छल,हुनकर सौंसे देहमे पसरि रहल छल।हुनकर वस्त्र लाले-लाल भए गेल छलनि।

"द्रौपदी लिअ। लिअ,लिअ दुश्शासनक रक्तसँ अपन माथक खुजल केसकेँ धोउ।एक्को क्षण विलंब नहि करू।आइ अहाँक संकल्प पूर्ण भेल।आब निचेन भए अपन केस बान्हि लिअ। अहाँक बाँकी सपना सेहो जल्दीए पूर्ण होएत।"

भीमक रौद्र रूप देखि द्रौपदी अट्टहास करैत छथि। अपन खुजल केसकेँ दुश्शानक रक्तमे बोड़ि दैत छथि।हुनकर सौंसे देह दुश्शासनक रक्तसँ भिजि रहल छनि,दुर्गंध कए रहल छनि।द्रौपदी जोर-जोरसँ हँसिते जा रहल छथि।

"दुष्ट दुश्शासन! देखलही ने। एकटा स्त्रीक अपमान कतेक महग पड़लौक। कखनहु ककरो छोट नहि बुझी।स्त्रीक आह नहि ली।अबला कखन

सबला भए जेतीह तकर कोन ठेकान।"- से बाजि द्रौपदी स्नानगृह दिस चलि गेलीह।भीम युद्धभूमिमे वापस भए गेलाह।

युद्धक सतरहम दिन दुर्योधन शल्यकेँ कौरव सेनाक सेनापति नियुक्त केलनि । ओहो अठारहम दिन मारल गेलाह। ओही दिन युद्धक अंतमे भीम कृष्णक इसरापर दुर्योधनकेँ गदायुद्धमे हुनकर जांघपर प्रहार करैत छथि।ओ ठामहि अर्धमृत भए जाइत छथि। भीम हुनका ओतहि छोड़ि चलि जाइत छथि।

४४

अश्वत्थामाक अनर्थ

शल्यक मृत्युक बाद मृत्युशय्यापर पड़ल दुर्योधन अश्वत्थामाकेँ सेनापति नियुक्त केलाह।ओहि समयमे कौरव पक्षमे अश्वत्थामाक अतिरिक्त कृपाचार्य आ कृतवर्मा सेहो बाँचल छलाह। महाभारत युद्ध पाण्डवलोकनि द्वारा जितल जा चुकल छल।ओ सभ अपन शिविरमे विश्रामक मुद्रामे छलाह।सुरक्षा व्यवस्था खतम छल। असलमे सैनिकसभ तँ मारल जा चुकल रहथि। के ककर देख-रेख करैत? अंत-अंतमे अश्वत्थामा अनर्थ केलथि।ओ पिताक मृत्युक बाद प्रतिशोधक लेल व्याकुल छलाह ।ऊपरसँ गदायुद्धमे दुर्योधनक दुर्गति देखि ओ निठ्ठाहे अनियंत्रित भए गेलथि,सनकि गेलथि।

"पाण्डवक विनाश कइए कए हमर मोन शांत होएत।"

ओ रातिमे नुका कए पाण्डव आ हुनकर पक्षक लोकसभक हत्याक योजना बनओलथि। कृपाचार्य आ कृतवर्मा अनिच्छापूर्वक हुनकर संग देलनि।परिणामस्वरुप, ओहि रातिमे अश्वत्थामा पाण्डवलोकनिक पाँचोपुत्रक हत्या कए देलनि। धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, युद्धमन्यु, उत्तमौजा सेहो मारल गेलाह। भोर भेने जखन ई बात सभकेँ पता लगलैक तखन चारू कात घोर निराशा पसरि गेल। पाण्डव शिविरमे हाहाकार मचि गेल।पाण्डव युद्ध जितिओ कए हारि गेलाह।

लगभग पाँच हजार एक सए पचीस वर्ष पूर्व भेल महाभारत युद्ध महाविनाशकारी सिद्ध भेल।पराजित आ विजेता,दुनू पक्षक लोकक महान क्षति भेल।लाखो निर्दोष सैनिकसभ मारल गेलाह।पाण्डव आ कौरव दुनू पक्षक एकसँ एक योद्धा हताहत भेलाह। भीष्म,द्रोणाचार्य,कर्ण,दुश्शासन,दुर्योधन सभ मारल गेलाह। अठ्ठारह दिन चलल महाभारत युद्धक बाद कौरव योद्धामे मात्र कृतवर्मा,कृपाचार्य आ अश्वत्थामा बाँचि गेल रहथि। पाण्डव दिस पाँचो भाएक अतिरिक्त कृष्ण,आ सात्यिकी जीबैत रहि गेलथि।

द्रौपदी दहाड़ि पारि रहल छलीह। अपन पाँचो पुत्रक लेल की की ने सपना देखने छलीह। हाय रे भाग्य! कतए गेलनि ओ सपनासभ? द्रौपदीक मोनक कहिओ किछु भेबे नहि केलनि। ओ सभ दिन मात्र मूकदर्शक बनल रहि गेलीह।एकतरफा भोगैत रहि गेलीह नियतिक संताप।

प्रात भेने जखन अश्वत्थामा पाण्डवपुत्रक हत्याक समाचार दुर्योधनकेँ देलथि तखन दुर्योधन बहुत दुखी होइत छथि ।ओ अश्वत्थामाकेँ कहैत छथि-

“अहाँ ई की केलहुँ? हमर वंशक नाश कए बड़ अनर्थ कए देलहुँ।”

तकर बादे दुर्योधनक मृत्यु भए जाइत अछि। माता गांधारी आ धृतराष्ट्र अपन सए पुत्रक मृत्युक समाचारसँ बहुत दुखी छथि।गांधारी हुनकासँ भेंट करए आएल कृष्णकेँ श्राप दैत छथि-

“तोरे कारण हमर कुलक नाश भेल अछि। जहिना हमर कुलक नाश भेल अछि तहिना यदुवंशक विध्वंश भए जाएत।”

गांधारीक श्राप कृष्ण सहर्ष स्वीकार केलनि-

“देवी गांधारी! नियति के रोकि सकैत अछि?यादवलोकनि अपन कुलक मर्यादा छोड़ि कुकर्म करताह,मद्यपान करताह आ आइसँ छत्तीस वर्ष बाद अहाँक देल गेल श्रापकेँ फलीभूत करैत नष्ट भए जेताह।”

गांधारीक श्राप आ कृष्णक स्वीकारोक्ति सुनि चारू कात निस्तब्धता पसरि गेल छल। द्रौपदी अचंभित ठाढ़े रहि गेलीह।

“कोना कोनो माए ककरो कुलक नाश हेबाक श्राप दए सकैत अछि,ओहो जखन ओकर अपने सएटा संतानक मृत्यु भए चुकल होइक?”

“प्रतिशोध महारानी,प्रतिशोध। मनुक्ख प्रतिशोधमे राक्षस भए जाइत अछि। ओकरा आगू-पाछू किछु नहि सुझाइत छैक, नियतिवश सभ किछु देखैत रहि जाइत अछि,भोगैत रहि जाइत अछि।”

-द्रौपदी अपन अंतरात्मासँ गप्प कए रहल छलीह। अखनहु हुनकर बान्हल केससँ दुश्शासनक रक्तक दुर्गंध महकि रहल छलनि।द्रौपदी ककरापर हँसथिन। ओ तँ स्वयं प्रतिशोधक आगिमे जरि कए देखि चुकल छथि,तकर दुष्परिणाम भोगि रहल छथि।पता नहि एहि घटना-दुर्घटनासभक पटाक्षेप कोना होएत?

४५

स्वर्गारोहण

पाण्डव महाभारत युद्ध जिति गेलाह।दुर्योधन सहित हुनकर भाए,समर्थक सभक विनाश भेल।युधिष्ठिर हस्तिनापुरक राजा बनि गेलाह।द्रौपदी महारानीक पद सुशोभित कए रहल छलीह। मुदा की एहि विजयक बाद पाण्डवलोकनि प्रसन्न रहथि?नहि रहथि।राज तँ भेंटि गेलनि,मुदा तकर बहुत भारी दाम चुकता करए पड़लनि।दुनू पक्षक एक सँ एक योद्धा मारल गेलाह।युधिष्ठिरक राजसभा भम्ह पड़ैत छल। भीष्म,द्रोण,कर्ण,सभ नदारद।जे बाँचल छलाह ओहो सभ विक्षिप्तावस्थामे छलाह,युद्धक अवसादमे,घोर निराशामे जिबि रहल छलाह।मानसिक आघात-प्रतिघातसँ परेसान छलाह।द्रौपदी तँ दुपहर रातिमे ठोह पारि कए कानए लगैत छलीह।ओछाओनपर राति-राति भरि करोट बदलैत रहि

जाथि,निन्न नहि होनि।एहन अवस्थामे ओ सोचनाइ शुरू कए देथि आ सोचिते रहि जाथि-

“की हम एही लेल व्याकुल रही?एहिसँ बहुत नीक होइत यदि हमर पाँचो संतान जीवित रहतथि।अभिमन्यु जीवित रहितथि। दुर्योधनक अन्यायक कारण हमसभ निश्चित रूपसँ बहुत दुखी रही।हमरासभक सम्मानपूर्वक जीनाइ मोसकिल भए गेल छल।एहिमे कोनो सक नहि जे द्यूतशालामे हमरा नाङ्ट करबाक प्रयास कए दुश्शासन अन्याय आ दुष्टताक पराकाष्ठापर पहुँचि गेल छलाह।मुदा तकर प्रतिशोधसँ की भेटल?हमर अन्तर्मन अखनहु हाहाकार कए रहल अछि। अपन संतानसभक अकालमृत्युक कारण मोन दिन-राति व्याकुल रहैत अछि,अशांत रहैत अछि। राजसुख व्यर्थ लागि रहल अछि।कृष्ण सही कहथि जे युद्ध ककरो लेल नीक नहि होएत। ओ युद्ध रोकबाक लेल बहुत प्रयासो केलनि।यद्यपि हम आ भीम हुनका वारंबार विरोध केलिअनि तथापि ओ स्वयं हस्तिनापुर शांतिक प्रयासमे गेलाह। मुदा भावी प्रबल होइत अछि।दुर्योधनक माथपर विनाश पहरा दए रहल छल। ओ कृष्णोकेँ अपमानित केलथि,हुनकर शांति प्रस्ताव नहि मानलथि। आखिर,कृष्ण युद्धक घोषणा कइए कए वापस भेलाह। तखन हमहूँ सोचने रही जे भने युद्ध हेतैक।हमर खुजल केस दुश्शासनक रक्तस्नानक लेल प्रतीक्षारत छल। मुदा आब?अखन सभसँ दुखी माए हम थिकहुँ।आब तँ एक्केटा उम्मीद बाँचल अछि। भगवान कृष्णक शरणमे चली । ओएह छथि मुक्तिदाता!”

अत्यन्त दुख आ पश्चातापमे समय बिता रहलि द्रौपदीक अधिकांश समय कृष्णक आराधनामे बीति जाइत छलनि। ओमहर महाराज युधिष्ठिर निर्लिप्त भावसँ राज-काज चला रहल छलाह।मुदा केओ सुखी नहि छलाह,कहुना कए समय बिता रहल छलाह। पन्द्रह वर्षक बाद धृतराष्ट्र,कुंती आ गांधारी हस्तिनापुर छोड़ि कए वन चलि गेलाह।महाभारत युद्धक बाद छत्तीस वर्ष युधिष्ठिर राज

केलनि। ताबत गांधारीक श्रापसँ यदुवंशक विनाशक समय आबि गेल छल। ओ सभ मदिरा पिबि कए आपसे मे लड़ि कए एक-दोसरक हत्या कए देलनि।एहि घटनासँ दुखी कृष्ण एकांतमे जंगलमे बृक्षपर बैसल रहथि। फटकीसँ जरा नामक व्याधा हुनकर पैरकेँ हरिण बुझि तीर चला देलकनि।ओकर तीरसँ आहत कृष्ण थोड़े काल पैरे-पैरे चललाह।कतहु केओ नहि भेटलनि। आखिर चलैत-चलैत ओ खसि पड़लाह।तीरमे जहर भरल छल। ओकर प्रभावसँ सौंसे देहमे विष पसरि गेलनि। कृष्ण बेहोस भए ठामहि खसलाह ।ओतहि हुनकर मृत्यु भए गेलनि।बलरामक मृत्यु पहिने भए चुकल रहनि। कृष्ण,बलराम सहित समस्त यदुवंशक विनाशक समाचार हस्तिनापुर पहुँचल।पाण्डवलोकनि बहुत मर्माहत भेलाह। अर्जुन युधिष्ठिरक आज्ञा लए द्वारका पहुँचलाह।बहुत मोसकिलसँ कैक दिनक प्रयासक बाद जंगलमे कृष्णक लास ताकि हुनकर अंतिम संस्कार कए सकलथि। तकर बाद ओ प्रभासमे यादवलोकनिक संहारभूमिपर पहुँचलाह आ सरस्वती नदीक कातमे हुनकालोकनिक अंतिम संस्कार केलनि।दाह संस्कारक बाद ओहिठाम भष्मक ढेरी लागि गेल छल।एहिसभसँ निवृत भए हारल,झमारल अर्जुन असगरे हस्तिनापुर वापस आबि गेलाह।

कृष्णक मृत्यु आ यदुवंशक विनाशसँ युधिष्ठिर बहुत उदास भए गेलाह।महारानी द्रौपदी तँ कृष्णेक बले अपन संघर्षमय आ दुखी जीवनकेँ चला रहल छलीह।अर्जुन,भीम,नकुल,सहदेव सभ बेसी काल चुप-चाप समय बितबैत छलाह।कृष्णक मृत्युक अवसादमे ओझराएल युधिष्ठिरसँ राज-काज चलाएब संभव नहि छल। ओ आब एहिसभ सँ मुक्त होमए चाहैत छलाह।युधिष्ठिरक समयक अंत भए रहल छल।ओ हस्तिनापुरक राजा अर्जुनक पौत्र अभिमन्युक पुत्र परिक्षितकेँ बनओलनि। तकर बाद बिना विलंबकेँ पाँचो पाण्डव द्रौपदी सहित स्वर्गारोहण पर बिदा भए गेलाह।

युधिष्ठिर अपन जीवन भरिक पूँजी सत्य आ धर्म सहित सशरीर स्वर्गारोहण हेतु बिदा छलाह। अपना संगे ओ चारू भाए आ द्रौपदीकेँ सेहो लेने जा रहल छलाह।आहि रे बा!ई की भेल?थोड़बे कालक बाद द्रौपदी वर्फसँ आच्छादित हिमालयपर अड़रा कए खसि पड़लीह।भयाओन ठंढमे हिमालयक हिमाच्छादित भूमिखंडपर पड़लि द्रौपदी अखनहु किछु-किछु होसमे छलीह। क्रमशः हुनकर चेतना बिला रहल छलनि। ओहि निर्जन स्थानमे हुनका लागि रहल छलनि जेना केओ फटकीसँ अबाज दए रहल अछि-

"द्रौपदी ई अहींक कर्मक फल थिक।कर्म चक्रसँ केओ नहि बचि सकैत अछि। हमसभ जे किछु करैत छी तकर परिणाम जन्म-जन्म भोगैत रहैत छी।अहूँ अपन कर्मक फल भोगिए लिअ। तखने मुक्ति संभव।"

"हम तँ सौंसे जिनगी एकतरफा भोगिए रहल छी।सभ दिन अनके सुखी रखबाक लेल प्रयत्नशील रहलहुँ।तथापि जीवन भरि कष्टेमे रहि गेलहुँ।जहिआ युद्ध जीतलाक बाद युधिष्ठिर राजा बनलाह तहिओ दुखीए रहि गेलहुँ। कारण सुखी रहबाक परिस्थिति रहिए नहि गेल छल।एकटा स्त्री की की सहए,की की भोगए?"

"अहाँ पाँचो पाण्डवसँ बिआह केने रही,मुदा अर्जुनक प्रति अहाँक प्रेम बेसी छल। अहाँ सभ पतिकेँ एक समान सिनेह नहि कए सकलिअनि।तकरे परिणाम अछि जे अहाँ एहि ठाम खसि पड़लहुँ,सदेह स्वर्ग नहि जा सकलहुँ।"

"अर्जुनकेँ हमरापर स्वाभाविक अधिकार छलनि।ओएह हमरा स्वयंवरमे जीतने छलाह।हम वरमाला हुनके पहिरओने छलिअनि।तकर बाद जे भेल से अनुचित छल,अन्याय छल, आर किछु नहि।हमर पाँचो भाएसँ बिआह मानवीयमूल्यक सर्वथा प्रतिकूल छल।एहन हालतिमे हम कोना सभ भाएकेँ एकरंग मानितिअनि?कोना सभकेँ अखण्ड प्रेम दए सकितिअनि।जे स्वयं खण्ड-खण्ड कए देल गेल अछि,जकर शरीरपर पाँच-पाँछ गोटे बकोध्यान लगओने रहैत

रहल होअए तकर मोन सम्यक कोना रहि सकैत छल?फेर अर्जुन तँ महाभारतक नायक छलाह,हुनकर शौर्यसँ के नहि प्रभावित छल?हमर कोन कथा।”

“अहाँक इएह नियति छल।जे सुख-दुख अहाँक भाग्यमे छल से अहाँ भोगलहुँ। आब तकर की हिसाब छैक?”

द्रौपदीक मोनमे तरह-तरहक प्रश्न-प्रतिप्रश्न उठैत रहलनि। हुनका मोन पड़ैत रहलनि ओ मार्मिक प्रसंगसभ जे समय-समयपर हुनकर जीवनमे घटित होइत रहलनि। दुश्शासन द्वारा भरल सभामे चीरहरणक प्रयास,भीष्मक शरशय्या,अभिमन्युक वध ,कर्णक लासपर कुंतीक विलाप सन-सन घटनासभ सीनेमाक रील जकाँ ओहनो हालतिमे मोनमे अबैत-जाइत रहलनि।

कुंतीक प्रति अखनहु हुनका मोनमे आक्रोश छलनि।“यदि ओ समयपर पाण्डवलोकनिकेँ कर्णक सही परिचय देने रहितथि तखन साइत महाभारत युद्ध हेबे नहि करैत।युधिष्ठिर स्वतः कर्णकेँ राज थम्हा दितथि।कर्ण जीवन भरि एतेक अपमानित नहि रहितथि।हमर स्वयंवरमे भाग लए सकितथि।कर्ण बिना दुर्योधन एहन भयाओन युद्ध लड़बाक साहस नहि कए पबितथि।ने महाभारत युद्ध होइत ने अभिमन्यु सन वीर युवकक निर्मम हत्या होइत,ने भीष्म पितामह सन वयोवृद्ध एहन विषम परिस्थितिमे पड़ितथि। मुदा आइ एहि बात सभकेँ मोन पाड़िए कए की होमए बला अछि? जीवनक अंतिम समयमे सभ किछु बिसरि जेबाक छल,अहंकार,ईर्ष्या,प्रतिशोधक भावना सभ किछुकेँ छोड़ि देबाक छल। मुदा से कहाँ संभव भेल। अखनहु सभ किछु हमर पछोड़ कइए रहल अछि।एहनमे हमर मुक्ति कोना संभव होएत?”-द्रौपदी सोचैत रहि गेलथि।अफसोच करैत रहि गेलथि। मुदा कोनो प्रकारक समाधान नहि बुझेलनि,मोनमे शांति नहि भेलनि आ अशांत मोनमे मुक्ति ?असंभव।

द्रौपदी असगरि ओहि ठंढमे पड़ल-पड़ल अबाज दैत रहलीह-

“दौड़ू,दौड़ू।हम खसि पड़लहुँ,हमरा उठाउ।”

मुदा पाँचो पाण्डव जेना किछु सुनबे नहि केलनि। ओ सभ मोह,माया छोड़ि चुकल छलाह।सभ किछुसँ मुक्त भए स्वर्ग दिस आगू बढ़ि गेलाह।

द्रौपदी सोचैत रहि गेलीह–

“इएह थिक दुनिआ। हिनकासभक लेल हम कोन-कोन कष्ट ने सहलहुँ। हिनका सभक कल्याण होनि ताहि लेल पाँचो भाएसँ बिआह केलहुँ। हिनकालोकनिक संगे जीवन भरि जंगले-जंगल बौआइत रहलहुँ । जखन राज भेटबो कएल तखन सभ किछु गमा चुकल छलहुँ। मुदा ई सभ हमरा एहन दयनीय अवस्थामे छोड़ि आगू बढ़ि गेलाह।”

जीवनक अंतिम समयमे आब हुनका मात्र कृष्ण मोन पड़ि रहल छलखिन। “अहीं हमरा शरण दी,मुक्त करी। हे कृष्ण! हे कृष्ण।।!”

एहि तरहेँ द्रौपदी भगवान कृष्णकेँ स्मरण करैत अपन देह त्याग केलीह आ हुनके मे विलीन भए गेलीह,सभ तरहेँ मुक्त भए गेलीह।

ॐ शांतिः!

oooooooooooooooooooooo

हमर पोथीसभक मुद्रित संस्करण निम्नलिखित वेवलिंकपर क्लिक कए आनलाइन कीनल जा सकैत अछि:

भोरसँ साँझ धरि(आत्मकथा)(पेपरबैक)
https://pothi.com/pothi/node/195476.
भोरसँ साँझ धरि (सजिल्द)
https://pothi.com/pothi/node/209754.
प्रसंगवश(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195527.
स्वर्ग एतहि अछि(यात्रा प्रसंग)
https://pothi.com/pothi/node/195487.
फसाद(कथा संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195510.
नमस्तस्यै(मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/195444.
विविध प्रसंग(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195633.
महराज (मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/195795
लजकोटर (मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/196264.
सीमाक ओहि पार(मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/197004.

समाधान (निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/197754.

मातृभूमि(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198699.

स्वप्नलोक(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/199847.

शंखनाद(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/200903.

इएह थिक जीवन(संस्मरण)

https://pothi.com/pothi/node/202488.

ढहैत देबाल(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/203720.

पाथेय

https://pothi.com/pothi/node/205009.

हम आबि रहल छी(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/206093.

प्रलयक परात(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/207234.

बीति गेल समय(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/208351.

प्रतिबिम्ब(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/208632.

बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/209281.

राष्ट्र मंदिर(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/210181.

संयोग(कथा संग्रह)

https://rb.gy/edit6k.

नाचि रहल छलि वसुधा(उपन्यास)

https://bit.ly/3The07Y

दीप जरैत रहए(उपन्यास)

https://t.ly/nU_E.

ठेहा परक मौलाएल गाछ(उपन्यास)

https://shorturl.at/abhkJ

पटाक्षेप(उपन्यास)

https://shorturl.at/tTEJV

जयतु जानकी(उपन्यास)

https://bit.ly/3LLCXq7

यज्ञसेनी(उपन्यास)

https://shorturl.at/jaAAr

The Lost House (Collection of short stories)

https://pothi.com/pothi/node/195843.

Life is an Art (Motivational essays)

https://pothi.com/pothi/node/196385

न्याय की गुहार (हिन्दी उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198163.

www. amazon.com/www.flipkart.com/ पर सेहो ई पोथीसभ आनलाइन कीनल जा सकैत अछि ।